पृथ्वी में गड़ा धन कैसे पायें

—तांत्रिक 'बहल'

तन्त्र जगत में स्थापित तान्त्रिक बहल की अन्य कृतियाँ

- ☐ सुगम तान्त्रिक क्रियायें
- ☐ पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ
- ☐ मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक सिद्धियाँ
- ☐ सुखी जीवन के लिए टोटके और मन्त्र
- ☐ तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र (चाणक्य विरचित)
- ☐ वनस्पति तन्त्र
- ☐ वेदों में तन्त्र
- ☐ चमत्कारी मन्त्र साधना
- ☐ गोरख तन्त्र
- ☐ मुस्लिम तन्त्र
- ☐ सौन्दर्य लहरी (हिन्दी व्याख्या व यन्त्रों सहित)
- ☐ रत्न और रुद्राक्ष
- ☐ लाटरी और ज्योतिष
- ☐ राशिफल और लाटरी
- ☐ शरीर लक्षण विज्ञान
- ☐ नाग और नागमणि

तृष्णा, वैतरणी नदी के समान है, जिसमें दुःख के सिवाय कुछ भी नहीं है !

"भतृहरि"

तंत्र-मंत्र द्वारा

पृथ्वी में गढ़ा धन

कैसे पायें ?

[गुप्त धन का विस्तृत विवरण देने वाला
वैज्ञानिक विवेचन]

प्रस्तुति :
तांत्रिक बहल

मूल्य—२५.००

प्रकाशक
रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

□ प्रकाशक—
रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन)
रेलवे रोड, आरती होटल के पीछे
हरिद्वार-२४६४०१
☎ : (0133) 426297

□ प्रमुख विक्रेता—
१. पुस्तक संसार, बड़ा बाजार, हरिद्वार
२. पुस्तक संसार, नुमायश का मैदान, जम्मू
३. गगनदीप पुस्तक भंडार, एस० एन० नगर, हरिद्वार

□ प्रस्तुति—
तान्त्रिक वहल

□ प्रथम संस्करण : १९९२

□ मूल्य—
पच्चीस रुपये केवल।

© रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन)

□ मुद्रक—
सुरेन्द्र प्रिंटर्स
विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२

कहाँ क्या है ?

१. विषय प्रवेश	...	६
२. पृथ्वी में गढ़ा धन और रक्षक सर्प	...	१६
३. धनवान बनने के तांत्रिक उपाय	...	२३
४. श्री कनकधारा स्तोत्र	...	४०
५. होली पर विशेष लक्ष्मी साधना	...	४६
६. साधना से पहले	...	५१
७. निधि प्रदीप (मंगला चरण)	...	७१
८. " " (द्वितीय परिच्छेद)	...	८३
९. " " (तृतीय परिच्छेद)	...	११०
१०. " " (चतुर्थ परिच्छेद)	...	१४५
११. श्री यन्त्र साधना	...	१६०
१२. श्री यन्त्र	...	१८०
१३. अन्त में	...	१८३

दो शब्द

"तन्त्र सबके लिए" मेरा मिशन है। तन्त्र जन कल्याण के लिए है। यह मेरा निश्चित विचार है। हर समझदार व्यक्ति के मन में यह बात उठना स्वाभाविक है कि—"आज का विज्ञान जितना उन्नत हो गया है और हमारे दैनिक जीवन की प्रत्येक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, उसी प्रकार तंत्र विज्ञान से भी पूर्ति सम्भव है क्या ?" और अगर पूर्ति नहीं कर सकता, तब फिर तन्त्र से क्या लाभ हैं ?" इस प्रश्न के अनेक उत्तर हो सकते हैं और बास्तव में हैं भी, सबसे पहला लाभ तो यह है कि तन्त्र साधना के बाद लाभ अवश्य और चिर स्थायी होता है, इसलिए ही अधिकांश लोग तन्त्र का सहारा लेना पसन्द करते हैं। इसके साथ ही एक कटु सत्य यह है कि तन्त्र साधना का सफल और असफल होना दोनों ही संदिग्ध रहते हैं। तन्त्र में सफलता और असफलता दोनों ही साधक पर निर्भर करती है। इस सन्दर्भ में एक कथा प्रस्तुत है।

एक तांत्रिक थे। उन्होंने अनेक सिद्धियाँ प्राप्त कीं। एक बार एक नया साधक उनके पास आकर बोला—"मेरे पास समय नहीं है। सिद्धि शीघ्र कैसे प्राप्त हो, इसके लिए कोई उपाय बतलाइये ? सिर्फ तीस वर्ष लगेंगे ? तान्त्रिक ने कहा।

अरे इतना समय किसलिए ? उसने पूछा।

मुझसे गलती हो गई कहने में तुम्हें साठ वर्ष का समय

लगेगा। शीघ्रता करने में तीस वर्ष और सन्देह दूर करने में अतिरिक्त तीस वर्ष लगेंगे। तान्त्रिक ने उत्तर दिया।

यह सुनकर वह घर लौट आया। घर आकर उसने फिर सोचा—"सब कुछ प्राप्त करने के लिए अगर ६० वर्ष भी लगाने पड़े तो कोई हर्ज नहीं। वह तान्त्रिक के पास फिर आया तथा ६० वर्ष तक साधना करने को तैयार हो गया। अभी बीस वर्ष भी पूरे नहीं हो पाये थे कि उसको सिद्धि प्राप्त हो गयी।

इतने अधिक समय में होने वाला कार्य इतने कम समय में कैसे पूर्ण हो गया? इसका भेद साधक द्वारा पूछे जाने पर तान्त्रिक ने बतलाया उतावली और सन्देह दोनों ही साधना मार्ग के बाधक हैं। अगर विश्वास और श्रद्धा जम जाये तो सिद्धि में अधिक समय नहीं लगता।

मन्त्र तन्त्र आपकी या मेरी बपौती नहीं है। तन्त्र विज्ञान पर सबका एक जैसा अधिकार है। तन्त्र के उपयोग हेतु सभी स्वतन्त्र हैं। अन्तर तो केवल इतना है कि मैंने घूम-घूम कर उन सब जगहों को देखा है, और जो अनुभव मैंने प्राप्त किये हैं, वह आपके समक्ष रख रहा हूं। यह मानकर चलें कि अगर मेरे अनुभव निकाल दें तो मेरे पास कुछ भी शेष नहीं है।

तन्त्र विद्या के गूढ़ एवं गुप्त रहस्य, जो आज तक गुप्त रहे हैं, उन्हें ही इस पुस्तक में उजागर करने का प्रयास करूँगा।

तन्त्र साधना सरल नहीं है उसे कर पाना भी सहज नहीं इसका ठीक उपयोग न होने पर अहित भी हो सकता है। साधक को लेने के देने पड़ सकते हैं। यह दुधारी तलवार है जिस पर चलना सहज नहीं है मेरा निजी परामर्श है, योग्य

एवं सिद्ध गुरु के अभाव में भूलकर भी तन्त्र साधना न करें।

अन्त में, मैं पुनः श्री रणधीर सिंह जी का हृदय से आभारी हूं जिन्होंने न केवल अछूते विषय वरन् उपयोगी मार्ग दर्शन प्रदान कर मेरा हौंसला बढ़ाया। मैं अपनी अर्धांगिनी श्रीमती शीला बहल का भी आभारी हूं, जिन्होंने मुझे तन्त्र जगत में स्वच्छन्द विचरने का अवसर प्रदान किया ? इन लोगों के अभाव में मेरा कुछ भी कर पाना असम्भव था।

कोई समस्या अथवा जिज्ञासा हो तो निःसंकोच पत्र लिख कर समाधान प्राप्त कर लें। आपके पत्रों का सदैव स्वागत है।

तान्त्रिक बहल

(तन्त्र सबके लिए मिशन)

डी-४, राधेपुरी, कृष्णा नगर,

(जमनापार) दिल्ली-११००५१

विषय प्रवेश

धन-प्राप्ति के लिए प्रायः सभी लोग लक्ष्मी की साधना करते हैं। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि धन की देवी लक्ष्मी ही हैं, किन्तु उनकी उपासना किस प्रकार की जाये, इसे बहुत कम साधक जानते हैं।

शास्त्रों के अनुसार 'लक्ष्मी' की व्युत्पत्ति इस प्रकार है—"लक्षयति पश्यति उद्योगिनमिति लक्षि उण् ई प्रत्ययो मुड़ागयश्च।" विष्णु-पत्नी।

लक्ष्मी जब समुद्र से उत्पन्न हुई तब अंगिरा, मरीचि आदि ऋषियों ने उनका पूजन कर कहा था—माते ! आप देवताओं के घर और मृत्यु-लोक में जाइए। तब लक्ष्मी ने देवताओं से यह वचन सुनकर कहा—मैं ब्राह्मणों के निवेदन से देवताओं के घर और मृत्युलोक में अवश्य जाऊंगी। हे ऋषियों मैं जिनके घर जाऊँगी, उनके लक्षण ध्यान देकर सुनो—

मैं केवल धार्मिक और सुनीतिज्ञ गृहस्थ और राजाओं के स्थिर होकर उनका पुत्र के समान पालन करूँगी। गुरु, देवता, माता-पिता, बान्धव, अतिथि और पितृ-लोक जिनके प्रति रुष्ट हैं, मैं उनके घर कभी नहीं जा सकती। जो गृहस्थी सदैव चिन्ता करता रहता है तथा जो भयभीत और शत्रु-ग्रस्त है, जो पातकी ऋण-ग्रस्त व कंजूस है, उन सबके घर में पदार्पण नहीं करूँगी। जिस साधक ने दीक्षा नहीं ली है, जो स्त्री के वशीभूत है,

जिसकी स्त्री और माता वेश्या है, जो कटुभाषी है, जिसके घर सदैव कलह होता है, जिसके घर में केवल स्त्रियाँ प्रधान हैं, उनके घर में नहीं रहूँगी।

जो धर्म का पालन नहीं करता जो संसारी कन्या-विक्रय, आत्म-विक्रय और धर्म-विक्रय करता है, उसका घर नरक के समान है। वहाँ मैं कदापि नहीं जाऊँगी। जो दूषित होकर माता-पिता, पत्नी, गुरु-पत्नी, गुरु-पुत्र, अनाथ भगिनी, कन्या और आश्रय-रहित बान्धवों का पोषण न करके सदैव धन जोड़ने में लगा रहता है, मैं कभी भी उसके घर नहीं जाऊँगी। जिसके दन्त अपरिष्कृत, वस्त्र गंदे, मस्तक रूखा तथा जो मूर्ख मूत्र-विष्ठा त्याग करते समय मूत्रादि त्याग करने वाले को देखता है, जो भीगे पैर को न पोंछकर व पैर को धोकर सोता है, जो नंगा सोता है, जो सायं व दिन को शयन करता है, उसके घर में मैं कभी नहीं रहूंगी। जो साधक तेल लगाकर विष्ठा-मूत्र त्याग करता, प्रणाम करता न फूल तोड़ता है, जो नाखून से जमीन खोदता है, जिसके शरीर और पैर में मैल रहता है, उस पर मेरी कृपा नहीं रहती। जो मन्द-बुद्धि, दिन को मैथुन करता है—मैं उनके घर कभी नहीं जाती।

लक्ष्मी सत्व-स्वरूपा हैं। इन्द्र की सम्पत्ति स्वर्ग के रूप में, पाताल में राज रूप में, घर में गृहलक्ष्मी-रूप में, यज्ञ में दक्षिणा रूप में निवास करती है। जहाँ पर लक्ष्मी नहीं रहती हैं, वहाँ निर्धनता दिखलाई देती है।

लक्ष्मी सबसे पहले बैकुण्ठ में भगवान द्वारा पूजी गई। फिर ब्रह्मा और महादेव ने उनकी पूजा की। क्षीर सागर में विष्णु ने, भारत में मनु ने, पाताल में नागों ने उनका पूजन

किया था। कहा जाता है ब्रह्मा ने भाद्र मास की शुक्लाष्टमी में उनकी पूजा की थी तभी से साधना प्रचलित है। लक्ष्मी की पूजा श्रावण, धनिष्ठा, शतभिषा और पूर्व-भाद्रपद नक्षत्रों और कृष्ण-पक्ष में कभी भी नहीं करनी चाहिए। लक्ष्मी की पूजा स्त्रियों को करनी चाहिए, ऐसा विधान भी मिलता है। जहाँ लक्ष्मी पूजा हो वहाँ घण्टा नहीं बजाना चाहिए। लक्ष्मी-पूजा में लक्ष्मी, नारायण और कुबेर इन तीनों की पूजा का विधान है। सरस्वती-पूजा के दिन भी लक्ष्मी-पूजा होती है। तन्त्रशास्त्र में दश महाविद्याओं में भगवती कमला विख्यात ही हैं।

आज के युग में धन का महत्व सुविदित है। आदिकाल से ही मानव धन के प्रति आकर्षित रहा है। किसी न किसी रूप में धन, सम्पत्ति और वैभव अर्जित करने का बराबर प्रयास करता रहा है। धन प्राप्त करने के अनेक मार्ग हो सकते हैं, उनमें से एक है पृथ्वी से गढ़ा धन प्राप्त करना। अभी हाल ही में फिलीपिन के अपदस्थ राष्ट्रपति की पत्नी इमेल्दा मार्कोस को दूसरे विश्व युद्ध के दौरान सोने की छड़ों का खजाना मिला था। उन्होंने अपने परिवार की खुशहाली का राज बताते हुए कहा कि उनके पति मार्कोस को जापानी सेना से छापामार युद्ध के दौरान तथा कथित खजाना मिला था। उन्होंने कुछ सोना अपने साथियों में बाँट दिया था।

श्रीमती मार्कोस ने बताया कि सोने की मोटी छड़ें सीसे से ढकी हुई थी, इसलिए सामान्य ईटों जैसी दिखाई देती थीं।

श्रीमती मार्कोस ने यह बताने से इन्कार कर दिया कि उनको कितना खजाना और कैसे मिला।

आज के युग में धन का महत्व प्रमाणित है। माया के

बन्धन में केवल संत सुजान ही नहीं बँधते। वह तो माया को ठगनी कहते हैं। एक कथा प्रस्तुत है।

एक सिद्ध ताँत्रिक थे। वह बड़े ही संतोषी थे। लोभ तो जैसे उन्हें छू ही नहीं गया था। जीविका के लिए वह कपड़ा बुनते और बेचते थे, एक दिन एक सेठ के सामने लोगों ने उनकी बहुत प्रशंसा कर दी। लोगों ने बतलाया ताँत्रिक को न गुस्सा आता है और न ही लोभ सताता है। वह सेठ बड़ा ही अभिमानी था। उसने निश्चय कर लिया कि वह तांत्रिक को एक बार गुस्सा दिलाकर रहेगा और लोभ की दलदल में भी धकेलेगा। यह निश्चय कर वह सेठ ताँत्रिक के घर की तरफ चल पड़ा। घर पहुंचकर पाया ताँत्रिक कपड़ा बन रहे थे। उस सेठ ने पूछा, एक गज कपड़े का क्या दाम है ?

दो रुपया। ताँत्रिक ने कहा।

"इतना सस्ता है तो एक गज फाड़ दो।" सेठ बोला। सेठ ने एक गज कपड़ा लिया और बीच से फाड़कर दो टुकड़े कर दिए। फिर पूछा, अब यह आधा टुकड़ा कितने का हुआ ?

ताँत्रिक बोले, आधा है न। इसका दाम एक रुपया है।

सेठ ने तुरन्त उसके भी दो टुकड़े कर दिए पूछा अब ? अब केवल आठ आने का रह गया। तांत्रिक ने बतलाया। इस तरह वह कपड़ा बार-बार आधा हो-होकर कई भागों में बंट गया। उसी क्रम से मूल्य भी कम होता चला गया। सेठ हैरान और परेशान था कि ताँत्रिक के चेहरे पर शिकन तक नहीं आई। अब वह सेठ बोला, अब तो यह किसी भी काम का नहीं रहा। अच्छा आप अपना मूल्य तो ले लीजिए। मुझसे आपकी हानि हो गई है न।

ताँत्रिक बोले, भाई आप अपना यह पैसा रखिए। मैंने इस कपड़े का मूल्य ले भी लिया तो आपका अभिमान ज्यों का त्यों बना रहेगा। ये टुकड़े अब आपके किसी काम नहीं आयेंगे। यह तो बस कूड़ा है आपके लिए। मैं इन टुकड़ों को एक बार सी लूँगा और अपने लिए आसन बना लूंगा। मेरे लिए इनका उपयोग फिर भी बना रहेगा। वह सेठ मारे शर्म के धरती में गड़ गया। उसका मस्तक ताँत्रिक के सामने झुक गया।

इस संसार में धन बहुत कुछ है लेकिन सब कुछ नहीं है। भाग्य में जितना लिखा हो हमें उतना ही धन लेकर सन्तोष करना चाहिए। पृथ्वी में गढ़ा धन प्राप्त करने के लिए हमें सबसे पहले यह देखना चाहिए कि क्या यह धन हमारे भाग्य में है अथवा नहीं ?

मैंने अपने छोटे से ताँत्रिक जीवन में यह अनुभव किया है। पृथ्वी में गढ़ा धन प्राप्त करने के लिए लोग अनेक प्रकार के उद्यम करते हैं। एक बार यह तथ्य स्थापित हो जाने के बाद भी कि पृथ्वी में कोई धन नहीं है। वह बराबर प्रयत्न करते रहते हैं। वह अनेक ताँत्रिकों, गुनियों की सेवा में उपस्थित रहते हैं। इसका मुख्य कारण है वह सरलता से सब कुछ प्राप्त कर लेना चाहते हैं। इस वृत्ति का त्याग करे। नीति शास्त्रों में भी कहा गया है कि धन लक्ष्मी उसके साथ ही वास करती है, जो उद्यमी हैं, परिश्रम करते हैं।

शास्त्र कहते हैं कंचन और कामनी में सब गुण बसते हैं। शायद इसी कारण धन से किसी का हृदय नहीं भरता है।

एक नगर सेठ बड़ा दानी था। यह नियम था कि उसके

द्वार पर जो भिखारी सबसे पहले भीख माँगने आएगा उसे मुंह माँगा दान मिलेगा।

एक दिन एक भिखारी सबसे पहले सेठ के द्वार पर जा पहुंचा। नगर सेठ बाहर आया, सेठ को देखकर भिखारी ने अपना कटोरा आगे बढ़ा दिया। इसमें क्या डालूं ? उसने पूछा। इसे सोने की मोहरों से भर दीजिए भिखारी ने कहा। नगर सेठ भिखारी को देखकर मुस्कराया। उसका कटोरा बहुत छोटा था। माँगा भी तो क्या। सोने की कुछ मोहरें जरूर मिलेंगी, जरूर मिलेंगी। यह कहकर नगर सेठ ने अपने कोषा-गार से डलिया भरकर सोने की मोहरें मंगवाई और कटोरे में डालने लगा। आश्चर्य, देखते-देखते डलिया खाली हो गई, लेकिन भिखारी का कटोरा अभी तक भरा नहीं था।

नगर सेठ के लिए यह शर्म की बात थी। उसने और मोहरें मंगवाईं कटोरे में डालीं, लेकिन कटोरा तब भी नहीं भरा। उसने टोकरी की शेष मोहरें भी कटोरे में डाल दीं। कटोरा फिर भी नहीं भरा।

भिखारी ने क्रोधमें कहा—हे धनी मैं अपना कटोरा उठा लूँ क्या ? आप मेरा कटोरा न भरना चाह रहे हो, तो कह दीजिए, मैं अपनी राह लूं। सेठ ने अपना सारा धन लुटा दिया पर कटोरा अब भी नहीं भरा।

सेठ घबरा गया और भिखारी के चरणों में पड़ गया। और पूछने लगा मेरा अपराध क्षमा हो। सचमुच मैं इस कटोरे को नहीं भर सकता। यह बताइए आखिर कटोरा बना किस चीज का है, जो भरता ही नहीं। इसमें जितना भी डाला जाता है, पता नहीं कहाँ चला जाता है।

भिखारी नगर सेठ की बात सुनकर हंसा और बोला, यह कटोरा साधारण कटोरा नहीं है। यह मानव हृदय का बना हुआ है। आप तो जानते ही हैं कि मनुष्य का हृदय कभी नहीं भरता। न तो आपका हृदय दान देकर भरा और न ही लेने वालों का। मनुष्य के हृदय का यह कटोरा धन-दौलत से जितना भरा जाएगा यह अधभरा ही रहेगा।

प्रिय पाठको ! धन सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए हमें सबसे पहले मन पर अंकुश लगाना होगा। इसके बाद हमें उद्यम करना होगा। अन्त में हमें सही दिशा में प्रयास करना होगा। अनुचित, अप्रामाणिक प्रयोग करके हम कभी भी धन के स्वामी नहीं बन सकते हैं। अब पाठकों के हितार्थ कुछ प्रयोग प्रस्तुत हैं। आशा है पाठक इन प्रयोगों को अपनाकर भरपूर लाभ उठायेंगे।

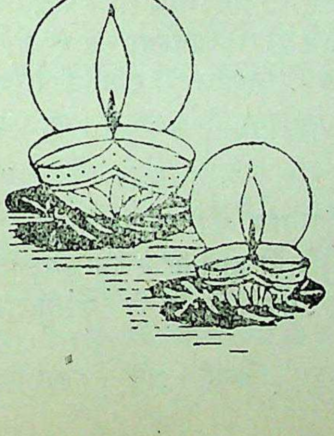

पृथ्वी में गढ़ा धन और रक्षक सर्प

नाग सदियों से हमारी जिज्ञासा का केन्द्र रहे हैं। नाग जिन्हें सर्प भी कहा जाता है, अभी तक एक अनबूझ पहेली बना हुआ है। दरअसल उसका आकार, स्वभाव और उसकी गतिविधियाँ, देखने वालों के दावों के अनुसार काफी रहस्यमय और अनूठे हैं।

यह एक प्राचीन विश्वास है कि सर्प पृथ्वी में गढ़े धन की रक्षा करता है। फ्रायड ने तो इसे 'काम' का प्रतीक बतलाया है। पृथ्वी की ऊपरी सतह के नीचे फैले अथाह पाताल लोक का स्वामी नागराज को ही बतलाया गया है। पृथ्वी को समर्पित धन भी एक प्रकार से पाताल लोक का ही हो जाता है। पाताल लोक का स्वामी नाग है, अगर वह उसकी सुरक्षा के लिए आ जाता है, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? मिस्र के पिरामिडों में असीमित धन आज भी सुरक्षित है। उस धन की सुरक्षा के लिए तंत्र द्वारा व्यवस्था कर दी जाती है कि उसको कोई सरलता पूर्वक निकाल न सके। पिरामिड के मुख्य द्वार पर सर्प की आकृति बना दी जाती है। यह प्रथा आदिकाल में प्रचलित थी।

सर्प के प्रति मनुष्य का प्यार आदि काल से आज तक चला आ रहा है। अभी हाल ही में एक समाचार सामने आया है। एक ऐसी भी सिरफिरी है कि उससे जब कहा जाता है

वह शादी कर ले, तो उसका जवाब यही रहता, 'मैं तो साँपों से शादी करूँगी।' भला बताइए यह कौन-सी तुक हुई कि एक लड़की साँप से शादी करे! यह लड़की है आस्ट्रेलिया की शैनी। इसे सांप पालने का बेहद शौक है। हर समय गले में जहरीले साँपों को नैकलेस की तरह डाले, उन्हें कमर में पेटी की तरह बाँधे रहती है। इतना ही नहीं, रात को सोते समय भी अपने बिस्तर पर सुलाती है और तकिए का काम लेती है विशाल अजगर से।

इसी प्रकार का एक और रोचक समाचार है। लंदन में एक सांप की विशाल मूर्ति ऐसी है जो पिछले कई वर्षों से लगातार रो रही है। कारण यह है कि मूर्तिकार ने इसके बनाने में कमाल कर दिखाया है। यह मूर्ति वातावरण की नमी को अपने भीतर सोख लेती है और फिर उसे आँखों के रास्ते बहाती रहती है। है ना आश्चर्य की बात ?

सर्प जाति की सबसे विशेष बात यह है कि वह न केवल पृथ्वी में गढ़े हुए धन की रक्षा करता है वरन् अनेक जातियों का जीवन यापन भी करता है। (सर्प के विषय में सार-गर्भित जानकारी हेतु मेरी पुस्तक 'नाग और नागमणि' अवश्य पढ़ें।

विषैले सर्प का शिकार करना ही इरूला जाति की जीविका है। सदियों से इरूला जाति सांपों को पकड़कर, उनकी खाल खुले बाजार में बेचती आई है। लगभग १९७१ में जब सरकार ने साँप की खाल का निर्यात बन्द करवा दिया तो इसका प्रभाव इस जाति पर बहुत पड़ा और वे बेरोजगार हो गए। कालान्तर में सहकारी समितियों के प्रयत्नों से उन्हें फिर विषैले साँपों को पकड़ने की सरकारी अनुमति मिली जिसके

अनुसार वे सांपों को पकड़ सके और जहर निकालकर वापस जंगल में छोड़ सकें। इरूला जाति के लोग अब आदर के साथ जीते हैं। अब उनके बच्चे पाठशाला भी जा पाते हैं।

पृथ्वी में गढ़े धन पर बैठे सर्प को पकड़ने अथवा बाहर निकालने के लिए तांत्रिक प्रयोगों के साथ-साथ अन्य उपकरण भी काम में लाये जाते हैं। साँप को पकड़ने में निपुण सपेरे तीन हथियारों का प्रयोग करते हैं—एक कमानीदार चाकू जिसको 'कत्ती' कहा जाता है, दूसरा भाला और तीसरा एक लम्बी लाठी जिसके सिरे पर लोहे की कड़ी लगाई जाती है। तांत्रिक लोग एक कपड़े का थैला भी रखते हैं जिनमें पकड़े हुए सांप को रखा जाता है।

पृथ्वी में गढ़ा धन प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण भाग है, सांप को खजाने से दूर करना। इसके लिए सबसे पहले तांत्रिक उस स्थान को अभिमंत्रित करके बाँधता है। सुरक्षा कवच आदि करता है। इसके बाद उस स्थान को खोदना शुरू करते हैं। थोड़ी देर बाद सांप विवश होकर बाहर निकल आता है। अब वे मंत्रों से बंधे सांप की दुम सरलता से पकड़ लेते हैं और जोरों से घुमाकर जमीन पर पटक देते हैं। फिर हवा में उसको कलैया खिलाया जाता है। उसके बाद सांप को जमीन पर रखकर लाठी से उसके सर को दबाया जाता है। ऐसा करने पर सांप अचल हो जाता है। दाहिने हाथ में साँप का सिर पकड़कर बाएँ से पूँछ को पकड़कर थैले में झुकाया जाता है। फिर कलाईयों के झटके से थैले में डाल दिया जाता है। यह एक ऐसी कला है जो तांत्रिक को केवल अनुभव से प्राप्त होती है।

इरूला कवीले के लोग इस में निपुण होते हैं। प्रायः वह ही इस कार्य में ताँत्रिक की मदद करते हैं। इसके बाद धन निकालने की प्रक्रिया मंत्रों के उच्चारण के साथ शुरू की जाती है। अब ताँत्रिक और सपेरे का केवल एक ही कार्य शेष रहता है और वह सांप का जहर निकालना। इसके लिए एक गड्ढा खोदा जाता है ताकि साँप निकल कर भाग न सके। अन्दर लकड़ी का बेंच रखा जाता है। उस बेंच पर एक शिकन्जा रखा जाता है जिस पर एक काँच का गिलास रखा जाता है। उस गिलास को रेगजीन के कपड़े से ढाँप दिया जाता है। साँप का सिरा दाहिने हाथ में पूंछ और बाएँ हाथ में पकड़कर सांप की गर्दन को दबाया जाता है, तब सांप अपना मुँह खोल देता है। इस समय सांप के सिर को गिलास के ऊपरी किनारे के पास लाया जाता है। साँप जो आक्रोश में है 'रेगजीन' कपड़े को काटने लगता है। अब जहर निकलकर गिलास के भीतर बूंद-बूंद इकट्ठा हो जाता है। इस तरह तीन या चार बार जहर निकाला जाता है। साँप के मुंह से जहर ऐसे निकलता है जैसे मनुष्य के मुँह से थूक। क्षण भर में जहर निकलता है और इतना जहर मनुष्य को मार डालने के लिए काफी है।

साँप कितना डरावना जीव है, इसका अनुमान आप इस घटना से ही लगा सकते हैं, एक नया सपेरा शिकार के लिए पास के एक गाँव में गया। साथियों को पीछे छोड़ दिया और अकेले ही शिकार के लिए आगे निकल गया। गाँव की हद से बाहर जाने के बाद उन्होंने एक गांव वाले से पूछा—भाई सांप किधर है।

गाँव वाले को मालूम न था कि वह नये-नये बने सपेरे से बातें कर रहा है। सहज भाव से बोला—यहाँ से सीधे उत्तर

की ओर चले जाओ। बस, एक दो मील चलने के बाद सर्प के दर्शन हो जायेंगे। ठीक उसी समय साँप की फुसकार सुनाई दी। उसे सुन सपेरा पोटली जमीन पर फेंक बोला—'ऐ, दक्षिण की ओर का रास्ता कौन-सा है ?

साँप कितना विषैला है ? यह सब बाद की बातें है। साँप को देखकर ही व्यक्ति थर-थर काँपने लगता है। कुशल ताँत्रिक को चाहिए कि वह पहले साँप के भय को हृदय से दूर करे। इसके बाद ही प्रयास करे। मेरे विचार में सम्पूर्ण भारत में केवल इरूला जाति ही सांप पकड़ने में माहिर है। तमिलनाडु में इरूला जाति की संख्या एक लाख से भी अधिक है और चेंगलपेट में इनकी संख्या दस हजार है।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही सर्प और पृथ्वी में गढ़ा धन रहस्यों के घेरे में रहे हैं। आज के ताँत्रिक वर्ग ने इस दिशा में काफी काम किया है। उम्मीद की जानी चाहिए, वह समय दूर नहीं है जब पृथ्वी में गढ़ा धन हमारी पकड़ में होगा तब निश्चित रूप से वह धन रहस्य और खतरों के दायरों से बाहर निकल आयेगा।

पृथ्वी से जो गढ़ा धन प्राप्त होता है, उसे हम 'आकस्मिक रूप से प्राप्त' धन की श्रेणी में रख सकते हैं। धन प्राप्त होने के उपरान्त पहला प्रयास यह होना चाहिए कि वह धन स्थिर और सुरक्षित रहे।

सन्त लोग ऐसा मानते हैं कि धन का छः प्रकार से नाश होता है। जिसे अपना धन बचाना है, वह इन छः बातों पर अवश्य ध्यान दे—बहुत बोलना नहीं चाहिए। बहुत चलना नहीं चाहिए। ज्यादा सोना नहीं। अधिक भोजन नहीं। भोजन

के बारे में आचार्य पातंजलि का नियम है। आधा पेट अनाज से भरें, चौथाई भाग पेट पानी से भरें और बाकी का चौथाई हिस्सा हवा के संचार के लिए खाली रखें। जवानी में क्रोध मत करो। क्रोध करेंगे तो धन का अपव्यय कर बैठेंगे और छठा है विषय भोग, जो धन का नाशक है। जिसे अपने को संभालना है, वह इन छः बातों का ध्यान अवश्य रखें।

रामायण में अयोध्या कांड यौवन कांड है, इसलिए तुलसीदास ने शिव की स्तुति की है। यौवन में काम ही साधक को परेशान करता है। शिव काम को भस्म करने वाले हैं, इसलिए हर साधक को प्रथम रुद्राष्टक का पाठ करना चाहिये। शिव के बांई ओर हिमालय की पुत्री भवानी बैठी है। तुलसीदासजी समझाना चाहते हैं कि हे युवक! यौवन काल में तेरा भी विवाह होगा। तेरा दाम्पत्य जीवन शिव-पार्वती जैसा बने। शिव-पार्वती चाहे पर्वत पर हों, चाहे श्मशान में हों। हर जगह मस्ती में रहते हैं। आज का गृहस्थी बंगलों में रहता है। फिर भी दुःखी रहता है। अगर पति पत्नी को प्रेम दे और पत्नी पति को आदर दे तो वैवाहिक जीवन अपने आप सुखमय बन जाएगा। आज हर गृहस्थी को राम की तरह बनना होगा। भगवान राम को राज तिलक की बात सुनकर चेहरे पर प्रसन्नता नहीं आई और वनवास की बात सुनकर ग्लानि नहीं हुई। दोनों परिस्थितियों में राम एक प्रकार की स्थिति में रहे।

प्रिय पाठकों! धन का यह सनातन गुण है कि वह आने के बाद विवेक को हर लेता है। पृथ्वी में गढ़ा धन तो हम बिना परिश्रम और केवल भाग्य के सहारे प्राप्त करते हैं। इस संदर्भ में तो इसे संभालना और उचित प्रकार से व्यय करना और

भी आवश्यक हो जाता है। समृद्धि पाने से पहले और पाने के बाद भी सोचना चाहिए। हमारे सन्त समृद्धि का तीन प्रकार से वर्णन करते हैं। समृद्धि को निर्दोषता से भोगना चाहिए। समृद्धि का दान यौवन अवस्था में निश्चिन्त होकर करें। समृद्धि की देखभाल वृद्ध के समान करो। शिव के तेजस्वी मस्तक पर चन्द्रमा है। उसी प्रकार हमें अपनी संस्कृति का ध्यान रखना चाहिये।

अगर हम उपरोक्त बातों का ध्यान रखेंगे तो निःसन्देह पृथ्वी से गढ़ा धन प्राप्त करने में सफलता प्राप्त होगी और उसे संभाल कर रखने में भी समर्थ होंगे।

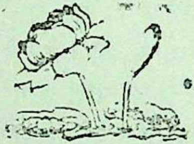

धनवान बनने के तांत्रिक उपाय

तन्त्र-मन्त्र विज्ञान में जितनी भी अलौकिक साधनाएँ हैं, उन सबके मूल में मन है। मन की शक्ति असीम है। संसार में कोई कार्य ऐसा नहीं है जिसे मन की शक्ति विकसित करके न किया जा सके और मन की शक्ति को बढ़ाने का साधन मन को एकाग्र करना है।

तन्त्र साधना में सफलता हो जाने पर अतीन्द्रिय शक्ति स्वयं प्राप्त हो जाती है। ऐसी शक्ति प्राप्त साधक अगर किसी को देख लें तो वह वशीभूत हो जाता है। लेकिन इस प्रकार की शक्तियां दो-चार दिन में प्राप्त नहीं हो जाती। इसके लिए निरन्तर अभ्यास करना आवश्यक है। अगर आप यह अनुभव करते हैं कि आपकी एकाग्रता बीच में ही नष्ट होती जा रही है, तब भी अपना प्रयत्न जारी रखिए। साधना के माध्यम से साधक में ऐसी शक्ति आ जाती है कि वह सिद्धि को प्राप्त कर लेता है।

मन्त्रों की शक्ति बड़ी ही प्रबल होती है। कम पढ़े-लिखे साधक भी मन्त्रों का प्रयोग करते हैं। प्रबुद्ध वर्ग मन्त्रों की शक्ति को केवल ठग विद्या कहकर टाल देते हैं। उनका कथन है कि मन्त्र की शक्ति केवल कल्पना की बात है, उसके पीछे कोई वैज्ञानिक आधार नहीं हैं। परन्तु वैज्ञानिक अनुसंधान ने यह सिद्ध कर दिया है कि मन का सम्बन्ध परमनोविज्ञान से है। मन्त्रों की अपनी सत्ता है।

मन्त्रों के रचियता ऋषि मुनि थे। वे त्रिकाल दृष्टा थे। वह परामानसिक शक्तियों के अधिष्ठात्रा थे। उन्होंने प्रत्येक मन्त्र के अक्षरों का चयन इस प्रकार किया था कि शक्ति का समावेश होता था। प्रत्येक अक्षर का कोई न कोई देवता, स्वामी होता है। जब उस मन्त्र का जाप किया जाता है तो वे सभी देवता उस साधक की सहायता करते हैं।

मन्त्र की व्याख्या करते हुए विद्वानों ने लिखा है कि मन्त्र गुप्त भाषण और मनन करने योग्य सिद्धान्त को कहते हैं, क्योंकि 'मन्त्रि गुप्त भाषणे' से मन्त्र शब्द बना है। आज का चिकित्सा-विज्ञान भी मन्त्र की शक्ति को मान्यता देने लगा है।

मन्त्रों में महान शक्ति छिपी हुई है। उनका सही और शुद्ध उच्चारण करके उन पर सिद्धि प्राप्त कर असम्भव कार्यों को भी सम्पन्न किया जा सकता है। कोई मन्त्र छोटा या बड़ा नहीं होता। छोटा से छोटा मन्त्र भी महान हो सकता है। तांत्रिकों का मत है कि मन्त्र का जाप करने वाले साधक के संकल्प के अनुसार, मन्त्र अभीष्ट फल दिखाने का अधिकार मंत्र के शब्दों तथा स्वरों के नायक आधिदेवता को ही होता है।

बहुधा मुझसे यह प्रश्न पूछा जाता है कि साधना कैसे करनी चाहिये जिससे लाभ प्राप्त हो सके। इसका सीधा उत्तर यह है कि किसी भी मन्त्र का पूर्ण निष्ठा, श्रद्धा तथा एकाग्रता के साथ जाप किया जा सकता है। उसका फल अवश्य प्राप्त होगा। इसलिए प्रत्येक मन्त्र का जाप करते समय उसमें श्रद्धा होना आवश्यक है। पाठकों के हितार्थ अब कुछ धनवान बनने के तांत्रिक उपाय प्रस्तुत हैं।

पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें

कार्य सिद्धि हेतु

किसी भी कार्य की कामना करने तथा उसमें निश्चित रूप से सिद्धि प्राप्त हो—इसके लिए ही कहा गया है कि कालिका साधना करनी चाहिए।

कालिका का मन्त्र इस प्रकार है—

"श्री कालिका एलक मेलक,
अठंत देव देवाने सैयद मसाने,
ऐते बाँध बशकर हाथ हथकड़ी
पाँव पैकड़ी सवा मन का तंग
ऊपर वज्र पयान,
तेरी शक्ति गुरु की भक्ति
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

उपरोक्त मन्त्र बीस हजार जाप करने पर तीस दिन में सिद्ध होता है। मन्त्र जाप केवल सोमवार से आरम्भ करना चाहिए। यह साधना घर रहकर भी हो सकती है।

साधक रात्रि में दस बजे के बाद ऊन के आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके बैठें। सामने तेल का दीपक जलाए और मदिरा का प्याला रखें। इसके बाद जाप शुरू करें। जाप के बाद दशार्ण होम करे और मदिरा की धार दे। मन्त्र जाप को ही मन्त्र की सिद्धि समझें।

प्रयोग के लिए कहीं भी जाते समय मन्त्र जाप करते हुए अपने ऊपर जल के छींटे मारें। भभूत का तिलक लगायें, तो कार्य पूरा होगा।

अब मैं नीचे कामनाओं की पूर्ति के लिए कुछ मानस-मन्त्र दे रहा हूं जिससे साधक लाभ उठा सकें :—

धन प्राप्ति के लिए :

"जिमि सरिता सागर महुं जाहीं,
यद्यपि ताहि कामना नाहीं ।
तिहि मुख सम्पत्ति बिनहि बोलाए,
धरमसील पहं जाहि सुभाएँ ॥"

दरिद्रता मिटाने के लिए :

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के,
कामद धन दारिद्र दवारि के।
जे सकाम नर सुनहि जे गावहि,
सुख सम्पत्ति नाना विधि पावहि ॥

जीविका प्राप्ति के लिए :

विश्व भरण पोषण कर जोई ।
ताकर नाम भरत अस होई ॥

साधकों के लिए लक्ष्मी से सम्बन्धित कुछ गोपनीय प्रयोग दे रहा हूं । ये मन्त्र प्रभावशाली एवं शीघ्र फलदायक हैं ।

लक्ष्मी बीज मन्त्र :

यह लक्ष्मी बीज मन्त्र है। इससे निश्चय ही आर्थिक उन्नति प्राप्त होती है। सामान्यतः सात लाख जप होने पर सफलता दिखाई देने लग जाती है।

मन्त्र—श्रीं

चतुराक्षरी लक्ष्मी मन्त्र :

यह मन्त्र सवा लाख जपने पर सफलता देने लग जाते हैं। साधक को स्नान कर, लक्ष्मी का चित्र रखकर, नित्य पाँच मालायें फेरनी चाहिए। कमल गट्टे की माला का प्रयोग किया जाए तो विशेष सफलता प्राप्त होती है।

मन्त्र—ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं।

दशाक्षर लक्ष्मी मन्त्र :

यह मन्त्र सात लाख जपने पर फलप्रद होता है। इसके लिए कमल गट्टे की माला का प्रयोग किया जाना चाहिए। जब जप पूर्ण हो जाये तब खीर का भोजन कराकर वस्त्र दान देना चाहिए। इससे यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र—ओ३म् ऐं ह्रीं क्लीं ह्रू सौं जगत्प्रसूत्यै नमः।

दारिद्रय विनाशक मन्त्र :

जिसके भाग्य में दरिद्रता ही लिखी हो, उसे नित्य पाँच मालाएँ निम्नलिखित मन्त्रों की फेरनी चाहिए। माला कमल गट्टे की होनी आवश्यक है। बीस लाख मन्त्र का जाप होने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र

'ओ३म ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं
दारिद्रय विनाशके
जगत्प्रसूत्यै नमः।"

प्रत्येक कार्य सिद्धि यन्त्र

८	१	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

उपरोक्त यन्त्र को कच्ची हल्दी से भोजपत्र पर लिखें। नीचे मनोरथ लिखें पलीता लगाके रविवार को जलावें। सात रविवार करें तो दुःख का नाश हो और हल्दी की माला से यह यन्त्र ३१ बार जपें। कार्य सिद्ध हो जाएगा।

व्यापार में लाभ होने का यन्त्र

५०	५७	२	६
६	३	५२	५२
५६	५१	८	५१
४	३	५२	५५

उपरोक्त यन्त्र भोजपत्र पर केशर की स्याही से गंगा जल डालकर चमेली की कलम से शुक्रवार को ७०० यन्त्र लिखकर आटे की गोली बना कर मछलियों को खिला दें। लाभ होगा।

कुबेर साधना

कुबेर देवताओं के कोषाधिपति माने जाते हैं। इनकी साधना देवताओं तक ने की है। दरिद्रता निवारण, आर्थिक उन्नति के लिए यह साधना उत्तम मानी जाती है।

कुबेर मन्त्र का जप कोई भी कर सकता है। यह मन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली और धनदायक माना गया है। लगभग सभी तांत्रिकों ने इस मन्त्र की सराहना की है। मेरे स्वयं के जीवन में ऐसे कई अनुभव हुए हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि यह मन्त्र अपने आपमें कितना अधिक प्रभावपूर्ण है। यह मन्त्र जीवन में सुख समृद्धि देने में सहायक है।

अभी पिछली दीपावली को मुझे एक व्यापारी के यहां पूजन के लिए निमन्त्रण मिला। व्यस्तता होने पर भी मैंने दीपावली की रात्रि को लक्ष्मी पूजन करने की स्वीकृति दे दी। इस कुबेर साधना का प्रभाव मैंने कुछ समय बाद अनुभव किया। आज वह बहुत सुखी है। कुबेर मन्त्र पाँच लाख जप करने से चैतन्य होता है। कुबेर मन्त्र की साधना विधि इस प्रकार है।

विनियोग :

अस्य कुबेर मन्त्रस्य विश्रवा ऋषिः बृहती छन्दः।

शिवमिध धनेश्वरी देवता, दारिद्रय विनाशने पूर्ण समृद्धि सिद्ध यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान :

मनुजबाहाविमान वरस्थित गरुड़रत्ननिभ
निधिनायकम् ।
शिवसंख मुकुटादिविभूषितं बरगदे दधतं भज
तुंदिलम् ॥

विरोचन

इसके बाद करन्यास और अंगन्यास करना चाहिए। अगर कुबेर मन्त्र हो तो उसके नौ दीपक लगा कर यन्त्र पर दुग्धधारा देते हुए निम्न मन्त्र से अभिषेक करना चाहिए।

मंत्र

ओ३म् श्रीं ओ३म् ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं
वित्तेश्वराय नमः ।

तत्पश्चात् पुष्पों से अभिषेक कर पुष्पांजलि देनी चाहिए और उस यन्त्र पर निम्न कुबेर मन्त्र का पाँच लाख जप करना चाहिए, तब यन्त्र और मन्त्र सिद्ध होता है ।

कुबेर मन्त्र

"ओ३म् यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्यादिपतये
धनधान्यसमृद्धि देहि दापय स्वाहा"

जब पाँच लाख मन्त्र जप हो जाय तब उसका दशांश हवन करना चाहिए ।

जीवन में समृद्धि, सुख-सौभाग्य, व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति एवं सभी प्रकार के सुख प्रदान करने में कुबेर साधना

समर्थ है। कुबेर साधना के बाद पृथ्वी में गढ़ा धन या फिर अचानक धन भी प्राप्त होता है।

व्यापार द्वारा धन प्राप्ति का मन्त्र

"ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम गृहे धन पूरय पूरय चिंताम् दूरय दूरय स्वाहा।"

प्रातःकाल उपरोक्त मन्त्र का २१६ बार जप करने से व्यापार द्वारा धन का लाभ होता है।

ऋद्धि सिद्धि दाता मन्त्र

'ॐ पद्मावती पद्मनेत्र लक्ष्मीदायिनी वांछा भूत प्रेत निग्रहनी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहनी ऋद्धि-वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावत्यैः नमः।

गुलाल, गोरोचन, छारछबीला और कपूर-कचरी इन सब की चने की बराबर १०८ गोलियाँ बनावें। फिर शनिवार की रात्रि में लाल वस्त्र पहन कर लाल पुष्प चढ़ावें और २१६ बार मन्त्र का जाप करें। मन्त्र के साथ गोली को अग्नि पर रखना चाहिये। प्रतिदिन २१ गोलियों को अभिमन्त्रित करके अग्नि पर चढ़ाना चाहिए। इस प्रकार एक मास तक निरन्तर साधना करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है तथा साधक को सिद्धि प्राप्त होती है।

पृथ्वी में गढ़ा हुआ धन दीखने का मन्त्र

इन्द्रजाल में लिखा है काले रंग की मुर्गी, जिसका माँस भी लगभग काला हो, उसकी चर्बी को अपनी आँखों में लगाने से पृथ्वी में गड़ा हुआ धन दिखलाई देता है।

पृथ्वी में गड़े हुए धन को जानना

जिस स्थान पर कौए मैथुन करें तथा सिंह आकर बैठें, ऐसे स्थान में गड़ा हुआ धन है, ऐसा समझना चाहिए।

पृथ्वी में गड़ा धन दीखने का मन्त्र

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सर्वोषधी प्रणते नमो विच्चे स्वाहा।"

काले कौए की जीभ को काली गाय के दूध में औटा कर जमावे। फिर उससे घी निकाल कर, घी को उक्त मन्त्र से १००८ बार अभिमन्त्रित करके आँखों में लगावे तो गड़ा हुआ धन दिखलाई देता है।

पृथ्वी में गड़े धन को खोदने का मन्त्र

"ॐ नमो भगवती सुमेरू रूपायै महाक्रातायें कं कालरूपायै फट् स्वाहा।"

पहले बिनौले, मूँग और तिल को गोमूत्र में पीस कर अपने शरीर में लगाएँ। फिर जहाँ खोदना हो, वहाँ चौका लगाकर खारक की बलि देकर मन्त्र का पाठ करे। फिर इसी मन्त्र से गेहूं और तिल का होम करे। इस प्रकार सात दिन तक करने के उपरान्त शुभ नक्षत्र देखकर उस स्थान को खोदें तो कोई भय नहीं होगा।

लक्ष्मी प्राप्ति का मन्त्र यन्त्र

निम्नलिखित यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर इस मन्त्र का तीन लाख की संख्या में जप करें।

मन्त्र—"ॐ श्रीं ह्रीं महात्म्ये नमः।"

जप के उपरान्त दशांश होम करे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर प्रतिदिन १००८ बार मन्त्र का जप करते हुए निम्न यन्त्र का पूजन करे तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। यन्त्र के बीच में नाम वाले स्थान पर लाभ पाने वाले का नाम लिखना आवश्यक है। यह यन्त्र इस प्रकार है—

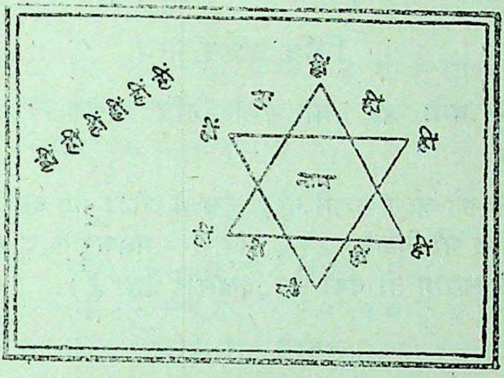

धनदायक यन्त्र

निम्नलिखित यन्त्र को अगर ताम्रपत्र पर खुदवाकर पूजा के स्थान में रखा जाए और उसकी पूजा की जाए तो घर में लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

ॐ	प	ॐ
अ	स	ट
ॐ	रा	ॐ

व्यापार वर्द्धक मन्त्र

"ॐ-श्रीं २ परमां सिद्ध श्रीं श्रीं ॐ श्रीं ।"

प्रयोग के दिन व्रत रखकर संध्या के समय नागौरी के फूल अष्टगन्ध में मिलाकर ११००० मन्त्र जपे फिर ११०८ आहुति देवे तो व्यापार की वृद्धि होती है ।

निधि दर्शन मन्त्र

"ॐ नमः श्रीं क्लीं सर्व्व निधि प्राखत नमा विच्चे स्वाहा ।"

कौवे की जीभ काली गौ के दूध में औटा कर दही बनाएँ। इसके बाद घी निकाल २१६ बार मन्त्र पढ़कर काजल बनायें, आँखों में लगाए तो गड़ा धन दिखलाई देता है ।

लक्ष्मी का मन्त्र

"ॐ नमो पद्मावती पद्मनेत्र बज्र बज्रांकुश प्रत्यक्ष भवंति ।"

उपरोक्त मन्त्र १०००० बार लगातार ३१ दिन तक जपे तो लक्ष्मी विशेष प्रसन्न होती है ।

गड़ा धन जानने का मन्त्र

"ॐ कनक स्फूटि विश्व के सेना चींग अंजनी परमा दृष्टि कुरु कुरु स्वाहा ।"

ग्रहण के समय मारे गये हिरण के चर्म या कस्तूरी के लिए जो हिरण मारा गया हो उसके चर्म पर बैठकर मूंगा की माला से १००८ बार मंत्र जपे तथा आहुति करे और एक अष्टधातु

की कटोरी पर मंत्र लिखकर सन्मुख रखे तो जहाँ धन गड़ा हो कटोरी जाकर ठहर जाती है।

स्थान खोदने का मंत्र

"ॐ नमः एबंति सुमेरुपया लहाकालय कंकाल रुपया फट् स्वाहा।"

गेहूं तिल का चूर्ण बना करके शुद्ध घी में सानकर उस स्थान में हवन करे तो सर्पादिक का भय न रहे और पृथ्वी में गढ़ा धन सरलतापूर्वक मिल जाता है।

लक्ष्मी मंत्र

"ॐ नमो पद्मावती अद्यग्नतने लक्ष्मी दायिनी बाधा भूत-प्रेत विन्ध्यवासिनी सर्व शत्रु संहारिणी-दुर्जन मोहिनी सिद्धऋद्ध वृद्धि कुरु २ स्वाहा ॐ नमः क्लीं श्री पद्मावत्ये नमः।"

गुग्गल गोरोचन छारछबीला कपूर कचरीमटर की गोली बनाएँ। रवि के दिन से आरम्भ कर नित्य ११०८ बार मंत्र जपें और हवन करे लक्ष्मी जी की कृपा से गढ़ा धन प्राप्त होता है।

कनकधारा प्रयोग

धनपति होना कोई अपराध नहीं है। गृहस्थ जीवन की सुख-शाँति का आधार आर्थिक सम्पन्नता ही है। धन-प्राप्ति के लिए कनकधारा साधना शीघ्र फलदायक है। इसमें किसी जटिल विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है।

आज जिस प्रकार से मंहगाई है, उससे केवल मात्र अर्थोपार्जन से ही सारी समस्याओं का समाधान नहीं हो पाता है।

इसके लिए धन संचय भी आवश्यक है। लक्ष्मी प्राप्त करना बुरा कार्य नहीं है। धन संचय भी अपराध नहीं है। इसके लिए हमारे तंत्र में कुछ ऐसे प्रयोग हैं, जिन्हें अपनाकर हम अल्प समय में सम्पन्न और धन संचय करने में सक्षम हो सकते हैं।

जहाँ तक मेरा निजी अनुभव है, आर्थिक सम्पन्नता एवं लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिए जितने भी तंत्र प्रयोग हैं, उनमें 'कनकधारा साधना' सबसे शीघ्रफल देने वाली है। इसमें कुछ ऐसी विशेषता है कि यह अर्थोपार्जन के कुछ ऐसे रास्ते बताती है जिस पर चलकर साधक अल्प समय में ही सफलता प्राप्त कर लेता है। इसके प्रयोग से मनुष्य अपने कर्ज से भी शीघ्र ही मुक्ति प्राप्त करता है और अपनी दरिद्रता को दूर भगाने में समर्थ हो पाता है। मैंने स्वयं कई लोगों से कनकधारा साधना सम्पन्न करवाई है, और इससे अनुकूल परिणाम प्राप्त किये हैं।

वास्तव में ही यह साधना शक्ति-सम्पन्न है और दरिद्रता मिटाने, व्यापार की उन्नति में सहयोगी होने तथा उन्नति में भी सहायक है। अब मैं कनक धारा स्तोत्र का पाठ और उस का अर्थ प्रस्तुत कर रहा हूं। आशा है पाठक लाभ उठावेंगे। सबसे पहले अनुवाद प्रस्तुत है।

भावार्थ—जैसे भ्रमरी अधखिले कुसुमों से अलंकृत तमाल-तरु का आश्रय लेती है, उसी प्रकार जो श्रीहरि के रोमाँच से सुशोभित श्री अंगों पर निरन्तर पड़ता रहता है तथा जिसमें सम्पूर्ण ऐश्वर्य का निवास है, सम्पूर्ण मंगलों की अधिष्ठात्री देवी भगवती महालक्ष्मी का वह कटाक्ष मेरे लिए मंगलदायी

हो। जैसे भ्रमरी महान कमल-दल पर मंडराती रहती है, उसी प्रकार जो मुर-शत्रु श्रीहरि के मुखारविन्द की ओर बराबर प्रेमपूर्वक जाती और लज्जा के कारण लौट जाती है, समुद्रकन्या लक्ष्मी की वह मनोहर मुग्ध दृष्टिमाला मुझे धन-सम्पत्ति प्रदान करे। जो सम्पूर्ण देवताओं के अधिपति इन्द्र के पद का वैभव-विलास देने में समर्थ है, मधुहन्ता श्रीहरि को भी अधिकाधिक आनन्द प्रदान करने वाली है तथा जो नील-कमल के भीतर भाग के समान मनोहर जान पड़ती है, उन लक्ष्मी जी के अधखुले नेत्रों की दृष्टि क्षण भर के लिए मुझ पर भी थोड़ी-सी अवश्य पड़े। शेषशायी भगवान विष्णु की धर्मपत्नी श्री लक्ष्मी जी का नेत्र हमें ऐश्वर्य प्रदान करने वाला हो, जिसकी पुतली तथा बरौनियाँ अनंग के वशीभूत (प्रेम-परवश) हो अधखुले, किन्तु साथ ही निर्निमेष नयनों से देखने वाले आनन्द कन्द श्री मुकुन्द को अपने निकट पाकर कुछ तिरछी हो जाती है जो भगवान मधुसूदन के कौस्तुभमणि-मण्डित वक्षःस्थल में इन्द्र-नीलमयी हारावली-सी सुशोभित होती है तथा उनके भी मन में काम (प्रेम) का संचार करने वाली है, वह कमल-कुञ्ज-वासिनी कमला की कटाक्ष माला मेरा कल्याण करे।

जैसे मेघों की घटा में बिजली चमकती है, उसी प्रकार जो कैटभशत्रु श्री विष्णु के काली मेघमाला के समान श्यामसुन्दर वक्षःस्थल पर प्रकाशित होती हैं। जिन्होंने अपने आविर्भाव से भृगुवंश को आनन्दित किया है तथा जो समस्त लोकों की जननी है, उन भगवती लक्ष्मी की पूजनीया मूर्ति मुझे कल्याण प्रदान करें। समुद्र-कन्या कमला की वह मन्द, अलस, मन्थर और अर्धोन्मीलित दृष्टि, जिसके प्रभाव से कामदेव ने मंगलमय भगवान मधुसूदन के हृदय में प्रथम बार स्थान प्राप्त किया था

यहाँ मुझ पर पड़े। भगवान नारायण की प्रेयसी लक्ष्मी का नेत्र रूपी मेघ दयारूपी अनुकूल पवन से प्रेरित हो दुष्कर्म (धनागम विरोधी अशुभ प्रारब्ध) रूपी धाम को चिरकाल के लिए दूर हटाकर विषाद रूपी धर्मजन्य ताप से पीड़ित मुझ दीनरूपी चातक पर धनरूपी जलधारा की वृष्टि करे। विशिष्ट बुद्धि वाले मनुष्य जिनके प्रति पात्र होकर जिस दया दृष्टि के प्रभाव से स्वर्ग पद को सहज ही प्राप्त कर लेते हैं, पद्मासना पद्मा की वह विकसित कमल-गर्भ के समान कान्तिमयी दृष्टि मुझे मनोवाँछित पुष्टि प्रदान करे। जो सृष्टि-लीला के समय वाग्देवता (ब्रह्मशक्ति) के रूप में विराजमान होती है। तथा प्रलय-लीला के काल में शाकुम्भरी (भगवती दुर्गा) अथवा चन्द्रशेखर वल्लभा पार्वती (रुद्र-शक्ति) के रूप में अवस्थित होती है, त्रिभुवन के एकमात्र पिता भगवान नारायण की उन नित्ययौवना प्रेयसी श्री लक्ष्मी जी को नमस्कार। मातः शुभ कर्मों का फल देने वाली श्रुति के रूप में आपको प्रणाम है। रमणीय गुणों की सिन्धु रूपा रति के रूप में आपको नमस्कार है। कमल वन में निवास करने वाली शक्ति स्वरूपा लक्ष्मी को नमस्कार है तथा पुष्टिरूपा पुरुषोत्तमप्रिया को नमस्कार है। कमल वदना कमला को नमस्कार है। और सिन्धु संभूता श्री देवी को नमस्कार है। चन्द्रमा और सुधा की सगी बहन को नमस्कार है भगवान नारायण की वल्लभा को नमस्कार है।

कमल सदृश नेत्रों वाली माननीया मां ! आपके चरणों में किए गये प्रणाम सम्पत्ति प्रदान करने वाले, सम्पूर्ण इन्द्रियों को आनन्द देने वाले, साम्राज्य देने में समर्थ और सारे पापों को हर लेने के लिए सर्वथा उद्यत हैं, वे सदा मुझे ही अवलम्बन दें (मुझे ही आपकी चरण वन्दना का शुभ अवसर सदा प्राप्त

होता रहे) जिनके कृपाकटाक्ष के लिए की गई उपासना उपासक के लिए सम्पूर्ण मनोरथों और सम्पत्तियों का विस्तार करती है, श्रीहरि की हृदयेश्वरी उन्हीं आप लक्ष्मी देवी का मैं मन, वाणी और शरीर से भजन करता हूं। भगवती हरिण्यि ! तुम कमल वन में निवास करने वाली हो तुम्हारे हाथों में नीला कमल सुशोभित है। तुम अत्यन्त उज्जवल वस्त्र, गन्ध और माला आदि से शोभित हो। तुम्हारी झाँकी वड़ी मनोरम है। त्रिभुवन का ऐश्वर्य प्रदान करने वाली देवि ! मुझ पर प्रसन्न हो जाओ। दिग्गजों द्वारा सुवर्ण-कलश के मुख से गिराये गए आकाश गंगा के निर्मल एवं मनोहर जल से जिनके श्री अंगों का अभिषेक (स्नान कार्य) सम्पादित होता है, सम्पूर्ण लोकों के अधीश्वर भगवान विष्णु की गृहिणी और क्षीरसागर की पुत्री उन जगज्जननी लक्ष्मी को मैं प्रातःकाल प्रणाम करता हूं। कमल-नयन केशव की कमनीय कामिनी कमले ! मैं अकिंचन (दीन-हीन) मनुष्यों का अग्रगण्य हूं, अत-एव तुम्हारी कृपा का स्वाभाविक पात्र हूं। तुम उमड़ती हुई करुणा की बाढ़ की तरह तरंगों के समान कटाक्षों द्वारा मेरी तरफ देखो। जो लोग इन स्तुतियों द्वारा प्रतिदिन वेदत्रयी-स्वरूपा त्रिभुवन-जननी भगवती लक्ष्मी की स्तुति करते हैं, वे इस भूतल पर महान गुणवान और अत्यन्त सौभाग्यशाली होते हैं तथा विद्वान पुरुष भी उनके मनोभाव को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं।

अब कनकधारा स्तोत्र का मूल पाठ प्रस्तुत है।

———

श्री कनकधारास्तोत्रम्

अंगं हरे पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृंगाँगनैव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अंगीकृताखिलविभूतिरपांगलीला
मांगल्यदास्तु मम मंगलदेवतायाः ॥१॥

मुग्ध्या मुहुर्विदधती वदनै मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।
माला दृशोर्मधुकरविमहोत्पले या
सा मै श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥२॥

विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष
मानन्दहेतुरधिकं मधुविद्विषौ पि ।
ईषन्निषीडतु मयि क्षणमीक्षणार्द्ध
मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायः ॥३॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द
मानन्दकन्दमनिमेषमनंगतन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनी निकपक्ष्म नेगं
भूत्यै भवेन्मम भुजंगशयांगनायाः ॥४॥

बाह्यन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतो हि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयावाः ॥५॥

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारे
र्धाराधरे स्फुरति या तडिदंगनेव ।

मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति-
भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥६॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्मांगल्य
भाजि मधुमाथियनि मन्मथेन ।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्द्धं
मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥७॥
दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा
मस्मिन्नकिंचनविहंगशिशौ विषण्णे ।
दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायणप्रणयिनी नयनाम्बुवाहः ॥८॥
इष्टा विशिष्टमतयो पि यथा दयार्द्र
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते ।
दृष्टि प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां
पुष्टि कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥९॥
गीर्देवतैति गरुडध्वजभामिनीति
शाकुम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति ।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥१०॥
श्रुत्यै नमो स्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमो स्तु रमणीयगुणार्णवायै ।
शक्त्यै नमो स्तु शतपत्रनिकेतानायै
पुष्ट्यै नमो स्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥११॥
नमो स्तु नालीकनिभाननायै
नमो स्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै ।

नमो स्तु सोमामृतसोदरायै
नमो स्तु नारायणवल्लभायै ॥१२॥

सम्पतकराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणाद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥१३॥

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
सेवकस्य कलार्थसम्पदः ।
संतनोति वचनांगमानसंस्त्वां
मुरारिहृदयेश्वरी भजे ॥१४॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगन्धमाल्लशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥१५॥

दिग्धस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट
स्वर्वाहिनी विमलचारुजलप्लुतांगीम ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेषलोकाधिनाथ
गृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥१६॥

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूरतरां गतैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिंचनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥१७॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरभूमिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुगमनमातरं रमाम् ।

गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥१८॥

अब मैं दीपावली के पावन अवसर पर किए जाने वाले कुछ गोपनीय प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूं।

तन्त्र मार्ग में धन प्राप्ति के लिए अनुष्ठान करने का सबसे बड़ा पर्व दीपावली माना गया है। दीपावली के अवसर पर ५ त्यौहार होते हैं—

धनदा त्रयोदशी

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को 'धनतेरस' कहते हैं। इस दिन व्यापारी वर्ग अपना हिसाब किताब बन्द करते हैं और बही-खाता तथा नकदी एकत्र कर उनकी पूजा करते हैं।

नरक चतुर्दशी

नरकासुर को भगवान कृष्ण ने इसी दिन मारा था। इसी से इसे नरक-चतुर्दशी कहते हैं। इस दिन तेल लगाकर अपामार्ग से शरीर को प्रोक्षण कर और उसे चारों ओर घुमा कर स्नान करे। ऐसा करने से साल भर चोरों का भय नहीं रहता। इस दिन यम और भीष्म को वे भी जल-दान देते हैं, जिनके माता-पिता अभी जीवित हैं। सन्ध्या के समय नरक-निवृत्ति के लिए चौमुखा दीपक यम देवता के लिए जलाना चाहिए।

लक्ष्मी साधना

अगर अमावस्या हो, तो लक्ष्मी साधना करनी चाहिए। इसको महारात्रि कहते हैं। रात्रि में कुबेर और माँ लक्ष्मी का पूजन होता है।

सन्ध्या से सारी रात घर प्रकाशित रखकर जागरण करना

चाहिये। दूसरे दिन प्रातः महालक्ष्मी को दीप-दान करे और सफेद वस्त्र पहन कर भोजन करे। इस दिन साधना में श्वेत पुष्प ही काम में लावे। दीपावली पर लक्ष्मी साधना की सरल विधि दी जा रही है—

धनतेरस के दिन तिजौरी पर सिंदूर से स्वास्तिक का चिह्न बनाकर उसे कलावा बांधें। फिर हाथ में पुष्प लेकर कुबेर का आवाहन करे।

आवाहयामि देव ! त्वामिहायाहि कृपा कुरु।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परि-रक्ष सुरेश्वर॥

यह पढ़ते हुए पुष्प तिजौरी पर चढ़ा दे। फिर निम्न प्रकार पूजन करे—

ॐ कुबेराय नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि, शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि, गन्धाक्षतं समर्पयामि, धूपं घ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्य समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि, ताम्बूलं समर्पयामि।

धनाध्यक्षाय देवाय नर-यानोपवेशिने।
नमस्ते राज-राजाय कुबेराय महात्मने॥

अन्त में जल छोड़कर नमस्कार करें—

अनेन पूजनेन कृतेन कुबेरः प्रीयतां न मम।

दीपावली के दिन लक्ष्मी की पूजा करने वाला साधक सन्ध्या के उपरान्त पूजा-स्थल में आसन पर उत्तर की ओर मुख करके बैठे। हाथ में जल और चावल लेकर संकल्प करें। संकल्प के अन्त में निम्न वाक्य जोड़ ले।

परम-विभूति-लाभ-कामः लक्ष्मी-पूजनमहं करिष्ये।

फिर ध्यान करे—

अक्षस्रक्परशू गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां ।
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घंटां सुरा-भाजनं ॥
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभां ।
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महालक्ष्मी सरोज-स्थिताँ ॥

इसके बाद—

ॐ नमस्ते सर्व-देवानां वरदाऽसि हरि-प्रिये ।
या गतिस्त्वत्-प्रपन्नानां सा मे भूयास्त्वदर्चनात् ॥

इस मन्त्र से तीन बार पुष्पांजलियाँ देकर निम्न मन्त्र से प्रणाम करे—

ॐ विश्व-रूपस्य भार्यासि पद्मे पद्मालये शुभे ।
सर्वतः पाहि माँ देवि, महालक्ष्मि, नमोस्तुते ॥

इसके बाद कुबेर आदि का पूजन कर घर में दीपक जलावे—

अग्निज्योतिः रविज्योतिश्चन्द्र-ज्योतिस्तथैव च ।
उत्तमः सर्व-ज्योतीनां दीपोऽयं प्रति-गृह्यताम् ॥

इस प्रकार आप सरल रूप में लक्ष्मी साधना सम्पन्न कर सकते हैं।

प्रस्तुत अध्याय में विविध तन्त्र ग्रन्थों से संकलित करके तांत्रिक प्रयोगों का वर्णन किया गया है। श्रद्धा और विश्वास पूर्वक साधना करने से ये प्रयोग मनोभिलाषा को पूर्ण करते हैं। ऐसा तन्त्र ग्रन्थों में बतलाया गया है। किसी भी तांत्रिक प्रयोग को आरम्भ करने से पूर्व किसी योग्य तांत्रिक से मार्ग-दर्शन अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए। पुस्तकें तो केवल मार्ग दर्शक ही होती हैं।

———

चाहिये। दूसरे दिन प्रातः महालक्ष्मी को दीप-दान करे और सफेद वस्त्र पहन कर भोजन करे। इस दिन साधना में श्वेत पुष्प ही काम में लावे। दीपावली पर लक्ष्मी साधना की सरल विधि दी जा रही है—

धनतेरस के दिन तिजौरी पर सिंदूर से स्वास्तिक का चिह्न बनाकर उसे कलावा बांधें। फिर हाथ में पुष्प लेकर कुबेर का आवाहन करे।

आवाह्यामि देव ! त्वामिहायाहि कृपा कुरु।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परि-रक्ष सुरेश्वर ॥

यह पढ़ते हुए पुष्प तिजौरी पर चढ़ा दे। फिर निम्न प्रकार पूजन करे—

ॐ कुबेराय नमः पादयोः पाद्सं समर्पयामि, शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि, गन्धाक्षतं समर्पयामि, धूपं घ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्य समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि, ताम्बूलं समर्पयामि।

धनाध्यक्षाय देवाय नर-यानोपवेशिने।
नमस्ते राज-राजाय कुबेराय महात्मने ॥

अन्त में जल छोड़कर नमस्कार करें—

अनेन पूजनेन कृतेन कुबेरः प्रीयतां न मम।

दीपावली के दिन लक्ष्मी की पूजा करने वाला साधक सन्ध्या के उपरान्त पूजा-स्थल में आसन पर उत्तर की ओर मुख करके बैठे। हाथ में जल और चावल लेकर संकल्प करें। संकल्प के अन्त में निम्न वाक्य जोड़ ले।

परम-विभूति-लाभ-कामः लक्ष्मी-पूजनमहं करिष्ये।

फिर ध्यान करे—

अक्षस्रक्परशू गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां ।
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घंटां सुरा-भाजनं ।।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभां ।
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महालक्ष्मी सरोज-स्थिताँ ।।

इसके बाद—

ॐ नमस्ते सर्व-देवानां वरदाअसि हरि-प्रिये ।
या गतिस्त्वत्-प्रपन्नानां सा मे भूयास्त्वदर्चनात् ।।

इस मन्त्र से तीन बार पुष्पांजलियाँ देकर निम्न मन्त्र से प्रणाम करे—

ॐ विश्व-रूपस्य भार्यासि पद्मे पद्मालये शुभे ।
सर्वतः पाहि माँ देवि, महालक्ष्मि, नमोस्तुते ।।

इसके बाद कुबेर आदि का पूजन कर घर में दीपक जलावे—

अग्निज्योतिः रविज्योतिश्चन्द्र-ज्योतिस्तथैव च ।
उत्तमः सर्व-ज्योतीनां दीपोऽयं प्रति-गृह्यताम् ।।

इस प्रकार आप सरल रूप में लक्ष्मी साधना सम्पन्न कर सकते हैं ।

प्रस्तुत अध्याय में विविध तन्त्र ग्रन्थों से संकलित करके तांत्रिक प्रयोगों का वर्णन किया गया है । श्रद्धा और विश्वास पूर्वक साधना करने से ये प्रयोग मनोभिलाषा को पूर्ण करते हैं। ऐसा तन्त्र ग्रन्थों में बतलाया गया है । किसी भी तांत्रिक प्रयोग को आरम्भ करने से पूर्व किसी योग्य तांत्रिक से मार्ग-दर्शन अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए । पुस्तकें तो केवल मार्ग दर्शक ही होती हैं ।

———

होली पर विशेष लक्ष्मी साधना

निश्चय ही "होली पर लक्ष्मी साधना" शीर्षक पढ़कर आप आश्चर्य-चकित हुए बिना नहीं रह सकेंगे। वास्तव में दीपावली लक्ष्मी साधना के लिए, होली अभिचार कर्म के लिए, ग्रहण और दशहरा किसी भी साधना में सिद्धि हेतु होते हैं। तन्त्र विज्ञान के अनुसार होली, दीपावली, दशहरा, ग्रहण और अमावस्या यह सभी दिन सभी तांत्रिक कार्यों के लिए खुले हैं। फिर भी इनके अलग-अलग महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता है।

होली हमारा परम्परागत त्यौहार है। वह एक विशेष महत्व रखता है। यह त्यौहार वैदिक संस्कृति और लोक संस्कृति का सुन्दर संगम है। होली का अग्निदाह वैदिक यज्ञ की परम्परा का अनुसरण मात्र ही है। यज्ञ की एक निश्चित परम्परा है। प्राचीन काल में इस त्यौहार को मनाने का ढंग आज से बिल्कुल अलग था। सम्राट हर्ष की रत्नावली में जिस "मदनोत्सव" का वर्णन किया है, होली उसी का परिवर्तित रूप है।

तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र विज्ञान जितना प्राचीन है शायद हमारा होली का त्यौहार भी उतना ही पुराना है। विभिन्न रूप परिवर्तनों के साथ यह त्यौहार विभिन्न प्रांतों में मनाया जाता है। कहीं यह रंगों का पर्व है तो कहीं आनन्द और उल्लास का। लेकिन तांत्रिकों के लिए यह तन्त्र साधना का पर्व है। यह

उत्सव उस समय मनाया जाता है जब ऋतुराज अपने समस्त वैभव के साथ जब धरती पर अवतीर्ण होकर कण-२ को सजीव बना देता है। उस समय समस्त वनस्पति जगत नया जीवन पाकर लहलहा उठता है।

होली के अनेक रूप और पक्ष हैं। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, ताँत्रिक, आर्थिक और राष्ट्रीय इनसे मिलकर बना है होली का पर्व।

होली का अर्थ हम इस प्रकार भी कर सकते हैं। होली अर्थात बीती चिंता न करो तथा आगे के लिए जो भी कर्म करो वह योगयुक्त होकर करो। होली अर्थात हो गई। होली अंग्रेजी भाषा से होली का अर्थ हिन्दी में "पवित्र" है, तो जो भी करना है वह किसी मनोविकार के वशीभूत होकर न हो अर्थात शुद्ध हो। इस प्रकार से हम होली से अनेक शिक्षाएँ ले सकते हैं।

होली शिवरात्रि के बाद फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है। लोग इसे अनेक तरीके से मनाते हैं। वे एक-दूसरे पर रंग डालते हैं होलिका जलाते हैं। मंगल मिलन मनाते हैं जो हमें कहता है कि हम अपने भीतर से ईर्ष्या-द्वेष को मिटा दें, कई लोग श्रीकृष्ण को माध्यम बनाकर होली का पर्व मनाते हैं। इसी पर्व को ताँत्रिक वर्ग नाना प्रकार की साधना करके, उसके द्वारा अनेक प्रकार की अलौकिक सिद्धियाँ और शक्तियाँ प्राप्त करके मनाता है।

ताँत्रिक की यह साधना केवल "बहुजन हिताय: बहुजन सुखाय" के पावन उद्देश्य से प्रेरित होती है। ताँत्रिक वर्ग अपनी साधना के द्वारा सामान्य जन के कष्टों, अभावों को धो डालता है। उनको नई स्फूर्ति नया जीवन देता है।

महाभारत काल से होली के मनाये जाने का वर्णन मिलता है। मुगल बादशाहों के युग में संगीतमय ढंग से होली मनाई जाती थी।

होली के पावन पर्व पर मुझे अपने साथ बीती एक घटना स्मरण हो आई। यह बात आज से लगभग दस वर्ष पुरानी है। मैं तन्त्र साधना पूर्ण कर अलकनन्दा से वापस लौटा ही था। होली के त्यौहार से एक दिन पहले की बात है। सारा इलाका होली के स्वागत में जुटा था। होली के शोख और चटक रंग चारों तरफ बिखरने शुरू हो गए थे।

उस दिन प्रातः की बेला थी। मैं अपनी प्रारम्भिक साधना पूर्ण करके साधना स्थल से निकला ही था' कि एक छोटी कन्या ने घण्टी का बटन दबाया। दरवाजा खोलने पर एक लगभग २५ वर्षीय गौरव वर्ण की नव-युवती को सामने पाया। अभिवादन के बाद मैं उसे साधना कक्ष में ले आया।

उसने बिना किसी औपचारिकता के कहा—मैं होली के अवसर पर भैरवी चक्र पूर्ण करना चाहती हूं। यह सुनकर मैं अवाक् रह गया। मैंने नम्रता पूर्वक मना कर दिया, कारण मैं होली का पर्व और उस पर की जाने वाली साधना केवल अपने लिए ही सुरक्षित रखना चाहता था।

मैं यह नहीं कहता स्त्रियों को तन्त्र साधना नहीं करनी चाहिए अवश्य करें। तन्त्र के पावन क्षेत्र में उनका स्वागत है, पर पहले वह सभी औपचारिकताएँ और आवश्यकताएँ पूर्ण कर लें। इसके बाद ही वह इस ओर अग्रसर हों, तभी उचित रहेगा।

साधना से पहले सामाजिक परिवेश सौहाद्रपूर्ण रहे, वाता-

वरण तनावमुक्त रहे और साधना के प्रति रुचि और निर्भीकता बनी रहे, इसके लिए जरूरी है जल्दबाजी में उठा वह हर कदम विवेकपूर्ण हो, पवित्र भावना से ओत-प्रोत हो। साधना का यही उद्देश्य होता है।

अब तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र विज्ञान के साधकों के लिए एक अति-गोपनीय विशेष लक्ष्मी साधना प्रस्तुत है। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि वह इस दुर्लभ साधना के द्वारा न केवल अपना वरन अपने परिजनों का भी कल्याण करेंगे।

होली के पावन अवसर पर लक्ष्मी साधना के इच्छुक साधक को चाहिए कि वह सबसे पहले अपने समीप होने वाले "होलिका दहन" के दर्शन करके आए। होलिका को सबसे पहले प्रणाम करे उसके पश्चात संकल्प बोलकर अपना उद्देश्य कहे।

संस्कृत में ही संकल्प किया जाता है किसी भी कार्य को करने के लिए जो कहा जाता है उसे "संकल्प" कहते हैं। संकल्प में हम सारा विवरण और किये जाने वाले कार्य का बखान करते हैं जिसमें साधक अपने द्वारा कार्य करने के स्थान का भौगोलिक परिचय देते हुए समय का तिथि, वार, नक्षत्र, चन्द्र, सूर्य आदि की स्थिति बतलाते हुए उल्लेख करता है फिर अपने गोत्र, पिता का नाम, स्वयं का नाम लेकर उस कार्य को वह कहता है जिसके लिए वह अनुष्ठान करता है फिर वह कहता है करूँगा।

पहले संकल्प करे। यथा—

ॐ विष्णुः अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथो अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोअहं अमुक-धनदा-सिद्धि-द्वारा जन्म-वर्ष-मास-लग्न,

दशान्तर्दशा-विदशा - गोचरारिष्ट-वर्ग-सर्वतोभद्र-चक्रादि-प्रमुख ज्योतिश्शास्त्रानुसारेण श्रीमार्तण्डादि-ग्रह-संसूचित-संसूच्यमान संसूचयिष्माण मम इह जन्मार्जित-जन्मान्तरार्द्यजित-कायिक-वाचिक-मानसिक-महा-पातकोप-पातक-निवृत्ति-पूर्वक सर्वा बाधा सकलारिष्ट-निवृत्ति-पूर्वक दीर्घायु-शरीरारोग्य-लक्ष्मी-फल-प्राप्त्यर्थ मार्कण्डेय-पुराणान्तर्गत-सप्तशति-पाठान्तरास्थस्य सर्वा बाधा विनिर्मुक्तोति मन्त्रस्य दश-सहस्त्रान्तर्गत-पश्चात-संख्याक-जपमहं करिष्ये ।

इसके बाद साधक साधना स्थल पर आकर पुनः संकल्प दोहराता है। इसके बाद साधना का शुभारम्भ कर देता है। साधना प्रारम्भ करने से पहले धूप, दीप, अगरबत्ती, जल से भरा लोटा भोग आदि रख लें। अब लक्ष्मी के चित्र के आगे ऊनी आसन पर बैठकर साधना प्रारम्भ करें। सिद्धासन अथवा सुखासन में बैठें। माला कमल गट्टे की ही प्रयोग करें ।

मन्त्र निम्न है—

'ॐ महालक्ष्यै च विद्महे विष्णुपत्नीम्
च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ।'

उपरोक्त मन्त्र की २१ माला जपें। जाप के उपरांत दशांश का हवन भी करें। हवन के अभाव में सफलता संदिग्ध रहती है। अपना सुरक्षा कवच करना न भूलें।

आशा है साधक गण होली के अवसर पर उपरोक्त साधना सम्पन्न करके अपने अनुभव मुझे लिखेंगे ।

———

साधना से पहले

यह सत्य है हम बराबर प्रगति कर रहे हैं, तन्त्र विज्ञान को प्रमाणित करने के लिए हमने बहुत संघर्ष किया है। परम्परा से हमें घुटन महसूस होने लगी थी इसलिए हमने उस का विरोध भी किया और अपने जीवन को नये ढंग से जीने का अधिकार हमने प्राप्त कर ही लिया। हम चाहे कितनी भी स्वतन्त्रता जीने के लिये प्राप्त कर लें, लेकिन वह असीमित कभी नहीं हो सकती है। स्वतन्त्रता के लिए भी आचार संहिता होनी चाहिए।

सामाजिक जीवन में भी हम स्वतन्त्रता की खोज करते हैं, उसे पाने और उपभोग करने के लिए कानून बनाते हैं किन्तु यह नहीं समझ पाते कि हम किस तरह की स्वतन्त्रता चाहते हैं? जाति का इतिहास होता है किन्तु उससे बड़ा इतिहास होता है समाज का।

मेरा उद्देश्य यहाँ आपको स्वतन्त्रता का अर्थ या फिर स्वतन्त्रता कैसे प्राप्त की जाए समझाना नहीं है। वास्तव में तन्त्र स्वतन्त्रता का दूसरा नाम है। साधक जब संसार के बन्धनों, माया, मोह, लोभ, काम, क्रोध से स्वतन्त्र हो जाता है, तब वह तन्त्र में सिद्धि को प्राप्त कर लेता है। तांत्रिक बनना सम्भव है क्योंकि साधना की शक्ति तो हम में विद्यमान है ही, हमें अपने आपको शक्ति के अवतरण के लिए तैयार

करना है। यह शक्ति किस तरह प्रकट हो, विधि किस तरह प्राप्त हो कि हम सिद्धि तक पहुंच जाएँ।

प्रश्नों का समाधान तन्त्र विज्ञान ने अनेक प्रकार से किया है। मन्त्रों का वर्गीकरण व्यवस्थित और वैज्ञानिक ढंग से किया है। तन्त्र विज्ञान के अनुसार जिन कामों के लिए हमें दूसरे की अपेक्षा नहीं होती, केवल हमारे तक ही जो सीमित हैं जैसे लक्ष्मी प्राप्ति के अनुष्ठान रोग मुक्त होने के प्रयोग अथवा मारकेश जैसी ग्रह बाधा और भूत बाधा।

समाज केन्द्रित प्रयोगों में—मारण मोहन, उच्चाटन स्तम्भन, विद्वेषण जैसे कर्म आते हैं और सन्तान प्राप्ति या गड़े धन की प्राप्ति जैसे कार्य इन दोनों प्रकार के प्रयोगों के मध्यवर्ती रहते हैं। मन्त्र जपने पर एक भौतिक क्रिया होती है।

हमारी असफलता के अनेक कारणों में मन्त्र जपने के समय होने वाली सूक्ष्म एवं जटिल प्रक्रिया को समझ लेने से हम अच्छी तरह निदान कर सकेंगे। शक्ति हमारे में है उसे सही दिशा में कार्य करने के लिए ही हम मन्त्रों का अनुष्ठान करते हैं। किसी भी कार्य को सम्पन्न करने के लिए उससे सम्बन्धित सावधानियाँ और शुद्धियाँ जान लेना आवश्यक होता है। मन्त्र कोई जड़ प्रक्रिया नहीं है, वह पूर्ण रूप से चेतन है। इस प्रसंग से सम्बन्धित एक घटना सुना रहा हूं।

एक बार बाबा कीनाराम और कालूराम एक साथ गंगा किनारे घूम रहे थे। कालूराम ने गंगा में बहती किसी वस्तु की ओर संकेत करते हुए कहा बाबा देखो कोई मृतक बहता आ रहा है। बाबा ने तुरन्त उत्तर दिया—"यह मृतक नहीं जीवित है।" इस पर कालूराम ने उस तथाकथित मतक के जीवित

बुलाने का अनुरोध किया। बाबा ने दूर से आवाज दी इधर आओ। आश्चर्य कि मृतक शरीर में प्राणों का संचार हो गया और वह मृतक उठकर खड़ा हो गया। बाबा ने पुनः उसे घर जाने का आदेश दिया तो वह अपने घर की ओर पग बढ़ाने लगा। मृतक से जीवित होने के इस चमत्कार का श्रेय बाबा की कठोर मंत्र साधना को ही है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि मन्त्र जैसे माध्यम से हम साधना करना चाहें तो पहले उसके सम्बन्ध से ज्ञातव्य बातें पूरी तरह से जान लें। खास कर उस स्थिति में जब कि हमारे लक्ष्य भौतिक हों। इससे अधिक सुगम यह रहेगा कि हम किसी योग्य ताँत्रिक से समझ लें। अब मैं पृथ्वी से गढ़ा धन प्राप्त करने और मन्त्र साधना में निश्चित सफलता हेतु कुछ महत्वपूर्ण एवं गोपनीय बातें प्रस्तुत करूँगा। इनको प्रयोग में लाने से जहाँ आपको निश्चित सफलता प्राप्त होगी वहाँ अहित से भी बच जायेंगे। सबसे पहले कुलाकुल चक्र प्रस्तुत है।

वायु	अग्नि	भूमि	जल	आकाश
अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	लृ लॄ
ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	क्ष	ल	स	ह

चक्र के ऊपर कोष्ठक में लिखित वायु-अग्नि-भूमि-जल और आकाश ये पंचभूत कहलाते हैं। मन्त्र ग्रहण करने वाले व्यक्ति के नाम का पहला अक्षर और मन्त्र का पहला अक्षर अगर एक भूत अथवा एक देवता का हो तो उसे स्वकुल मानना चाहिए। स्वकुल मन्त्र ही ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि वह साधक के लिए हितकारी होता है। अगर मन्त्र ग्रहण करने वाले के नाम का पहला अक्षर और मन्त्र का पहला अक्षर एक भूत अथवा एक देवता का न हो तो तब उन दोनों अक्षरों की परस्पर में मित्रता होने पर भी वह मन्त्र ग्रहण किया जा सकता है। दोनों अक्षरों की शत्रुता होने पर वह मंत्र किसी भी हालत में ग्रहण न करे। शास्त्रों में कहा गया है।

"भौमस्य वारुणं मित्रं आग्नेयस्याऽपि मारुतम्।
मारुतं पार्थिवानाञ्च आग्नेयञ्चाम्भसां रिपुः॥

पार्थिवानाञ्चेति चकारात् आग्नेयं पार्थिवानां रिपुः।
नाभसं सर्वमित्रं स्याद्विरुद्धं नैव शीलयेत्॥"

इस बात को निम्न चक्र के द्वारा भी समझा जा सकता है। अब मैं ज्योतिष शास्त्र के अनुसार वर्णित बारह राशियों के विषय में बतला रहा हूं।

साधक को अपनी जन्मराशि के नाम के शुरू के अक्षर से मन्त्र के प्रारम्भिक अक्षर की राशि तक चक्र में बाईं ओर को गणना करनी चाहिए अगर अपने नाम के शुरू के अक्षर से मंत्र का प्रारम्भिक अक्षर चतुर्थ, अष्टम या द्वादश हो तो मंत्र को घातक समझना चाहिए। एक पंचम और नवम राशिगत होने से मन्त्र शुभ होता है। द्वितीय षष्ठ और दशम राशिगत मन्त्र सेवक की भाँति कार्य सिद्धिकर होता है। तृतीय, सप्तम

और एकादश राशिगत मन्त्र गृहीता का संरक्षक होता है। चतुर्थ राशिगत मन्त्र केवल विष्णु मन्त्र ग्रहण करने में हानिकारक है और षष्ठ राशिगत मन्त्र ग्रहण करने में त्याज्य है।

मन्त्र ग्रहण करने वाले साधक का जन्म नक्षत्र और मन्त्र का प्रारम्भिक अक्षर जिस कोष्ठक में हो वही उसका नक्षत्र है। इन दोनों को लेकर गणना की जाती है। प्रत्येक कोष्ठक में नक्षत्र के नाम के नीचे नक्षत्र के अक्षर और अक्षरों के नीचे नक्षत्र का गण दिया गया है। अगर मन्त्र ग्रहण करने वाले साधक के जन्म नक्षत्र का गण और मंत्र के प्रारम्भिक अक्षर के नक्षत्र का गण एक ही हो तो उस मन्त्र को ग्रहण करने वाला अच्छा रहता है। इसके अतिरिक्त अगर मन्त्र ग्रहण करने वाले साधक का गण मनुष्य हो तो वह देव-गण वाले मन्त्र को भी ग्रहण कर सकता है, किन्तु मनुष्य गण और राक्षस गण में, तथा राक्षस गण और देव-गण में शत्रुता है, अतएव ऐसा मन्त्र ग्रहण नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त साधक में निम्न अवगुण भी नहीं होने चाहिये।

अधिकाँश—किसी भी अंग की अधिकता से युक्त।

हीनांग—जिसका अंग नष्ट हो, एक आँख वाला, एक हाथ या एक पैर वाला।

श्वेतवर्णी—श्वेत-कुष्ठ से ग्रस्त।

दीर्घ-भोजी—अधिक भोजन करने वाला।

रोगी—रुग्ण शरीर वाले साधक का मन भी अवश्य ही रुग्ण होता है।

कपटाचारी—छल-छद्म और पाखण्ड वाला।

विकृतांग—पंगु, लूले-लंगड़े, अन्धे अथवा छिन्नांग।

इस चक्र के अनुसार मन्त्र ग्रहण करने वाले के नाम के प्रारम्भिक अक्षर से आरम्भ करके मन्त्र के अक्षर पर्यन्त सिद्ध,

राशि चक्र

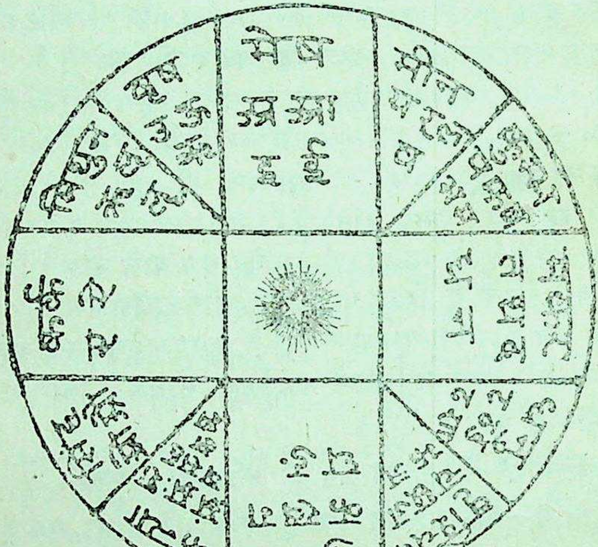

साध्य, सुसिद्ध और अरि इस रूप से गणना करे। अगर एक ही कोष्ठ में मन्त्र लेने वाले का नाम और मन्त्र का अक्षर हो तो भी उसी प्रकार गणना करे। उपरोक्त चक्र में दक्षिण की ओर से वर्ण विन्यास और गणना करनी चाहिये।

उपरोक्त चक्र की गणना विधि इस प्रकार है कि साधक के नाम के अक्षर से मन्त्र के आदि अक्षर पर्यन्त दक्षिणावर्त

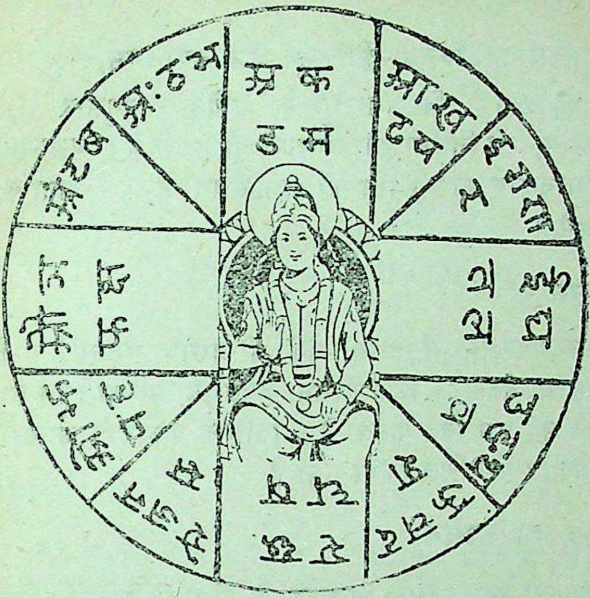

से "सिद्ध साध्य, सुसिद्ध और अरि"—इस प्रकार गणना करे। इसके सम्बन्ध में लिखा है कि—

"नवैक पञ्चमे सिद्धः साध्यः षडदशयुग्मके।
सुसिद्धस्त्रि सप्तके रुद्रे वेदाष्ट द्वादशे रिपुः।"

स्थान :

साधना करने के लिए तन्त्रविज्ञों ने स्थान का भी निर्देश दिया है। वे इस प्रकार संकेत करते हैं—

शुभ स्थान :

गो-शाला, उपवन, पर्वत, गुफा, तीर्थ, नदी, तट, गुरु का निवास, मन्दिर, वन।

निषिद्ध स्थान :

कन्या-गृह, विरजा-तीर्थ, सूर्य-क्षेत्र, गया-धाम, भट्ट-ग्राम।

यह सत्य है कि अगर गुरु के आदेश के अनुसार साधना की जाये, तो निषेधों की समाप्ति हो जाती है। यथा-सम्भव नियमानुसार काल स्थान को ही वरीयता देकर साधना करनी चाहिये।

आसन :

मन्त्र-साधना में आसन का भी प्रभाव पड़ता है। जिस आसन पर बैठकर साधक साधना करता है, उसका स्पर्श साधक के मन को प्रभावित करता है। विभिन्न प्रकार के आसनों को इस प्रकार विवेचित किया गया है—

काष्ठ का आसन :

लकड़ी का आसन साधना के लिए निषिद्ध है। इसका प्रभाव साधक को दुर्घटना-ग्रस्त कर सकता है।

भू-आसन :

भूमि पर बैठकर साधना नहीं करनी चाहिये। जमीन का सम्पर्क क्लेश देता है।

पत्तों का आसन :

साधना में पत्तों से बना आसन प्रयोग करने में साधक की एकाग्रता भंग हो जाती है। ऐसा आसन साधक को उचाट करता है।

तृणासन :

तिनकों से बना हुआ आसन भी वर्जित है। इसका प्रयोग यश का नाश करता है।

शिलासन :

शिला का आसन के रूप में प्रयुक्त करना उचित नहीं है। पत्थर का आसन साधक को रोग और पीड़ा देता है।

बांस :

ये आसन भी रोग और अशान्ति देने के कारण वर्जित मानें जाते हैं।

मृगचर्म :

यह आसन श्रेष्ठ है। इस पर साधना करने से सिद्धि की प्राप्ति होती है।

व्याघ्र चर्म :

सिंह-चर्म का आसन भौतिक और पारलौकिक सिद्धियाँ देता है।

बेत्रासन :

बेंत का आसन साधक को शान्ति देता है।

कम्बल :

ऊन से बना आसन लाभप्रद कहा गया है। यह साधक को शान्ति प्रदान करता है।

कुशासन :

तन्त्र साधकों के मध्य यह आसन प्रचलित है। सहज-सुलभ होता है। यह आसन शाप, भूत-प्रेत बाधा अशान्ति को नष्ट करके साधक में सात्विक-भावनाओं का उद्भव करता है। फिर भी साधना में अगर किसी विशेष आसन का निर्देश हो, तब उसी के अनुसार आसन की व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

कार्य आरम्भ का समय :

जिस प्रकार साधना में मुहुर्त का विशेष महत्व होता है, उसी प्रकार धन निकालने के लिए भी अनुकूल समय को वरीयता देना अति आवश्यक है। अशुभ अथवा प्रतिकूल अवसर पर प्रारम्भ किया गया कार्य—न केवल अधूरा रहता है, बल्कि उसमें अनेक प्रकार के विघ्न भी उत्पन्न होने की आशंका रहती है।

तांत्रिकों ने इस उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए, कार्य आरम्भ करने के लिए इस प्रकार निर्देश दिए हैं—

धन लाभ के लिए—वैशाख-मास रविवार।

स्वास्थ्य, रोग-मुक्ति हेतु—श्रावण, मंगलवार।

शत्रु-मुक्ति के लिए—ज्येष्ठ, मंगलवार।

सन्तान एवं वैभव-प्राप्ति हेतु—क्वार, कार्तिक, अगहन, गुरुवार।

शिक्षा, प्रतियोगिता में सफलता हेतु—माघ, फाल्गुन, चैत्र, बुधवार व गुरुवार शुभ रहते हैं।

वशीकरण हेतु—मोहन या वशीकरण के लिए, शनिवार

या सप्तमी, आकर्षण के लिए, तीज या तेरस, मोहने के लिए, अष्टमी या नवमी।

उच्चाटन के लिए—बुधवार, दूज अथवा छठ।

अभिचार-कर्म—मंगलवार, पंचमी, पूर्णिमा।

मारण प्रयोग हेतु—रविवार, एकादशी, द्वादशी शुभ रहते हैं।

अब जंगल से जड़ी-बूटी अथवा पौधा लाने के लिए विधान प्रस्तुत कर रहा हूं।

विधि

सन्ध्या के समय पौधे का पूजन गन्ध, चावल, गुड़, पान, सुपारी आदि से करके निमन्त्रण दें कि कल प्रातःकाल मैं आपके पास आऊँगा। आपको मेरे साथ कार्य की सिद्धि के लिये मेरे साथ चलना होगा।

अगले दिन पौधे के समीप जावे और उसकी पूजा करें।

"प्राग् दत्वार्घ्यं ततोभ्यर्च्य गन्धपुष्पाक्षतादिना।
स्तुत्वा भगवतीं ताञ्च प्रणमेत् प्रार्थ्यं दण्डवत् ॥"

पहले अर्घ्य देकर गन्ध, फूल और चावलों द्वारा पूजा करे फिर साष्टांग प्रणाम करके प्रार्थना करें। इसके बाद अर्घ्य मंत्र बोले—

अर्घ्य मन्त्र

"श्रीय: श्रिये श्रियावासे नित्यं श्रीधर-सत्कृते।
भक्त्या दत्तं मया देवि ! अर्घ्यं गृह्ण नमोऽस्तु ते ॥"

फिर पूजा मन्त्र का उच्चारण करें।

पूजा मन्त्र

"निर्म्मिता त्वं पुरा देवैरर्च्चिता त्वं सुरासुरैः ।
तुलसि ! हर मे पापं पूजां गृह्ण नमोऽस्तु ते ।"

अब आप श्रद्धापूर्वक स्तुति करें ।

स्तुति

"महाप्रसादजननी सर्वसौभाग्यवर्द्धिनी ।
आधिव्याधिहरी नित्यं तुलसि त्वं नमोऽस्तु ते ।।"

स्तुति के उपरांत प्रार्थना करें ।

"नमस्ते मृत सम्भूते, बलवीर्यं विवर्धिनी ।
बलमायुश्च मे देहि पाशान् मा त्राहि दूरव ।।"

प्रार्थना

"श्रियं देहि यशो देहि कीर्त्तिमायुस्तथा सुखम् ।
बलं पुष्टिं तथा धर्मं तुलसी त्वं प्रसीद मे ।।"

प्रणाम

"या दृष्टा मिखिलाघसंघशमनी स्पृष्टा वपुःपावनी ।
रोगाणामभिवन्दिता निरसनी सिक्तान्तकत्रासिनी ।।

प्रत्यासत्ति विधायिनी भगवतः कृष्णस्य संरोपिता ।
न्यस्ता तच्चरणे विमुक्तिफलदा तस्यै तुलस्यै नमः ।।

भगवत्यास्तुलस्यास्तु माहात्म्यामृत सागरे ।
लोभात् कूर्द्दितुमिच्छामि क्षुद्रस्तत् क्षम्यतां त्वया ।।"

(नवम बिलास—श्री हरि भक्ति बिलास)

इसके पश्चात् चार परिक्रमा करें।

"अथ मूलिका ग्रहण विधि (कामरत्ने)
विधि मन्त्र समायुक्तमौषधं सफलं भवेत्।
विधि मन्त्र विहीनंतु काष्ठवद्भेषजं भवेत्।।"

विधि पूर्वक मन्त्र द्वारा ग्रहण की हुई जड़ी-बूटी सदैव सफल होती है और मन्त्र के बिना प्राप्त की हुई जड़ केवल सामान्य लकड़ी के समान होती हैं।

"एकान्ते तु शुभारण्ये तिष्ठत्येव यदौषधम्।
कार्यसिद्धिर्भवेत्तेन वीर्यमस्ति च तत्र वै।।"

जो औषधि अच्छे वन में उत्पन्न होती है उसी से कार्य सिद्ध होता है।

"वल्मीक कूप रथ्या तरुतल देवालय श्मशानेष।
जाता विधिनाविहिता औषधयः सिद्धिदानस्य।।"

बॉबी, कुआँ, मार्ग, वृक्ष के नीचे, मन्दिर और श्मशान में उत्पन्न हुई जड़ी-बूटी विधि पूर्वक प्राप्त करने के बाद भी सिद्धि दायक नहीं होती हैं।

जलजीर्णमग्निकबलितमकाल
जातं कृमिक्षत शरीरम्।
न्यन्तथाधिकं वा
द्रव्यमद्रव्यञ्जगुभिषजः।।"

पानी से गली हुई, अग्नि से जली हुई, अकाल में उत्पन्न हुई और कीड़ों द्वारा खाई हुई, बहुत थोड़ी तथा अधिक औषधि मूल्यवान होने पर भी न होने के समान है। इन दोषों से युक्त औषधि बेकार ही जाती है।

"भूतादिमुक्तमभ्यर्च्यगिरीशं प्रातरुत्थितैः ।
श्राद्धैरुपासितैर्वापि संग्राह्यं सर्वमौषधम् ॥"

प्रातः उठकर भगवान शिव का पूजन कर श्रद्धा और विश्वास सहित औषधियों को ग्रहण करना चाहिये।

"इत्येवं सर्वमूलानां विधिर्मन्त्रश्च कथ्यते ।
आदौ वृक्षस्य मूलञ्च गत्वा तमभिमंत्रयेत् ॥"

सबसे पहले वृक्ष के नीचे जाकर उसको अभिमन्त्रित करें। मन्त्र इस प्रकार है—

"ॐ वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः ।
अपसर्पन्तुते सर्वेवृक्षादस्माच्छिवाज्ञया ॥"

भावार्थ—हे बेताल, पिशाच, राक्षस और साँप आदि सब शिवजी की आज्ञा से इस वृक्ष से दूर हो। इतना कहकर वहाँ पर जल छिड़कना चाहिए।

खननोद्योगे अर्चन मन्त्र

वराहम्। ॐ हूम ॐ।

(निधि प्रदीपे)

इस मन्त्र के द्वारा वृक्ष की पूजा करे—

ॐ नमस्तुऽमृत समभूते बलवीर्य विवर्द्धिनि ।
बलमायुश्च मे देहि पापान्मे त्राहि दूरतः ॥"

नमस्कार के लिए उपरोक्त मन्त्र पढ़ें—

औषध ग्रहण काले औषधि प्रतिष्ठा मन्त्रः

येन त्वां विदधे ब्रह्मा येनेन्द्रो दैवतैः सह ।
तेन त्वा मा हरिष्यामि तिष्ठ तिष्ठ महौषधे ॥"

(निधि प्रदीपे)

येन त्वां खनते ब्रह्मा येन त्वां खनते भृगुः ।
येनहीन्द्रोथ वरुणो येन त्वामपचक्रमे ।।

तेनाहं खनयिष्यामि मन्त्र पूतेन पाणिना ।
मापाते मा निपतिते माते तेजोन्यथा भवेत् ।।

अत्रैव तिष्ठ कल्याणि ! ममकार्य करीभव ।
मम कार्येकृते सिद्धि ततस्स्वर्गं गमिष्यसि ।।

खन्य कारणाभि मन्त्रः

ॐ ह्री चण्डे हुं फट् स्वाहा ।
ॐ नमो भगवते रुद्राय दुन्दुभिषः ।।
(निधि प्रदीपे)

ॐ वनदण्डे महादण्डाय स्वाहा ।
(कामरत्ने)

उपरोक्त सभी मन्त्र पढ़कर पूरब की ओर मुख करके उत्तर दिशा की ओर से खैर की लकड़ी से जड़ को खोदें। यह स्मरण रखें खोदने के लिए लोहे के औजार का प्रयोग निषेध है। इसके बाद "ॐ वनदण्डे महादण्डाय स्वाहा ।" इस मन्त्र को बोलते हुए जड़ को उखाड़ लें।

उक्त मन्त्र से ही वृक्ष का मूल ग्रहण करे।

हवन :

मन्त्र-विद्या के अन्तर्गत कुछ ऐसी साधनाएँ हैं, जिनके समापन में पूर्ण फल की प्राप्ति हेतु कुछ जड़ी-बूटियों के द्वारा हवन का विधान बतलाया गया है। मन्त्र-साधना में यह नियम अनिवार्य है। साधक को चाहिए कि जिस साधना का जैसा

विधान हो, उसको उसी प्रकार सम्पन्न करे। हवन एक वैज्ञानिक-प्रक्रिया है। हवन साधक के मनोरथों को पूर्ण करने में सहायक है। शान्ति और पुष्टि-कर्म-सम्बन्धी जप-साधना के उपरांत किये जाने वाले हवन में पीपल के पत्ते, घी, गिलोय, गूलर या आम की लकड़ी का प्रयोग करना चाहिए।

आकर्षण एवं वशीकरण कार्यों के लिए चमेली के फूल, बेल-पत्र और नमक का प्रयोग होता है।

उच्चाटन—कर्म में बिनौले को प्रयुक्त करने का विधान है।

मारण—कर्म में धतूरे के बीजों का निर्देश है।

अर्थ-प्राप्ति, लक्ष्मी-साधना सम्बन्धी हवन में सूखे बेलपत्र, घी तथा तिल की आहुति दी जाती है।

इस प्रकार पूर्ण संयम, विधि-विधान और आस्था के साथ की गई साधना ही सफल होती है। यहाँ यह बात उल्लेखनीय है पथ्वी में गढ़ा धन प्राप्त करने के लिए आप अर्थ प्राप्ति, लक्ष्मी से सम्बन्धित उपाय ही प्रयोग में लाएँ।

वास्तव में तनावों की अपनी दुनिया है या फिर इस दुनिया के अपने तनाव हैं बात लगभग एक ही है। मनुष्य अपने बनाये जाल में कैद होता जा रहा है। यह कारागार भी उसने स्वयं बनाये हैं। प्रश्न यह है तनाव कब और क्यों उत्पन्न होते हैं ? इसका सीधा और सच्चा उत्तर यह है—मनुष्य जब न मिलने वाली वस्तु की इच्छा करता है या फिर स्वप्नों के संसार में ही भटकता रहता है। तब वह धोखे के क्षेत्र में आ जाता है, और तनाव स्वयं उसे घेर लेते हैं।

तनावों से मुक्त होने का मार्ग बाद में ढूंढेंगे पहले यह तो देख लें कि आखिर ये तनाव हैं क्यों ?

हमारा मन जिस स्थिति में रहता है वह बहुत जटिल है। मन वाह्य और आन्तरिक, भौतिक और आत्मिक दोनों ही के केन्द्र में है। हमारी स्थूल देह, शक्तिमय देह और मनोमय देह में इसके जो क्रिया कलाप हैं वे अन्तःकरण में—जिसमें मन, बुद्धि और चेतना आती है—भिन्न प्रकाश के हो जाते हैं इनमें मन अंतिम है। वास्तव में हमें मन को पहचानने की आवश्यकता है। जिससे उसको अनुकूल बनाया जा सके। इसके बिना हम तनावों से दूर नहीं हो सकते। "जैसा खावे अन्न वैसा मन"।

हमारे वैद्युतिक शरीर को प्रभावित करने में ग्रहान्तरों से आ रही तरंगें भी एक कारण हैं। ये तरंगें मन की वृत्तियों को प्रेरित करती हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो हमारे शरीर में बायलाजिकल फिजिकल और केमिकल क्रिया कलाप निरंतर चलते रहते हैं। इसका ज्ञान होना परम आवश्यक है।

ज्ञान एक समग्र स्थिति है। हम लोग उसे क्रमशः रूप में प्राप्त करने में लग जाते हैं क्योंकि हमारे ज्ञानार्जन करने के केन्द्र कीसीमा है हमारे में स्थित अहं भाव हमें सबसे अलग करता है। अहं का अर्थ होता है मैं, और यह मैं हमारे लिए कष्ट कर होता है। अहंकार में बदल जाता है। अहं के कारण व्यक्ति अपनी सीमा से अधिक बढ़ जाता है और इस कारण वह अपने ही बने जाल में फंस जाता है। वह तनाव ग्रस्त हो जाता है।

यह हमारे जीवन का यथार्थ है जिससे हम सब परिचित हैं। प्रिय पाठकों ! यहाँ मेरा उद्देश्य तनाव और उसके कारण बतलाना नहीं है। पृथ्वी से गढ़ा धन प्राप्त करने का उद्देश्य

भी तनाव का कारण बन सकता है। आप इस तनाव को सहज होकर दूर करें। आप यह सोचें धन प्राप्त होगा या नहीं होगा यह सोचकर हम तनाव ग्रस्त क्यों हों? प्रयत्न करना हमारे अधिकार में है वह हम कर रहे हैं। आप यह सोचकर तनाव से मुक्त हो जायें। ऐसा करने से जहाँ आप सहज होंगे, वहाँ धन प्राप्ति की संभावनाऐं भी प्रबल होंगी। इससे पहले कि मैं आगे बढ़ूं आपके समक्ष 'अलौकिक छड़ी' का एक प्रयोग प्रस्तुत है।

अलौकिक छड़ी बनाने के लिए सबसे पहले किसी वृक्ष की ऐसी लचीली शाखा काटी जाती है जो आगे चलकर दो भागों में विभाजित हो जाती हो। इसका आकार वाई जैसा हो जाता हो। यह छड़ डेढ़ गज लम्बी रखी जाती है। इसके आगे के दोनों सिरे एक फुट लम्बे रखे जाते हैं। अलौकिक छड़ बनाने हेतु पतली हल्की चिकनी लकड़ी प्रयोग में लाई जाती है। पूरी छड़ की लम्बाई लगभग ढाई फुट रखी जाती है। दैवी छड़ी का प्रयोग करने वाला व्यक्ति छड़ के दोनों छोटे सिरे एक-एक हाथ की मुट्ठी में इस प्रकार पकड़ लेता है कि उंगलियों के छोर उसके शरीर की ओर रहते हैं और छड़ का लम्बा हिस्सा शरीर के आगे सामने की ओर झुका हुआ रहता है।

खोज करते समय जिस जगह छड़ अपने आप स्वयं ही नीचे की ओर झुकने लगती थी उसी जगह खुदाई शुरू कर दी जाती थी। खोजियों की सहायता से इस छड़ी के द्वारा कई जगहों पर गड़े धन तथा मूल्यवान धातुओं की खानों का पता लगाया गया था। छड़ी का प्रयोग इस अलौकिक खानों और भूगर्भ में छिपे खजानों की खोज हेतु करते हैं। धन का पता लगाने के

साथ-साथ खोये हुए व्यक्तियों तक का पता लगाया जाने लगा। कुछ ही दिनों में यह प्रचलित हो गयी।

अलौकिक छड़ धारी व्यक्ति हर वस्तु का पता लगा सकता है, शर्त केवल इतनी है वह वस्तु जमीन के भीतर होनी चाहिए। अलौकिक छड़ बनाने के लिए पीपल के वृक्ष की लकड़ी अधिक कारगर सिद्ध होगी। लेकिन यह जरूरी नहीं है किसी भी वृक्ष की डाल ली जा सकती है। लेकिन उसमें लचक होना अनिवार्य है। नीचे अलौकिक छड़ का चित्र प्रस्तुत है।

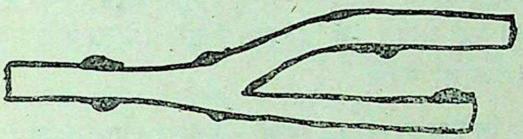

कुछ तांत्रिकों का मत है कि प्रयोग में लाने के पूर्व ही छड़ी को अभिमंत्रित कर लेना चाहिये। इससे इसकी शक्ति बढ़ जाती है। मेरे विचार में छड़ी का तो अपना स्वयं का प्रभाव होता है। फिर भी मन की एकाग्रता, संकल्प की शक्ति, विश्वास और श्रद्धा की आवश्यकता तो प्रतीत होती ही है।

अब मैं पाठकों के हितार्थ सिद्ध श्री कण्ठ शम्भू द्वारा विरचित मंत्र और उनका भावार्थ अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार प्रस्तुत करूंगा। मैं बहुत ज्ञानी नहीं हूँ, इसलिए पहले क्षमा प्रार्थना कर लेना अपना दायित्व समझता हूँ। कोई त्रुटि रहने पर विद्वजन क्षमा करेंगे।

———

निधिप्रदीप

प्रस्तुत अध्याय विद्वान श्रेष्ठ नीलकंठ शंभु द्वारा रचित संस्कृत ग्रंथ का अविकल हिन्दी अनुवाद है। इसमें प्राप्ति का तांत्रिक पर विज्ञान सम्मत विवेचन दिया गया है। पृथ्वी को रत्नगर्भा कहा गया है। पृथ्वी में लुप्त इसी सम्पत्ति को प्राप्त करने का विधान इस अध्याय में प्रस्तुत है।

इस जनोपयोगी ग्रंथ का शब्दशः अनुवाद करने में वाक्य विन्यास कुछ गड़बड़ कर सकता है। इस कारण वाक्य रचना की दृष्टि से शब्दशः अनुवाद न कर मूल तथ्य रखा गया है। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है इस धृष्टता के लिए संस्कृत के विद्वान क्षमा करेंगे ?

मूल श्लोकों द्वारा यह हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है। पाठक इसका भरपूर लाभ उठायें।

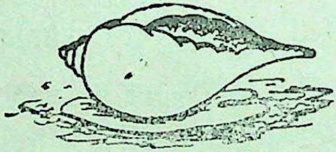

निधि प्रदीप

(प्रथमः परिच्छेदः)

मङ्गलाचरण

निधिप्रदीपनामायं सिद्ध श्रीकण्ठशम्भुना।
क्रियते सारमादाय सिद्धानां हितकारणम् ॥ १ ॥

मैं नीलकण्ठ शम्भु विद्वानों के ज्ञान और अनुभव के आधार पर लोक हितकारी ग्रंथ 'निधि प्रदीप' की रचना करता हूँ।

ग्रन्थैश्चतुष्परिच्छेदैः पद्यैरानुष्टुभैरिह।
शतानि पञ्च पद्यानि विना मन्त्रपदैर्बुधः ॥ २ ॥

यह महान ग्रंथ चार परिच्छेदों में मंत्र विहीन पदों सहित पाँच सौ पद्यों का है।

दारिद्रयानलतप्तानामगतीनां शरीरिणाम्।
यायावरा महात्मान ऋषयो वेदपारगाः ॥ ३ ॥

गति हीन मनुष्यों में वेद के पारगामी तथा सदैव भ्रमण करने वाले ऋषि एवं महात्मा गण निर्धनता से पीड़ित मानव को कल्याण देने के लिए एकत्रित हुए हैं।

अग्निष्टोमादिकान यष्टुं कर्मयज्ञा यथेसिप्तम्।
समेत्य नैमिषारण्यं मन्त्रयामा सुरादृताः। ४।

वह सब देवताओं के द्वारा आदरणीय थे और इच्छानुसार

अग्निष्टोमदि कर्मयज्ञों को करने के लिए नैमिषारण्य में इकट्ठे होकर विचार विमर्श करने लगे !

यष्टव्याः कथमस्माभिः क्रतवो निर्धनैरिव ।
उपायः को भवेदत्र येन स्मो धनिनो वयम् । ५ ।

निर्धनों के समान हम सब किस प्रकार अपना यज्ञादि कार्य कर सकते हैं ! ऐसा कौन सा उपाय है कि जिसके द्वारा हम धनवान हो सकते हैं ।

देवतानां ऋषीणां च ऋणमेतद् भविष्यति ।
इत्येवं चिन्तितानां च ऋषीणां भगवान् हरः । ६ ।

यदि हम यज्ञादि कार्य न करेंगे, तो देवताओं का कर्ज हम पर हो जाएगा । ऋषि मुनियों का धर्म उचित हो जायेगा । इस कारण धनाभाव का अनुभव कर सभी महात्मागण चिन्तित हो गये ।

आजगाम महायोगी ऋषीणाँ धर्महेतुकम् ।
ऋषय ऊचुः-देवदेव ! महादेव ! नीलग्रीव ! महेश्वर । ७ ।

ठीक उसी समय भगवान शंकर मुनियों के धर्म कार्य से प्रसन्न होकर वहाँ आये । उनको सामने देखकर सभी ऋषि मुनि हर्षित होकर उनकी जय जयकार करने लगे ।

केनोपायेन मुच्यन्ते ब्राह्मणाः क्लेशसागरात् ।
दारिद्रयंस्यैव हान्यै यत् तद् वाक्यं वक्तुमर्हसि । ८ ।

उन्होंने भगवान शंकर से निवेदन किया कि हे महेश्वर, किस प्रकार के उपाय से ब्राह्मण गण निर्धनता से मुक्ति प्राप्त कर सकते है, उसे कृपा कर कहिए ।

शम्भु उवाच

तदिदानीं प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनिपुंगवाः ! ।
निधिशास्त्रमिदं गुह्य त्रिदशैरपि दुर्लभम् । ६ ।

इस पर भगवान शंकर बोले, "मुनिवरों ! मैं अत्यन्त गोपनीय शास्त्र 'निधि शास्त्र' जिसका ज्ञान देवताओं को भी नहीं है, उसको बतलाऊंगा आप लोग ध्यान पूर्वक सुनें ।

प्रवक्ष्यामि मुनिश्रेष्ठा ! दारिद्रयार्णवतारणम् ।
यत् कृत्वा तु नरः कश्चिद् दरिद्रयान्मुच्यते तथा । १० ।

हे मुनिवरों ! दरिद्रता रूपी सागर पार करने के उपाय बतलाता हूँ इनको करने से कोई भी व्यक्ति दरिद्रता से मुक्ति पा सकता है ।

पञ्चपातकयुक्तोऽपि कुबेरसदृशो भवेत् ।
सहायलक्षणं वक्ष्ये निमित्तं च शुभाशुभम् । ११ ।

पाँच पापों को करने वाला मानव भी इसके द्वारा सम्पन्न हो सकता है । वह कुबेर बन सकता है । अब मैं इसमें सहयोगी शुभ-अशुभ लक्षणों को बतलाता हूँ ।

तिथिनक्षत्रवाराणां मुहूर्तनियमं तथा ।
जलस्थल दिविष्ठानां निधीनां च विभेदतः । १२ ।

स्थानेषु च निधिनानां परीक्षां च यथाक्रमम् ।
परीक्षा दहुधा वृक्षलतागुल्मादिभेदतः । १३ ।

तारीख, नक्षत्र और वारों के नक्षत्र संबन्धी नियम जल थल आकाश में रखी सम्पत्ति और उसके भेद अनेकानेक स्थानों पर दबाकर रखी गयी सम्पत्ति की परीक्षा और क्रमानुसार

वृक्ष लता, गुल्म आदि स्थानों के भेद व लक्षण कई प्रकार की परीक्षा को कहूंगा।

गोमृगा: कृमयश्चापि भूतयोगं तथैव च।
विपरीतफलं पुष्पकण्टभेदं तथैव च। १४ :

महासत्त्वस्य संयोगं प्रतिशंकां तथैव च।
गुल्मागुल्मविभेदं च सहस्त्राक्ष धनुस्तथा। १५।

गौ, मृग, भूत-प्रेतों का मिलन, उल्टे फल, पुष्पों और काटों के भेद, महाबल शक्ति तीनों का संयोग और इस कारण शंका का बराबर बना रहना गुल्म अंगुल के भेद तथा इंद्रधनुष।

एवमादीनि चान्यानि लक्षणानि परीक्षयेत्।
बिम्बलक्षणभेदं च वर्तीनां च यथाक्रमम्। १६।

इस प्रकार इन सबकी और अन्य तथ्यों की भी परीक्षा करना, दीपक की बत्तियाँ की छाया के लक्षण और उनके भेद।

औषधं च परीक्षाणां कृमिपुष्पादिभेदत:।
कुमारकन्यकापाद जातानां चैव सर्वश:। १७।

कृमि, पुष्पादि के भेद, कुमार (केवल पाँच वर्षीय बालक) और कुमारी (केवल आठ वर्षीय कन्या) के पाँव से सब प्रकार की औषधियों का परीक्षण करना।

सर्वाञ्जनं च कथ्यन्ते खननग्रहणं तथा।
निधिरक्षाविभेदं च तद्विरोधफलं तथा। १८।

सब प्रकार के अंजन, धन के निमित्त खुदाई करना, ग्रहण कर सुरक्षा करना तथा इसके विपरीत फल से बचाव।

एवमादीनि चानयानि शृणुध्वं मुनिसत्तमा:।
अत:परं प्रवक्ष्यामि सहायानां च लक्षणम्। १९।

इस प्रकार की सभी बातें कहूंगा और भी बहुत सी बातें हैं, उसे भी सुनो। इसके बाद इस कार्य में सहायकों के लक्षण भी कहूंगा।

सहाया: शोभना: कार्या: सप्त पञ्च त्रयोऽथवा।
वित्ताधिकं यथा तत् तु सहायानां समासत:। २०।

सम्पत्ति के खनन कार्य में सात पाँच अथवा केवल तीन सहायक ही श्रेष्ठ होते हैं। यही सबसे उत्तम संख्या है। सहायकों की संख्या जितनी भी कम होगी उतना ही अधिक धन आपको प्राप्त होगा।

ना सहायेन कर्तव्यं मन्त्रिणां निधिसाधनम्।
तत्रापि लक्षणं वक्ष्ये सहायानां समासत:। २१।

बिना सहायकों के धन का खनन नहीं करना चाहिए। इस कारण मैं सहायकों के लक्षण कहूंगा।

ग्राह्याग्राह्यविभेदेन श्रीमच्छंकरभाषितम्।
सर्वसत्त्वहिता: शान्ता मदमात्सर्यवर्जिता:। २२।

(कौन सहायक बनने योग्य है और कौन नहीं, इसका वर्णन मैं भगवान शंकर के कथनानुसार कहूंगा) सब प्राणियों की भलाई के इच्छुक अभिमान ईर्ष्या से रहित शांत।

धार्मिका: शीलसम्पन्ना हिंसादम्भ विवर्जिता:।
बलवन्त: सदाचारा ब्राह्मणा: क्षत्रिया विश:। २३।

धार्मिक, शीलवान, हिंसा तथा अभिमान से रहित, सदाचारी बलवान ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय वैश्य सहायक बनाने के योग्य हैं।

शूद्रा अपि सदाचारा मद्यमांसविवर्जिता:।
सहाया: शोभना ह्येते कथ्यन्ते येऽप्यनिन्दिता:। २४।

मांसादि का सेवन न करने वाले सदाचारी शूद्र भी सहायक बनाये जा सकते हैं। जो निन्दित सहायक हैं, अर्थात् जिनको सहायक नहीं बनाया जा सकता, उनका भी वर्णन करूंगा।

सत्त्वहीना दुराचारा नास्तिका साधुदूषका:।
देवद्विजगुरुस्त्रीणां निन्दितानृतवाचका:। २५।

दुराचारी, नास्तिक, दुर्बल, ब्राह्मण और स्त्रियों की बुराई करने वाले, झूठ बोलने वाले और साधुओं में दोष निकालने वाले।

मूकं हीनं शस्त्रपाणिं वक्रात्मानं च वर्जयेत्।
सुनिमित्तान्यथो वक्ष्ये येषु लाभो भवेन्निधे:। २६।

अंगहीन, गूंगा, सदैव शस्त्रधारी, कुटिल व्यक्ति इन सबको सहायक नहीं बनाना चाहिए। अब मैं उन उत्तम साधनों का वर्णन करूंगा जिनके द्वारा धन प्राप्त हो सकता है।

गौ: सवत्सा सुरा मांसं रोचना दधि चन्दनम्।
पूर्ववस्त्रज्वलद्वह्निनर्ऋषभा: पाशसंयुता। २७।

धन प्राप्ति हेतु, गौ, बछड़े सहित शराब, माँस रोचन (लाल कमल, गोरोचन अथवा रोली) चन्दन दही, पुराना जीर्ण शीर्ण वस्त्र, प्रज्वलित अग्नि (लपटों वाली) जाल अथवा रस्सी में फंसे बैल।

स्वस्तिकं वर्धमानेषु सालंकारा वरांगना:।
शुल्कवस्त्राणि पुष्पाणि पल्लवं दुग्धसर्पिषी। २८।

चार दिशाओं में जलाने वाला मांगलीक दीप (चतुर्मुखी) आभूषण धारी वैश्या, श्वेत कपड़े, फूल, दूध, कोमल पत्तियाँ दूध, सफेद कपड़े और शुद्ध घी।

कुमारो गोमयं राजा गजाश्वध्वजचातरा: ।
वेणुवीणामृदंगानां शब्दो वा दर्शनं शुभम् ।२९।

कुमार (पाँच वर्ष का सुन्दर बालक अथवा राजकुमार) गोबर, राजा, हाथी, घोड़ा, पताका, चंवर, बंसरी, वीणा, मृदंग के स्वर इन सबका दर्शन शुभ माना गया है।

चकोरश्चचक्रभृज्जीवा चक्रवाक सुसारिक: ।
मयूर चातकादीनां शब्दो नूपुरशिञ्जितम् ।३०।

हंस चकोर, चकवा, मोर, मैंना, पपीहा, पायल, घुंघरू इन सबकी ध्वनि धन प्राप्ति के लिए शुभ है।

पुष्पमूलफलं पूज्या रत्नाद्याभरणानि च ।
पूर्णकुम्भोत्तमानारी सपुत्रा च सभर्तृका ।३१।

पुष्प, खाने योग्य मूल (जैसे अदरक, शकरकंद आदि) पूज्य गुरु ब्राह्मण, वृद्धजन आदि जल से भरा घड़ा, रत्नजटित आभूषण, पतिव्रता स्त्री जो पुत्र अथवा पति के साथ हो।

शुभदर्शनमित्यादि गच्छतां लाभसूचकम् ।
मुण्डिकास्तैलिका नग्ना: कृशांग: क्षतपाणय: ।३२।

इन सबका दर्शन शुभ माना गया है। यात्रा में इनके दर्शन से धन लाभ की सूचना मिलती है। तेल लगाया तेली, दुर्बल शरीर नंगा, कटे हाथ वाला मनुष्य।

शश मार्जारकाकारि भुजंगा वाग्मवीरूहा: ।
व्याधिता दु:खिता भीता एतेषां दर्शनेऽशुभम् ।३३।

कौआ बिल्ली, खरगोश, उल्लू, साँप, मूर्ख, रोगग्रस्त, डरपोक व्यक्ति के दर्शन अशुभ होते हैं। सम्पत्ति प्राप्ति के मार्ग में इनका दर्शन अशुभ होता है।

तिथिनक्षत्रवाराणां मुहूर्तं च यथोदितम् ।
हिताहितविभागेन कथ्यते निधिकर्मणि ।३४।

अब कौन सा वार नक्षत्र या तिथि का मुहूर्त शुभ अथवा अशुभ है, उसका विवरण बतलाता हूं ।

सौम्ये निधिलाभः स्यादार्द्रायां न च लभ्यते ।
पुष्ये तृप्ते च विद्वांसो ! ध्रुवं सिद्धिः पुनर्वसौ ।३५।

आर्दि नक्षत्र में धन प्राप्त नहीं होता है । मृगशिरा नक्षत्र में धन की प्राप्ति होती है । पुनर्वसु नक्षत्र में कार्य अवश्य सफल होता है और पुष्य नक्षत्र में इतना धन नहीं मिलता है कि विद्वान तृप्त हो सकते हैं ।

आश्लेषायां भवेद् वस्तुविग्रहोऽप्यथ बन्धनम् ।
फल्गुन्यां धनलाभः स्यान्मखायां मरणं ध्रुवम् ।३६।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्रमें खनन कार्य करने से धन प्राप्त होता है । आश्लेषा नक्षत्र में खुदाई करने पर धन के सम्बन्ध में लड़ाई झगड़ा हो सकता है । कारागार में भी पड़ जाना संभव है । मघा नक्षत्र में खुदाई करने से कर्ता का मृत्यु योग बनता है ।

चित्रायां कलहोद्वेग उत्तरा सिद्धिदा स्मृता ।
विवादो जायते स्वात्यां विशाखा मृत्युदायिनी ।३७।

चित्रा नक्षत्र में कार्यारम्भ से चिंता, कलह उत्तरा फाल्गुनी उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद में खनन कार्य सिद्धि दायक है । स्वाति नक्षत्र में कलह, विवाद, द्वेष होता है और विशाखा नक्षत्र में मृत्यु निश्चित जानना चाहिए ।

अनुराधा वरा प्रोक्ता ज्येष्ठायां सिद्धिरुत्तमा ।
पूर्वाषाढे भवेदत्र मूले शोणितदर्शनम् ।३८।

ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्तम सिद्धि मिलती है। अनुराधा नक्षत्र खनन कार्य के लिए श्रेष्ठ कहा गया है। पूर्वाषाढ़ में भी खनन कार्य उचित है। मूल नक्षत्र में खनन कार्य से रक्तपात संभावित है।

धनिष्ठायाँ भवेत् क्लेशः श्रवणो सिद्धिरुत्तमा।
पूर्वभाद्रपदे क्षेमो भरण्याँ मरणं ध्रुवम्।३९।

धनिष्ठा नक्षत्र में खनन कार्य का फल श्रेष्ठ, श्रावण में उत्तम, पूर्वा भाद्रपद में निश्चित सुरक्षा कही गयी हैं। भरणी नक्षत्र में कार्य आरम्भ करने से मत्यु योग बनता है।

अश्विनी रेवती पुण्या कृत्तिका कार्यनाशिनी।
रोहिण्यां सिद्धिरित्युक्तं नक्षत्रफलमेव च।४०।

अश्विनी और रेवती में खनन कार्य पुण्य माना गया है। रोहिणी नक्षत्र में खनन कार्य करने से सिद्धि मनोनुकूल होती है कृतिका नक्षत्र में कार्य नष्ट होने की संभावना रहती है। नक्षत्रों के यही फल (भगवान शंकर द्वारा) बतलाये हैं।

क्रूरवारास्त्रयो वर्ज्या भौमार्कशनिवासराः।
व्यतीपाते त्र्यहं वर्ज्यं वैधृतौ च दिनत्रयम्।४१।

मंगलवार, शनिवार और रविवार क्रूर दिन हैं। खनन कार्य के लिए यह सब वर्जित दिन हैं। व्यतिपात योग और वैधृति योग के तीन दिन वर्जित हैं। (इन दोनों योगों के प्रारम्भ का पहला दिन जिस दिन यह दोनों योग हों वह दिन तथा उससे अगला दिन)।

दिन क्षये त्र्यहं वर्ज्यं दिनादौ प्रहरद्वयम्।
आषाढे मित्र नक्षत्रे यावत् स्वपिति नो हरिः।४२।

तिथि का क्षय दिन होने पर (उसी दिन उससे पहले और बाद का भी एक दिन) इस प्रकार तीन दिन तथा प्रत्येक दिन के प्रारम्भ के दोपहर (लगभग छः घण्टे) खनन कार्य के लिए वर्जित हैं। (दिन रात में आठ प्रहर होते हैं। चार प्रहर दिन में तथा चार प्रहर रात्रि में, दोपहर तक रवे तेजी में रहता है, इस अवस्था में खनन कार्य वर्जित है। खनन कार्य में चन्द्र को ही शुभ माना गया है। अतएव सूर्य जब अस्ताचल की ओर गमन करते हैं, तभी खनन कार्य करना उत्तम माना गया है। आषाढ़ मास में मित्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती और अनुराधा) हों। भगवान विष्णु का शयन न हुआ हो। यह शयन आषाढ़ शुक्ल एकादशी को ही होता है।

एतदन्तरमासाद्य खन्यं कुर्वीत मन्त्रधीः।
मार्गशीर्षे शुभे मासि नक्षत्रे चन्द्रदैवते।४३।

इस समयावधि में ही कर्ता को खनन कार्य सम्पन्न करना चाहिए। शुभ अगहन माह में जप मृगशीर्ष नक्षत्र के देवता चन्द्र हों तो उस समय खनन कार्य करना उचित फलदायक है।

खन्यं कुर्वीत सद्वारे यावदाषाढकं हितम्।
न कुर्यात् परतः खन्यं यदि कुर्यादसिद्धिदम्।४४।

जब तक कल्याण करने वाला आषाढ़ मास है, तब तक शुभ दिन में कार्य करना चाहिए। अगर कार्य सिद्धि के लक्षण न हों तो खनन कार्य न करें।

उभे ते मैत्र नक्षत्रे अनुराधा विशेषतः।
मृगशीर्षं पुनश्चात्र प्रशस्तं खन्य कर्मणि।४५।

चन्द्रमा के दोनों नक्षत्र (अनुराधा, मृगशीर्ष) खनन कार्य के लिए सर्वोत्तम माने गए हैं।

शतसङ्ख्या धनं ग्राह्यं सहाय त्रितयं शुभम्।
शुभानूर्ण निहस्ता च मुरार्जनर सैन्धवम्।४६।

सौ की संभावित संख्या की सम्पत्ति के खनन कार्य के लिए ऐसे तीन सहायक जो कि निहत्थे पर हट्टे कट्टे कष्ट सहन करने वाले और सिंधु प्रदेश के अश्वों के समान बलवान हैं। उत्तम पाए गए हैं।

निषाद रक्तवस्त्राश्च काषायाम्बर धारिणः।
लाक्षांगारक धूमाग्नि नियमस्थो नरोत्तमः।४७।

नियम से स्थिर स्वभाव से उत्तम, धूम और अग्नि से न घबराने वाले, लाल, गेरूआ वस्त्र धारी या लाक्षा (लाख) रंग वाले (लाखोरी रंग) वाले सहायक भी उत्तम हैं। निषादों (केवट, कहार, धीवरी आदि) को भी अगर इस प्रकार के हैं तो सहायक बनाया जा सकता है।

द्विगुणस्तु वयो ज्ञेयो अष्टपञ्चशतेषु च।
चत्वारिंशत् सहस्त्रेषु षोडशद्विगुणा मता।४८।

सहायकों की आयु कर्ता की आयु से दुगुनी होनी चाहिए। सौ तक की संख्या में सम्पत्ति की संभावना में ८ और ४००० तक ३२ सहायक रखें। (सम्पत्ति की संख्या सिक्कों से नहीं नग से भी है)।

कोटि वित्तं भवेद् यत्र सहायानां शतं च वै।
कोट्यर्धं च तदर्धेन तदर्धे द्वादशस्तथा।४९।

एक करोड़ नग की संख्या संभावन पर सौ सहायक, पचास

लाख में पचास, पचीस लाख में बारह सहायक सर्वोत्तम माने गये हैं।

तदेतद् द्वि त्रि चत्वारि पञ्च षट् सप्तधा मताः ।
सप्तविंशति संख्यानि कोटि वित्ते यथा मतम् ।५०।

दो, तीन, पाँच, छः सात करोड़ तक की संभावित संख्या का भी यही नियम है। सत्ताईस करोड़ के लिए भी ऐसा ही कहा गया है।

इस प्रकार शाम्भव ने निधि कर्म की व्याख्या की है।

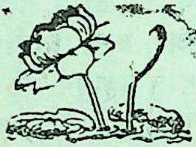

अथ द्वितीय परिच्छेदः ।

निधिस्थानानि कथ्यन्ते जल स्थल दिवस्तथा ।
नदी तडाग कूपेषु वापी पुष्करणीषु च । १ ।
समुद्र स्थान मित्याहुः स्थलस्थं चोच्यतेऽधुना ।
विष्णुस्थाने शिवस्थाने मातृस्थाने तथैव च । २ ।

अब जल, स्थल, आकाश में धन के जो स्थान हैं, उनका विवरण दिया जा रहा है । पुष्करणी नदी, तालाब, कुआँ, बावड़ी, समुद्र यह सब जल के स्थान हैं । विष्णु, भगवती और भगवान शंकर के मन्दिर में ।

अन्येषु देवतास्थानेष्वथो ग्रामस्थ मध्यमे ।
ग्राम सीमासु चान्यस्मिन् सीमास्थाने तथैव च । ३ ।

और भी अन्य देवताओं के स्थान में, ग्राम के मध्य भाग में ग्राम्य सीमा तथा इसी प्रकार की अन्य सीमाओं में ।

गृहे विप्र नृपाद्याना मन्येषां विभवान्विते ।
चत्वरे द्वारि पृष्ठे च तोरणे मण्डपे तथा । ४ ।

ब्राह्मण राजा आदि के निवास, ऐश्वर्यशाली पुरुषों के भवन, चौराहा घर के पिछले भाग में बाहरी फाटक और मंडप तले ।

गज वाजि गृहे चापि महावृक्षस्य मूलके ।
एक शीर्षेषु वक्षेषु वनेषूच्चस्थलेषु । ५ ।

घुड़साल, हाथीशाला, पुराने पेड़ का मूल, शाखाहीन लम्बे वृक्ष की जड़ में वन जंगलों और ऊँचे टीले आदि में।

नीच स्थाने श्मशाने च वने चोद्यानकेऽपि च।
गोपाल भवने गुह्ये सोपाने धान्यशालके। ६।

श्मशान, जंगल, बगीचे, नीची भूमि, ग्वाले का घर, गोपनीय स्थान सीढ़ियों के नीचे, धान रखने वाली कोठरियों कुठालों में।

शून्यागारे खर्वटे च समे विषम भूमिषु।
नदी समुद्र योगेषु प्राकाराणां च सन्धिषु। ७।

सूने घर में, पर्वत की गोद में बसे ग्राम ऊंची नीची भूमि नदी सागर संगम में, परकोटे के जोड़ों में।

कोष्ठद्वारे गृहद्वारे स्रोतसां च तथैव च।
आन्तरिक्षाणि कथ्यन्ते गिरिसानु गुहादिषु। ८।

घर के भीतर, कोठे, कमरे के द्वार, घर का बाहरी द्वार जल स्रोतों के प्रारम्भिक स्थल, इन जगहों पर सम्पत्ति रहने की संभावना रहती है। अब पर्वत की चोटियों और गुफाओं का विवरण देते हैं।

प्रासादे गोपुरे चैव विमाने कुड्यकेषु च।
एवमादीनि चान्यानि अन्तरिक्षगतं धनम्। ९।

नगर किले का प्रवेश द्वार, विशाल भवन का प्रवेश स्थल वायुयान या रथ में, आले में पृथक-पृथक रूप से धन रहता है।

ततः परं प्रवक्ष्यामि जलस्थानस्य लक्षणम्।
प्रावृट्काले प्रसन्ने च यत्र निष्कलुषं जलम्। १०।

अब जलीय स्थानों पर धन के लक्षण बतलाता हूं। वर्षा काल में जहाँ वर्षा का पानी पीने योग्य स्वच्छ निर्मल हो।

येषु स्थानेषु सर्वत्र तेषु विद्याद् धनं ध्रुवम्।
यदुष्णं शीतकालेतु ग्रीष्म यच्छीतलं जलम् ॥११॥

ऐसे सभी स्थानों में धन रहता है। खनन विद्या के द्वारा इन स्थानों से धन भी अवश्य मिलता है। जहां गर्मी में ठण्डा हो और ठण्डे मौसम में गरम पानी हो वहाँ पर धन अवश्य रहता है।

तस्मात् प्रतिकृतिं भित्वा यत्र विद्याद् धनं ध्रुवम्।
धूम्र मुत्पल पत्रं तु यत्र पुष्पं प्रसूयते ॥१२॥

जहाँ कहीं भी प्रकृति के सामान्य नियम के विपरीत ऐसा होता हो, वहाँ खनन विद्या के माध्यम से अवश्य ही धन प्राप्त किया जा सकता है। जहाँ पर मटमैले (धूम्र) रंग के कमल खिलते हों।

जले तत्र ध्रुवं विद्यान्निधानमिति बुद्धिमान्।
अतः परं प्रवक्ष्यामि भौमस्यापि च लक्षणम् ॥१३॥

वहां पर खनन विद्या का पण्डित अवश्य ही धन प्राप्त करता है। अब मैं पृथ्वी के लक्षण बतलाऊँगा।

व्याप्ता भूमिरियं कृत्सना द्रव्येणापि यथा जलैः।
तत्रादितो हविष्यं स्यात् पुंसां दुष्कर्म सञ्चये ॥१४॥

यह भूमि जिस प्रकार जल से भरी है, उसी प्रकार धन सम्पन्न भी है। संकट यह है कि इसे प्राप्त करने में मानव के प्राण तक जा सकते हैं क्योंकि इस धन को पाने के लिए कुछ दुष्कर्म करने पड़ते हैं।

वह्निनिधानं होमाय सोऽयं वैदर्शयन्ति हि।
स्थानानि विधिनान्यत्र निधीनां कल्पयन्ति च ॥१५॥

अतएव खनन विद्या के अज्ञान के कारण मानव के प्राणों की बलि चढ़ जाती है। इसी से मुक्ति पाने के लिए (विद्वानों ने) धन के स्थान और यहाँ से धन निकालने की विधियों का वर्णन किया हैं।

यत्र धूमायते भूमिर्या च भूमिश्च निस्तृणा।
यत्र विज्वलिता भूमिर्भौमोऽयमिति निर्दिशेत् ।१६।

जहाँ की जमीन पर धुँए जैसी झलक हो, घास न उगती हो जमीन जलती सी हो, वहाँ पर धन प्राप्ति की सम्भावना रहती है।

रात्रौ विज्वलिता भूमिर्दिवा नैव च दृश्यते।
हर्ष वा जायते भूमौ भौमोऽयमिति निर्दिशेत् ।१७।

जहाँ रात में पैर रखने पर जलन अनुभव हो (लेकिन दिन में ऐसा न हो) जहाँ पर खड़े होने पर खुशी का अनुभव हो, वहाँ धन प्राप्ति की पूरी संभावना रहती हैं।

यत्र पूर्व सुगन्धः स्यादाज्य धूमाकृतिश्च यः।
वसन्त वन गन्धो वा भौमेयं तत्र निर्दिशेत् ।१८।

जिस स्थान पर अभूतपूर्व सुगन्ध हो, हवन में डाले गए घी के बाद उत्पन्न धुँए-सा वातावरण हो, जिस बाग बगीचे में जहाँ बराबर बसन्त ऋतु सी गन्ध बनी रहती हो वहाँ धन प्राप्ति की पूरी-पूरी सम्भावना रहती है।

वृक्ष गुल्म लतादीनां लक्षणं तु विधीयते।
अपुष्पाश्च सपुष्पाश्च अफलाः सफलाश्चये ।१९।

अब पौधे, लता, वृक्ष, जंगली उपज के विषय में बतला रहा हूं। पुष्पहीन, पुष्प समेत, फलहीन, फलदार, काँटेदार वृक्ष हैं।

अकण्टकाश्च ये वृक्षा भौमेयं तत्र निर्दिशेत्।
पुष्पोपरिष्टात् पुष्पं च भौमेयं तत्र निर्दिशेत्।२०।

जो वृक्ष काँटों से हीन हैं, वहाँ धन की सम्भावना रहती है जहाँ फूल के ऊपर फूल खिला हो, वहाँ तो अवश्य धन होता है।

स्वाभावाद् विपरीतैश्च पत्र पुष्प फलांकुरैः।
द्रुमाः पर्ण प्रमाणैश्च भौमेयं तत्र निर्दिशेत्।२१।

यदि वृक्ष में पत्ते उल्टे पुष्प, फल, अंकुर हों और वृक्ष (पौधे) पत्ते के ही बराबर हों। बढ़ने वाले पौधे होकर भी न बढ़ रहे हों, तो वहाँ धन की बहुत संभावना रहती है।

स्वभावादपि वृक्षस्य स्रवन्तो रक्त विन्दवः।
विश्रुतः प्रतिशब्दश्च तत्र वित्तं विनिर्दिशेत्।२२।

जिस वृक्ष या पौधे से रक्त जैसी नन्हीं बूंदें यदा कदा टपकें और जहाँ शब्दों की (आवाज) प्रतिध्वनि (झाँई) उत्पन्न हो जाती हो, वहाँ अवश्य ही धन रहता है।

द्रुम प्रमाणैरा वृक्षात् प्ररोहं यत्र मुञ्चति।
प्ररोहे दृष्टमात्रे तु वसु विद्यादसंशयम्।२३।

जहाँ पर वृक्ष की डालियों के बराबर पत्ते हों और नये पत्ते भी उसी आकार के फूटें तो वहाँ पर अवश्य धन होता है। नए पत्तों को देखकर विज्ञजन इसका पता कर लेते हैं।

एकांगुल परीणाहे प्ररोहे लभते धनम्।
द्वात्रिंशादिति वा पृष्ठे पञ्चपञ्चाशतेऽपिवा।२४।

अगर पल्लव (नये पत्ते) एक अंगुल मोटे हों तो वहाँ पर धन होना चाहिए। ३२ से ५५ नग तक धन हो सकता है।

षष्ठयर्थेगु परीणाहे विद्यात् पञ्चशतं धनम्।
षोडशांगुलिके ज्ञेयं सहस्रं नात्र संशयः।२५।

छः अंगुल मोटे पल्लव होने पर पाँच सौ धन (नग) होने की सम्भावना होती है। सोलह अंगुल मोटे पल्लव होने पर एक हजार नग होना चाहिए। इसमें शक नहीं।

विंशत्यंगुलिके विद्यात् सहस्त्राणि बहूनि च।
त्रिशदंगुलिके ज्ञेयं सहस्त्राणां शतं वसु।२६।

पल्लव (नये पत्ते) बीस अंगुल मोटा हो तो हजारों नग और तीस अंगुल मोटा हो तो कई लाख नग होना चाहिए।

अतः परं प्रवृद्धेतु कोटि वित्तं विनिर्दिशेत्।
मृग पक्षि कृमीणां च लक्षणं तु विधीयते।२७।

तीस अंगुल से अधिक मोटा होने पर वहाँ करोड़ की संख्या में धन (नग) हो सकता है। अब पशु पक्षी, कीड़े-मकोड़ों आदि के लक्षण कहते हैं।

अधोमुखोऽपि यस्तिष्ठेद् वषो दृष्टश्चतुष्पथे।
रमते गर्जते वापि तत्र वित्तं विनिर्दिशेत्।२८।

जिस चौराहे पर बैल नीचे मुख खड़ा किये दीखे, सिर के सींग अथवा पैर से जमीन खोदने की कोशिश करे या बार-बार थूथन मार गर्जना करे तो वहाँ अवश्य धन होता है।

कृकलासाः शुनश्चैव गर्दभाश्चैव सूकराः।
दृश्यन्ते यत्र क्रीडन्ति तत्र विद्यान्न संशयः।२९।

जहाँ गिरगिट, कुत्ता, गधा तथा सूअर एक साथ खेलते

दिखलायी पड़ें, वहाँ की भूमि में अवश्य ही संपत्ति होती है।

वराहोऽप्यथवा नित्यं ज्वलते च महीतले।
तत्र वित्तं विजानीयान्महाकाल वचो यथा।३०।

जिस स्थान पर सूअर नित्य आकर बैठें और वह भाग हमेशा शेष भाग से कुछ ज्यादा गरम प्रतीत हो, वहाँ धन अवश्य होता है। यह महाकाल का कथन है।

यत्र चेन्द्र धनुर्नित्यं वल्मीकेषु च तिष्ठति।
न चेत् तु वर्षाकाले तु तत्र वित्तं विनिर्दिशेत्।३१।

जिस भूमि पर बिना वर्षा के इन्द्र धनुष दीखे वही इन्द्र-धनुष वर्षा ऋतु में दिखलायी न पड़े तो वहाँ पर अवश्य धन होता है।

यत्र गत्वा सदा कालं शिवा रावं विमुञ्चति।
अधोमुखं विलिखिते तत्र वित्तं विनिर्दिशेत्।३२।

जिस स्थान पर जाकर गीदड़ (स्त्रीलिंग) बराबर बैठकर शोर करे और खनन करने का प्रयत्न करे और चली जाये। कई बार जब वह इस प्रकार करे तो वहां पर खनन कार्य से संपत्ति अवश्य ही प्राप्त होती है।

पक्षिणां लक्षणं चैव विधानं शृणु साम्प्रतम्।
श्येनाः काका बकाः श्वीना अन्येषां बहु पक्षिणाम्।३३।

अब पक्षियों के लक्षण बतलाता हूं। कौआ, बाज, बगुला, मादा बाज आदि।

सततं यत्रतिष्ठन्ति निधिस्तत्र न संशयः।
यत्र गत्वा सदाकालं रमते सेवते द्विज।३४।

यह पक्षी जिस स्थान पर आकर बराबर बैठते हों, क्रीडा

(भोग विलास) भी करते हों तो वहाँ पर धन अवश्य होता है।

खनते चैव पादेन तत्र विद्यान्महानिधिम्।
गृध्रो वल्मीक मासद्य पादे नैकेन तिष्ठति ।३५।

यदि यह सब पंछी पंजों से जमीन खोदने का प्रयास करते हैं, तो वहाँ अपार धन अवश्य होता है। यदि गिद्ध उस स्थान पर एक पैर से या पैर पर पैर रखकर बैठता हो तो भी अपार सम्पति की सम्भावना है।

खनते चान्य पादेन तत्र वित्तं विनिर्दिशेत्।
कृमि कीटादि भेदानां लक्षणं तु विधीयते ।३६।

गिद्ध यदि पैर पर पैर रखकर न बैठे या एक पैर से बैठे पर अगर पंजों से जमीन खोदने का प्रयास करता है तो भी पर्याप्त सम्पत्ति की संभावना है। अब कीड़े, मकोड़ों के लक्षण कहे जाते हैं।

पाण्ड श्वेत सिताद्युक्तं हेम पीतोऽरुणो भवेत्।
कर्तारुणां तथा ताम्रं कृष्णा श्याम च नीलता ।३७।

जिस स्थान पर कुछ पीले, कुछ चमकीले, लाल, ताँबे के रंग के, काले श्याम पीतवर्ण के कीट पतंगे एक साथ दीख पड़ें, वहाँ सम्पत्ति का लक्षण समझना चाहिए।

अन्योन्यं शत्रवो यत्र कृमि कीट सरीसृपाः।
क्रीडन्ति सहिता यत्र भौमेयं तत्र निर्दिशेत्।३८।

जिस स्थान पर एक दूसरे के शत्रु कीट पतंगे एक साथ दीख पड़ें तो वहाँ अवश्य सम्पत्ति होती है। उस स्थान पर इनका परस्पर मैत्री भाव इसका सूचक होता है।

अन्येषां चैव भौमानां लक्षणं तु विधीयते ।
चतुरस्र त्रिकोणं वा भूतलं यत्र दश्यते ।३९।

तत्र कल्लूरिका नाभ निधिर्देव विनिर्मिता ।
भिन्न मस्तक संकाशः प्ररोहो दृश्यते वटे ।४०।

तस्याधः संस्थितं द्रव्यं जानीया दुक्तलक्षणम् ।
स्थलजाश्च जले वृक्षा जलजाः स्थल भूमिषु ।४१।

अब भूमि के लक्षण वर्णित हैं। जहाँ चार कोण अथवा तीन कोण भूमि समतल दीखे वहाँ पर प्रकृति (देव) निर्मित सम्पत्ति होती है। जिस वृक्ष में कटा हुआ मानव सिर दिखलायी पड़े वहाँ अवश्य धन होता है। जहाँ पर जल में उत्पन्न होने वाले वृक्ष पौधे आदि हों, सूखी पृथ्वी में पौधे जन्मे हों तो वहाँ अवश्य ही धन होता है।

अक्षीराः क्षीर वृक्षाश्च सक्षीराः क्षीर वर्जिताः ।
विपरीत फलोद्भेदा दृश्यन्ते यत्र भूरुहाः ।४२।

कोचने पर बिना दूध वाले वक्ष पौधे दूध निकालें और ऐसे ही दूध वाले वृक्ष पौधे दूध न दें तथा वृक्ष विपरीत फल दे ? ऐसे वृक्षों के नीचे दूर्वा (घास) भी हो तो वहाँ सम्पत्ति होती है।

अवश्यं तत्र वित्तं स्यात् साधयेद् विधिना बुधः ।
करिहस्त समाकारः प्ररोहो दृश्यते व (देत् ? टे) ।।

विद्वान पुरुष विधिपूर्वक उसके खनन का प्रबन्ध करे। जिस वृक्ष में हाथी की सूंड के समान पल्लव (पत्ते) हों वहाँ भी धन होता है।

रक्तं स्रवति भिन्ने च तत्र वित्तं न संशयः।
कूर्माकृति प्ररोहः स्यात् सहस्त्रं शिव चोदितम् ।४४।

जिस वृक्ष के काटने पर रक्त जैसा रस निकले, वहाँ अवश्य धन होता है। जिस पेड़ पर कछुए की आकृति बनी हो, उसके नीचे भी धन होता है।

अव्यक्त कलशाकारे गोधाकार प्रकारके।
पद्म पुष्पे शुभे शुक्ले तदधो निधि निर्दिशेत् ।४५।

जहाँ पर अस्पष्ट घड़ा सा दीख पड़े, गोह के आकार के समान श्वेत कमल पुष्प हों, उसके नीचे सम्पत्ति की संभावना रहती है।

ध्वज मीन समाकारः प्ररोहो दृश्यते व (देत् ? टे)।
शत साहस्त्रकं वित्तं तदधो लभ्यते ध्रुवम् ।४६।

जिस वृक्ष में ध्वजा या मछली के आकार का पल्लव (नई शाखा) निकले तो उस वृक्ष के नीचे एक लाख नग की सम्पत्ति निश्चित रूप से होती है।

ग्रीष्मे सूर्यांशुभिर्दग्धा शोषं नायाति या मही।
दावानलेन दग्धा वा तोय सम्पर्क वर्जिता ।४७।

जिस उथले स्थान पर जल ग्रीष्म काल में भी नहीं सूखता अथवा दावानल में जिस स्थान का जल प्रभावित नहीं होता है, उस भूमि में अवश्य ही धन रहता है।

प्रदेशे कुत्रचित् तत् स्यात् पतंगैः सेवितो यदि।
कोमलः शाड्वलो रम्यो दृश्यते पांसु सञ्चयः ।४८।

ऐसे स्थान पर पड़ने वाले कीड़े मकोड़े बार-बार आकर बैठें, जल्दी न उड़ जाते हों और धूल धक्कड़ में भी जहाँ की

घास स्वच्छ स्पष्ट हरी (दूब) वनी रहे, वहाँ सम्पत्ति अवश्य होती है।

गौकुलैर्बहुभिः स्निग्धैः खाद्य मानोऽपि नित्यशः।
पुनश्च तादृशो भूयान्निधानं तत्र लक्षयेत् ।४९।

जहां गायों के झुण्ड बैठकर पागुर करते हैं, वहाँ पर अवश्य ही लाख से ऊपर की सम्पत्ति होती है। इसमें संदेह नहीं है।

अनारोहेषु वृक्षेषु यद्यारोहः प्रदृश्यते।
निधानं लक्षयेत् तत्र लभ्यं भाग्यवतां नृणाम् ।५०।

जिस न चढ़ने योग्य पेड़ों पर पशु चढ़ते दीखें तो वहाँ पर अवश्य सम्पत्ति होती है। यह विद्वानों का अनुभव है। भाग्य-वान पुरुषों को ही यहाँ का खजाना मिलता है।

वहूनां यत्र वृक्षाणामेक एवं तरौ खगाः।
वसन्ति सकलं कालं निधानं तत्र लक्षयेत् ।५१।

जहाँ कई वृक्षों के रहते हुए भी केवल एक वृक्ष पर पक्षी हमेशा निवास करें वहाँ पर सम्पत्ति अवश्य होती है।

जीर्णोद्यान तटाकेषु शून्यग्राम वनेषु च।
मातरो यत्र तिष्ठन्ति निधिस्तत्र न संशयः ।५२।

पुराने बगीचे तथा तालाब में या ऐसे गाँव में जहां सांप न रहते हों और जहाँ दुर्गा मन्दिर हो वहाँ निश्चय धन जानना चाहिए।

गोधू+++मै+र्यं निखनेच्छंकितस्थले।
सप्तरात्रे व्यतिक्रान्ते यदि जीर्यन्ति तेषु ते ।५३।

जहाँ सम्पत्ति होने का शक हो उस स्थान पर कुछ खनन कर वहाँ गेहूँ बो दें। अगर सात रात्रि व्यतीत हो जाने पर वहाँ गेहूं की बालें निकलें।

तथा तत्र धनं ज्ञेयं कुलिशेन च भाषितम् ।
अधोमुखेषु वृक्षेषु प्रान्ते तत्र धनं भवेत् ।५४।

वहाँ धन अवश्य ही जानना चाहिए। यह इन्द्र का कथन है। जिस स्थान में विशाल वृक्ष बहुत नीचे झुके हों वहाँ धन होता है।

सोदके प्रावृषः काले तृणं यत्र न जायते ।
दृश्यते शाड्वलं ग्रीष्मे तत्र वित्तं विनिर्दिशेत् ।५५।

जहाँ वर्षा ऋतु में जल रहने पर भी दूब उत्पन्न न हो पर ग्रीष्म काल में दूब दिखाई दे वहाँ धन अवश्य होता है।

ज्वालां वै वर्षाकाले तु प्रसूयेत् वसुन्धरा ।
अपत्राः पत्रिणाश्चैव सपत्राः पत्र वर्जिताः ।५६।

वर्षा ऋतु में जिस भूमि से ज्वाला प्रकट हो और वहाँ सूखे वृक्षों में पत्ते निकलते हों तथा पत्ते वाले वृक्षों के पत्ते झड़ जाएं।

अत्युष्णाः शीतकाले तु तत्र विद्यान्निधिं स्थितम् ।
उष्णे षष्टि सहस्त्राणि अशीतिर्धूम दर्शने ।५७।

शीतकाल में जहाँ की भूमि अत्यन्त गर्म हो वहाँ धनराशि अवश्य होती है। भूमि के उष्ण होने पर साठ हजार और वहाँ खनन करने में पूर्व धुँआ निकलने पर दर्शन से ८० हजार।

कोटिस्तु ज्वलिते ज्ञेयमित्याह भगवञ्छिवः ।
श्वेता रक्ता च पीता च गोधा चैवं तु मूषिका ।५८।

तथा भूमि से ज्वाला प्रकट होने पर एक करोड़ नग का धन जानना चाहिए, ऐसा भगवान शिव ने कहा है। श्वेत, लाल तथा पीली गोह और चुहिया।

चित्तिर्वा स्वपते यत्र तत्र वित्तं विनिर्दिशेत् ।
एकत्र सर्प नकुलौ रमेते वसतौ यदि ।५९।

जहाँ गोह पेट के बल सोती हों वहाँ धन का निर्देश करे। अगर सर्प और नेवला दोनों एक दूसरे के परम शत्रु इकट्ठे एक स्थान पर ही रहते और खेलते हों।

तत्र वित्तं विजानीयान्महाकाल वचो यथा ।
यत्र तत्र च सन्दृष्टो यक्षो वा राक्षसोऽपि वा ।६०।

वहाँ धन अवश्य जानना चाहिये, यह महाकाल का वचन है। जिस स्थान में यक्ष अथवा राक्षस दिखलाई देते हैं।

तत्र वित्तं विजानीन्महाकाल वचो यथा ।
गिरि गव्हर देशे तु प्रतिशब्दं विमुञ्चति ।६१।

वहाँ धन जानना चाहिए, यह महाकाल ने कहा है। पर्वत की कन्दरा में जहाँ प्रतिध्वनि होती हो।

गृहगव्हर देशे वा तत्र वित्तं विनिर्दिशेत् ।
चतुष्पथे कृते वृक्षे वल्मीको यदि मुञ्चति ।६२।

और घर के कमरों (या कोठों) में जहाँ प्रतिध्वनि होती हो वहाँ धन का निर्देश करे। चौराहे के कोने पर अथवा वृक्ष में वामी हो।

विवर्ण फल पुष्पं वा तत्र वित्तं विनिर्दिशेत् ।
धूमायते यथा वृक्ष ऊष्माणं च तथा ध्रुवम् ।६३।

और उस वृक्ष के फल या पुष्प प्राकृतिक रंग के न होकर बदले हुए रंग के और कान्तिहीन हो तो वहाँ धन की संभावना रहती है। जो वृक्ष धुएँ के रंग का हो और जिसकी पींड़ सदा गर्म रहती हो।

प्रतिशब्दं विमुञ्चेत धनं तत्र शिवोऽब्रवीत् ।
वल्ली गृहप्रदेशे तु रात्रौ प्रज्वलिता यदि ।९४।

तथा जहाँ प्रतिध्वनि होती हो और यदि किसी प्रकार की लता वाला गृह रात्रि में चमकता हो तो वहाँ धन होता है, ऐसा भगवान शिव ने कहा है ।

क्षते तु स्रवते क्षीरं तत्र वित्तं विनिर्दिशेत् ।
अर्चितस्य तु लिंगस्य विपरीतं तु दृश्यते ।९५।

पूजित शिवलिंग के किसी प्रकार से खण्डित हो जाने पर यदि उस से दूध बहने लगे अथवा अन्य कोई विपरीत बात दिखलायी दे तो वहाँ धन संभव है ।

पत्रं पुष्पं फलं वापि निधि तत्रेश्वरोऽब्रवीत् ।
क्रमुकं नालिकेयं वा तालं खर्जूरमेव वा ।९६।

इसी प्रकार वृक्ष के पत्ते, पुष्प अगर विपरीत दिखलायी दें तो वहाँ धन छिपा होता है यह भगवान शिव ने कहा है । सुपारी, नारियल, ताड़ अथवा खजूर के वृक्षों में ।

द्विशिरास्त्रिशिरा वापि तत्र वित्तं विनिर्दिशेत् ।
श्मशाने यत्र दृश्यन्ते बुद्धस्य प्रतिमा यदि ।९७।

यदि दो शिरा या तीन शिरा (सिर) हों तो वहाँ धन का निर्देश करे । अगर कहीं श्मशान में बुद्ध की प्रतिमा दिखलायी दे ।

निर्जलं पंकजं वापि तत्र वित्तं विनिर्दिशेत् ।
वृक्ष गुल्म लता लक्ष्मीर्जलजाः स्थलजा अपि ।९८।

जहाँ बिना जल के कमल उत्पन्न हों वहाँ धन संभव है ।

जल अथवा भूमि में उत्पन्न होने वाले वृक्ष, गुल्म, लता आदि उग आवे।

प्रकृतेर्विकृतं प्राप्ते तत्र वित्तं न संशयः।
लिखिता यत्र पाषाणे दृष्टायेऽन्योन्य शत्रवः।६९।

और उन्होंने प्रकृति के विपरीत कुरूपता प्राप्त की हो वहाँ निश्चय ही धन होता है। जहाँ कहीं पाषाण की शिला पर परस्पर मिले सर्प रूप शत्रुओं की रचना दिखाई दे तो।

तस्मिन् परीक्षयेद् धीमान् शिलापट्टे तु निर्दिशेत्।
पञ्चसप्त शिरस्का वा त्रिशिरस्काश्च पन्नगाः।७०।

बुद्धिमान मानव उस शिलापट् की परीक्षा कर धन होने, न होने का निर्देश करे। जहाँ पाँच सात या तीन सिर वाले सर्पों की।

पाषाणे लिखिता यत्र एकान्तं भौम लक्षणम्।
लक्षणं भूमिजं भौमं मया प्रोक्तं समासतः।७१।

रचना पाषाण चट्टान पर की गई हो। जो एकान्त भूमि में हो।

अन्तरिक्ष भूमि के लक्षण

अन्तरिक्षस्थ भौमानां लक्षणं साम्प्रतं शृणु।
नवाकृतियुता यत्र प्रतिमा यत्र तिष्ठति।७२।

अब निधि प्रदेश के अन्तरिक्ष भूमि के लक्षण बतलाता हूं जहाँ नये वाली प्रतिमा स्थापित हो।

मुखवाग+रे वापि तत्र वित्तं विनिर्दिशेत्।
नाभौ तु नाभि मात्रं तु स्तने तु स्तनमादिशेत्।७३।

और मनुष्य के मुख के सदृश जहाँ शब्द भी होता हो वहाँ पर धन का निर्देश करे। भूमि में जिस प्रतिमा में केवल नाभि या स्तन मात्र दीखें वहाँ नाभि या स्तन मात्र में ही धन का निर्देश करे।

कपोले कर्णदेशे तु कर्णमात्रं तु तद्भवेत्।
अन्योन्य दर्शने वापी प्रतिमासु परस्परम् ।७४।

(प्रतिमा के) केवल कपोल अथवा कान मात्र दीखें, कपोल और कान में धन होता है और जहाँ प्रतिमाएँ परस्पर में एक दूसरे को देखती हों।

तत्र वित्तं विजानीयान्महाकाल वचो यथा।
प्रतिमा देवता यत्र प्रतिमा यत्र तिष्ठति ।७५।

वहाँ धन जानना चाहिए यह महाकाल का कथन है। जहाँ देवता की प्रतिमा या जहाँ अन्य कोई प्रतिमा स्थित हो।

मुखे वजजले वापि तत्र वित्तं विनिर्दिशेत्।
प्रतिमादेवता (का ? गा) रे प्रतिशब्दं विमुंचति ।७६।

जो मुख (घर के प्रवेश द्वार या घर के अग्रभाग) में अथवा घर के अग्रभाग के किसी जलाशय में स्थापित हो वहाँ धन का निर्देश करे। साथ ही जहां देवता की प्रतिमा मुख से प्रतिध्वनि करती हो।

मुखे तु तिष्ठते वित्तं महाकाल वचो यथा।
विहारे प्रतिमा यत्र यत्र रूपं सुशोभनम् ।७७।

वहीं उसके मुख में धन रहता है यह महाकाल ने कहा है यदि (बौद्ध) विहार में सुन्दर रूप वाली मूर्ति हो।

अनिन्दितं हि विद्येत धनं तत्र विनिर्दिशेत् ।
विनायककस्य प्रतिमा स्थापिता चोत्तरामुखम् ।७८।

जहाँ उत्तर दिशा की ओर मुख किये हुए गणेश की सुन्दर प्रतिमा स्थापित हो वहाँ धन का निर्देश करे ।

कुम्भ मस्तक मध्यान्ते तत्र वित्तं विनिर्दिशेत् ।
प्रस्तरोहे प्ररोहे वा निधिं तत्र विनिर्दिशेत् ।७९।

वहाँ उनके कुम्भ सदृश मस्तक में धन की संभावना रहती है । या फिर पत्थर में यदि कोई पौधा निकल आया है तो वहाँ धन का निर्देश करे ।

आत्मानं प्रतिमा यत्र परस्मै दर्शयेद् यदि ।
अंगुल्यग्रेण वा सम्यक् पतते वा यथा क्रमम् ।८०।

जहाँ प्रतिमा अपना शरीर अगर दूसरे (धन ग्रहण करने वाले) को दिखलाती हो और उसकी अंगुली का अग्रभाग उसके पूरे शरीर पर पड़ता हो अथवा क्रमशः उसके शरीर के किसी भी अंग पर पड़ता हो ।

एतत् स्थान मतो नीता संशयं निर्भयं धनम् ।
यस्माद् बिलेशया:केचित् संहिता नगरादिषु ।८१।

तब उस स्थान पर बिना सन्देह निर्भय होकर इच्छित धन प्राप्त करना चाहिए । जिस बिल से निकल कर कुछ सर्प नगर गाँव आदि स्थानों में समूह रूप से ।

क्रीडन्ति प्रतिमा यत्र निधानं तद्गतं विदुः ।
क्रीडन्ति बहवो यस्य दर्शने च सकृत् सकृत् ।८२।

क्रीड़ा करते हों और जहाँ प्रतिमा की भुजा बार-बार काँपती दिखलाई दे वहाँ धन जानना चाहिए ।

महोदरा या प्रतिमा निधानं तद्गतं विदुः ।
बिलेशया द्विपुच्छास्तु तत्र चास्ति ध्रुवं धनम् ।८३।

जो प्रतिमा बड़े पेट वाली हो तो उसके पेट में अवश्य धन जानना चाहिए अथवा दो मुख तथा जिस बांबी में दो पूंछ अथवा दो मुख वाले सर्प रहते हों वहाँ निश्चित रूप से धन होता है ।

यावत्ससहितो यत्र शैल तद् दृश्यते यदि ।
बहु चैकस्थितं वापि तदन्तर्गत सामिषम् ।८४।

जहाँ पर्वत में दो पूंछ या मुख वाले सर्प बच्चे सहित दिखलायी दें और अगर वे बहुत से या एक भी जिस बिल में रहते हों उसके भीतर से वाँछित धन प्राप्त होता है ।

ऊर्ध्ववक्राप्यधो दृष्टिरेकस्थाधिकरोदिनी ।
जलं स्रवति वा यत्र तत्र वित्तं विनिर्दिशेत् ।८५।

जहाँ ऊपर को मुख किए हुए और नीचे को दृष्टि किए हुए अधिक रोने वाली, नेत्रों से आँसू रूप जल बहाने वाली अकेली मूर्ति हो वहाँ धन अवश्य खनन से प्राप्त होता है ।

अश्रुपूर्णमुखी देवी मातृका यत्र दृश्यते ।
निधानं तत्र विज्ञेयं शीघ्र साध्यं न संशयः।८६।

जहाँ आँसुओं से भरी मुख वाली देवी दिखलायी दें वहाँ शीघ्र ही सरलता से प्राप्त होने वाला धन जानना चाहिए, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है ।

एकैव प्रतिमा यत्र माता भवति तत्तले ।
तत्र वित्तं बिजानीयान्मन्त्र विघ्न विवर्जितम् ।८७।

जहां देवी की एक ही प्रतिमा हो उसके नीचे मंत्र प्रयोग के बिना भी निर्विघ्न रूप से धन प्राप्त हो सकता है।

विकृत प्रतिमा यत्र सप्ताश्रं पद्मपाणिका।
तस्याः पादतले विद्यात् कोटिसंख्य धनं बृहत् ।८८।

जहाँ सात कमल दल हाथ में लिए हुये कोई कुरूप अथवा टूटी फूटी प्रतिमा हो उसके पैरों के नीचे करोड़ संख्यक बहुत धन होता है।

एक नेत्रा भवेद् यत्र देवी मातापराजिता।
तत्र पञ्चसस्त्राणि साधयेद् बलिदानतः ।८९।

जहाँ एक नेत्र वाली देवी अपराजिता माता हों वहाँ किसी पशु की बलि के द्वारा पाँच हजार मुद्रा प्राप्ति का उपाय करे।

ऊर्ध्ववक्त्रा भवेद् यत्र देवी तत्रधनं तयोः।
मातृमण्डल मध्यस्थं यत्रान्यद् रूपकं भवेद् ।९०।

जहाँ देवी ऊपर को मुख किए हुये हो और उसका मातृ-मण्डल से भिन्न रूप हो तो उसके पैरों के नीचे धन अवश्य होता है।

सहस्त्रैकं मतं वित्तमुद्धरेद् विघ्न वर्जितम्।
ध्वजं मीन समाकारः लम्वयद् यत्र दृश्यते ।९१।

जहां ध्वजा तथा मछली के समान आकार का लम्बा कोई चिन्ह दिखलायी दे वहाँ से एक हजार नग का धन प्राप्त होता है।

घटस्थं तत्र जानीयाद् वित्तमीश्वर भाषितम्।
मुसलोलखलाकारः प्ररोहो यत्र दृश्यते ।९२।

जहाँ वृक्ष में मूसल अथवा ओखली के आकार की शाखा दिखलायी पड़े वहाँ घड़े में रखा हुआ धन जानना चाहिए, यह भगवान शंकर का कथन है।

दशसाहस्त्रकं वित्तं तदधो लभ्यते ध्रुवम्।
कुम्भील मकरे कोष्ठस्वगच्छ वृषाकृति।९३।

जहाँ कुम्भील (नाक) मगर, बैल अथवा साँड की चलती हुई आकृति बनी हो तो उसके पेट में तथा उसके नीचे दस हजार नग का धन अवश्य प्राप्त होता है।

खर्जूर फल संकाशा तथा ताल फलोपमा।
वाहमिश्र फलाकारैर्जम्बूक फल सन्निभैः।९४।

जहाँ (वृक्ष में) खजूर का फल और ताड़ वृक्ष के फल के समान तथा वाहमिश्र फल के आकार का तथा जामुन के वृक्ष के फल के बराबर।

माषाकृतिः प्ररोहः स्यात् तदधः संस्थितो निधिः।
भौमानामन्तरिक्षे तु लक्षणं समुदाहृतम्।९५।

उड़द के दाने के समान शाखा हो तो उसके नीचे अवश्य धन होता है। यह भूमि पर होने वाले आकाश सम्बन्धी लक्षण बतलाए गए हैं।

अग्नि लक्षण।

हेमवर्ण गवा ज्वाला छत्राकारेण दृश्यते।
निधि ज्वाला गलेक्षेयः साधयेतत विधानतः।९६।

जहाँ सुवर्ण के समान रंग वाली ज्वाला छत्री के आकार की दिखलायी दे तो ज्वाला के क्षीण होने पर विधिपूर्वक धन प्राप्त किया जा सकता है।

ज्वाला मात्रं हिरण्याभं यत्र स्यात् तत्र निश्चितम् ।
सहस्त्रद्वितयं विद्वानादिशेद विचारतः ।९७।

जहां सुवर्ण की आभा वाली केवल ज्वाला हो वहाँ निश्चित ही दो हजार नगद का धन विद्वान पुरुष प्राप्त कर सकता है।

हेमाभा छत्र रुपेण यत्र ज्वाला भवेद् भुवि ।
पुरुषस्य प्रमाणेन तत्र वित्तं न संशयः ।९८।

जिस भूमि में सुवर्ण की आभा वाली ज्वाला छत्र रूप में मानव की लम्बाई के बराबर उठती हो वहां से विना सन्देह धन प्राप्त होता है।

यत्र व्यक्ता भवेज्ज्वाला विविधा तत्र लक्षयेत् ।
कोटयर्धं रत्न संमिश्रं वित्तं विद्यान्नसंशयः ।९९।

जहाँ अनेक प्रकार की ज्वालाएँ स्पष्ट रूप से दिखलायी दें वहाँ रत्न सहित आधा करोड़ नग होता है, यह निश्चित है।

प्रदिशेन्निधि मानीय पर्वतं वा तिरोहिति ।
धूम्राभा कृष्णवर्णभा ज्वाला सूक्ष्मा तटत्प्रभा ।१००।

जहाँ पर्वत में धुएँ के वर्ण की अथवा कृष्ण वर्ण की सूक्ष्म ज्वाला बिजली की चमक के समान बार-बार दिखलायी दे वहाँ पर धन अवश्य जानना चाहिए।

अलसी पुष्प संकाशा सिन्दूर सदृशा पि वा ।
नव ज्वाला तु सा ज्ञेया वर्जनीयातिदूरतः ।१०१।

यदि अलसी के पुष्प के समान अथवा सिन्दूर के समान ज्वाला दिखाई दे तो उसे नवीन ज्वाला समझ कर वह स्थान दूर से ही छोड़ देना चाहिए।

नक्र मण्डूक नकुल कूर्माकारास्थि भस्मनाम् ।
वल्मी तरु पुलेऽखानि यत्र तत्र तथा निधिः ।१०२।

जहाँ मेढक, नाका, नेवला और कछुए के आकार की हड्डियाँ तथा भस्म वमी वाले वृक्ष खोदने पर मिलें तो वहाँ पर धन अवश्य होता है ।

निर्णयेन शिलोत्पन्ना मुसली स्थूलमूर्ध्वजा ।
ऊर्ध्व सीमाथवा यत्र दृश्यते प्रतिमा क्वचित् ।१०३।

जहां निश्चित रूप से शिला से उत्पन्न मूसली स्थूल रूप से ऊपर हो अथवा शिला की मूसली स्थूल रूप से ऊपर को हो, अथवा ऊपर को उठे हुए मोटे बालों वाली कोई प्रतिमा दिखाई दे ।

प्रतिमा लक्षण

षट्सहस्त्राणि तत्कुक्षौ सञ्चितानेन उच्यते ।
रेणुका नार्दिका चण्डा चण्डोत्पल समन्विता ।१०४।

उसकी कोख में छः हजार नग का संचित धन प्राप्त होता है । और धन प्राप्ति के लिए रेणुका, नार्दिका, चोर और चोर के फूल सहित सबको इकट्ठा कर ।

पिष्ट्वा तक्रेण तत्कुक्षि तल्लेपात्तत्र भेदकः ।
यत्र दृष्टिर्भवेल्लीना प्रतिमायां विनिर्दिशेत् ।१०५।

मट्ठे के साथ पीस कर कुक्षि को भेदन करने वाला लेप उसकी कुक्षि पर लगा जिस प्रतिमा को देखने से उसमें दृष्टि लीन हो जाए तो यह निर्देश करे कि ।

निधानं तत्र घोरेण बलिनान्नेन साधयेत् ।
शिरः कील समायुक्तं प्रतिमायां भवेत् क्वचित् ।१०६।

वहाँ पर प्रचुर धन है, अतएव अन्न की बलि के द्वारा उसकी प्राप्ति का उपाय करना चाहिए। और जहाँ कहीं प्रतिमा में कील युक्त शिर हो।

तस्याः शिरसि जानीयात् पूर्वयोगेन चोद्धरेत्।
एकांगा व्यंगता सा चेत् तस्याः पादगतं धनम्।१०७।

उसके शिर से धन प्राप्त होना चाहिए और अन्न की बलि देकर धन प्राप्त करना चाहिए। इसके अतिरिक्त जहाँ एक अंग वाली या अधिक अंग वाली मूर्ति हो तो उसके पांव के नीचे धन अवश्य होता है।

छत्रं प्रदृश्यते यत्र विकृतं यस्य कस्यचित्।
तत्तले संस्थितं वित्तं जानीयाद विचारतः।१०८।

जहाँ किसी का भी खण्डित छत्र दिखलायी दे उसके नीचे अवश्य ही धन छिपा होता है।

बिन्दु युक्ता प्रशोणा च प्रतिमा संस्थिता भवेत्।
तत्कुक्षि संस्थितं वित्तमवश्यं शवरोऽब्रवीत्।१०९।

जहाँ बिन्दु सहित और लाल रंग की मूर्ति स्थापित हो उसकी कोख में अवश्य धन होता है, यह भगवान शंकर का कथन है।

स्वबाहु मीक्षमाणा तु प्रतिमा यत्र दृश्यते।
तस्या बाहुगतं वित्तं सहस्त्रैकं न संशयः।११०।

जहाँ अपनी बाहु को देखती हुई कोई मूर्ति दिखलायी दे उसके बाहु के भीतर एक हजार नग का धन निश्चित होता है।

त्रिशूलं पद्सं वापि यस्या उरसि दृश्यत।
तत्कुक्षि संस्थितं वित्तं शतद्वय मुदाहृतम् ।१११।

जिस प्रतिमा के हृदय में त्रिशूल या खडग (तलवार) दिखलायी दे उसकी कुक्षि में दो सौ नग का धन होता है।

दर्दु रो मस्तके यस्याः प्रतिमायाः प्रदृश्यते।
शतानि पञ्च वित्तस्य तत्रस्थाने शिवोदितम् ।११२।

जिस प्रतिमा के मस्तक में मेंढक का चिन्ह हो उस स्थान में पाँच सौ मुद्रा का धन होता है यह भगवान शंकर ने कहा है।

एकोन्नतं भवेद् यत्र प्रतिमा चारुहासिनी।
तस्याः स्तनगतं वित्तं विघ्नं न स्याच्छतद्वयम् ।११३।

जिस काम विहाम मूर्ति का एक स्तन विशेष रूप से उठा हुआ हो उसके उस स्तन से दो सौ नग का धन निर्विघ्न रूप से प्राप्त किया जा सकता है।

शिरोद्वयं भवेद् यस्य तस्य मस्तक संस्थितम्।
सहस्त्रैकं धनं विद्धि तद्दृष्टं तत् प्रसाधयेत् ।११४।

जिस मूर्ति के दो शिर हों उसके मस्तक में एक सहस्त्र मुद्रा का धन होता है, यह देख कर उसकी प्राप्ति का उपाय करे।

काणा कुब्जा भवेत् तस्याः काणाया लोचने शतम्।
कुब्जा पादतले वित्तं ग्राह्यं मन्त्रौषधे विना ।११५।

जो प्रतिमा कानी कुब्जी हो तो उस कानी प्रतिमा के नेत्र में एक सौ मुद्रा का धन होता है और कुब्जी प्रतिमा के पैर के नीचे धन अवश्य होता है जो औषधि और मंत्र से अवश्य प्राप्त किया जा सकता है।

पाश हस्ता नराकारा प्रतिमा यत्र दृश्यते ।
तत्र पंचसहस्त्राणि साधयेद् विघ्नवर्जितम् ।११६।

जहाँ पुरुषाकार की प्रतिमा हाथ में पाश लिए दिखलायी दे वहाँ पर पाँच सहस्त्र मुद्रा का धन विघ्न रहित होकर प्राप्त करने का उपाय करना चाहिए ।

नाभिहीनं च यद् रूपं दृश्यते नाभिदेशत: ।
निर्विघ्नं वित्तं मुद्दिष्टं बलि मन्त्र विवर्जितम् ।११७।

जिस मूर्ति की नाभि दिखलायी दे उसके नाभि स्थान में बिना बलि तथा मंत्र के ही निर्विघ्न रूप से धन प्राप्त किया जा सकता है ।

पादमाक्रम्य पादेन जंघिका चाथ जंघयो: ।
शतानिपञ्च तिष्ठन्ति शंख पद्मेन संशय ।११८।

जो मूर्ति पैर से पैर को और एक जंघा से दूसरी जंघा को दबाती हुई हो वहाँ अगणित धन होता है इसमें कोई सन्देह नहीं है ।

निगलं वध्यते दृष्ट्वा स्त्रियो वा पुरुषोऽथवा ।
प्रतिमा कोटि संख्याकं धनं तत्र विनिर्दिशेत् ।११९।

जिस स्त्री या पुरुष की प्रतिमा का गला बंधा हुआ दिखलायी दे वहाँ एक करोड़ नग के धन का निर्देश करे ।

कुञ्चितौ चरणौ यस्य प्रतिमा यत्र दृश्यते ।
सहस्त्र पंचकं तस्य पादाधस्तिष्ठति ध्रुवम् ।१२०।

जहाँ मूर्ति के चरण सिकुड़े हुए दिखलायी दे उस प्रतिमा के पैरों के नीचे पांच हजार नग का धन निश्चित ही होता है ।

श्मशाने यदि वा रथ्ये बाल वृक्षे चतुष्पथे ।
अलिंग प्रतिमा: सत्वं स्थितेंऽशं तद्‌गतं धनम् ।१२१।

अगर श्मशान में या मार्ग में छोटे वृक्ष के नीचे अथवा चौराहे पर आलिंगन स्त्री-पुरुष के लक्षण या अंगों रहित बलवान प्रतिमा स्थित हो तो उसके भीतर में धन होता है।

ऊर्ध्वबाहुरतिक्रूरा प्रतिमा तत्र दृश्यते ।
अनिर्दिष्टं भवेद् वित्तमविघ्नं तत्तले स्थितम् ॥

जहाँ ऊपर को भुजा उठाये अत्यन्त क्रूर रूप की खण्डित मूर्ति दिखलायी दे तो उसके नीचे अपार धन होता है जो विघ्न रहित प्राप्त होता है।

अजस्य प्रतिमा यत्र खड्‌ग हस्ता प्रदृश्यते ।
तस्या: स्कन्धे स्थितं द्रव्यं सहस्त्रं विघ्नवर्जितम् ॥

जहाँ ब्रह्मा, विष्णु, शिव अथवा कामदेव की मूर्ति हाथ में खड्‌ग लिए दिखलाई दे तो उसके कन्धे में एक सहस्त्र नग का धन विघ्न रहित प्राप्त होता है।

ऊर्ध्वकेशा भवेद यत्र गणेश प्रतिमा यदि ।
सहस्त्रपञ्चकं तस्या: शिरोधो निर्दिशेद् बुध: ॥

जहाँ ऊपर को केश वाली अगर गणेश जी की मूर्ति हो उस के सिर के नीचे के भाग में पाँच हजार नग के धन का निर्देश करें।

अजरूपा त्रिनेत्रस्य प्रतिमा यत्र दृश्यते ।
चत्वारिंशत् सहस्त्राणि तत्तले फलमादिशेत् ॥

ब्रह्मा के रूप की अथवा त्रिनेत्र शंकर के रूप की मूर्ति जहाँ

दखलाई दे तो उस प्रतिमा के नीचे चालीस हजार मुद्रा का धन सम्भव है।

प्रासादे प्रतिमा यत्र जल्पति श्रूयते यदि।
निफानं तत्र विज्ञेयं बलि मन्त्रेण साधयेत् ॥

जहाँ महल में बोलती हुई प्रतिमा प्रतीत हो तो वहां धन जानना चाहिए और बलि तथा मन्त्र द्वारा उस धन को प्राप्त करने का उपाय करना चाहिए।

त्रिपाद प्रतिमा यत्र चक्र हस्ता प्रदृश्यते।
हस्तमात्रोदये वित्तं निर्विघ्नं साधयेत् बुधः॥

जहाँ चक्र हाथ में लिए तीन पैर की मूर्ति बोलती हुई दिखलाई दे तो वहाँ विघ्न रहित धन प्राप्त हो सकता है।

एक पादा भवेद् यत्र प्रतिमा दृश्यते वदेत्।
सहस्त्रं तत्र निर्दिष्टं जयात् स्पृष्टावशीर्यंते ॥

जहाँ पर पैर वाली मूर्ति बोलती हुई दिखलाई दे वहाँ एक हजार नग का धन जानना चाहिए, यह धन यात्रा जप के द्वारा प्रतिमा को स्पर्श करने मात्र से प्राप्त होता है।

नागस्य प्रतिमा यत्र दृश्यते नरस्वाहना।
अफणा सर्पशीर्षा वा निधि तत्र समादिशेत् ॥

जहाँ मनुष्य की सवारी वाली नाग की प्रतिमा किसी मूर्ति में दीखे और सर्प का सिर फन रहित हो वहाँ धन का निर्देश करे।

अथ तृतीयः परिच्छेदः

परीक्षा लक्षणं वक्षे कृमि पुष्पौषधादयः ।
परीक्षया विना यत्र न्यास स्थानं न दृश्यते ॥

अब छोटे कीड़े, पुष्प और औषधियों के लक्षण दिये जाते हैं क्योंकि इनकी परीक्षा के बिना धन स्थान दिखलाई नहीं देता ।

परीक्षाया विधानेन भौमेयं कर्तुमर्हथ ।
ऋषयो वांछिताः सन्ति सहायाश्चात्र ना सहाः ॥

परीक्षा के विधान के अनुसार सहायकों की सहायता से भूमि सम्बन्धी धन प्राप्त किया जा सकता है जिसकी ऋषिगण भी इच्छा करते हैं कि दूसरों की सहायता के बिना धन प्राप्त नहीं हो सकता ।

वृथा श्रमो भवदेषा तत् परीक्षा न कारयेत् ।
सुपरीक्षा तु कर्तव्या सम्यक् तु फलमिच्छता ।३।

पूर्णरूप से सफलता चाहने वाले व्यक्ति को भली प्रकार से परीक्षा करनी चाहिये, परीक्षा न करने के कारण परिश्रम व्यर्थ हो जाता है ।

प्ररोह प्रतिमायाश्चेत् परीक्षा पत्र दृश्यते ।
प्ररोह मात्रे दृष्टे तु निस्संदेहः परीक्षयेत् ।४।

जहाँ नया पल्लव और प्रतिमा के लक्षणों की परीक्षा कहीं

गई है वहाँ केवल शाखा को देखकर अवश्य परीक्षा करे।

भौमेयं सुपरीक्ष्यं तु संशयच्छेदनाय तु।
प्रशस्तेऽहनि नक्षत्रे सौम्ये सम्वत्सरे गुणे ।५।

सन्देह को दूर करने के लिए कि वहाँ धन है या नहीं ? भूमि की भली प्रकार परीक्षा करे और शुभ दिन, सौम्य नक्षत्र और गुण युक्त सम्वतसर में प्राप्त करें।

मातृवाहा: कर्कटश्च बहवो यत्र संगिनः।
यस्मिन् सम्पिण्डिता: सर्वे तत्राप्येव न संशयः ।६।

जहाँ बहुत से मातृवाह (एक विशेष प्रकार का ८ पैसे वाला कीड़ा) और केकड़े सब एक साथ मिलकर रहते हों जिनमें सब एक ही जाति के हों, वहाँ भी सन्देह नहीं करना चाहिये।

निधि तत्र विजानीयान्नात्र कार्या विचारणा।
आत्मनां तु विपक्षास्तु मल्लिका दधि लेपिता: ।७।

वहाँ सम्पत्ति अवश्य जाननी चाहिये ऐसी दशा में अपने शरीर को अलग मल्लिका (बेल मोतिया) के फूलों में दही का लेपन करें।

अधोमुखा: प्रतिष्ठाप्य सन्ध्यायां पञ्च सप्त वा।
मन्त्रेणानेन संस्पृश्य स्थाप्यन्ते मल्लिकास्तदा ।८।

फिर सायंकाल में मल्लिका के उन पाँच या सात फूलों का नीचे को मुख कर उन्हें स्पर्श करते हुए पृथ्वी मन्त्र से अभि-मन्त्रित करके पृथ्वी में स्थापित करे।

वसु यद्यस्ति तत्रस्थं दधिवर्णं विमुञ्चति।
पीतं वा रक्त कृष्णं वा अन्यद्वात्र भवेद यदि ।९।

अगर वहाँ धन है तो दही का रंग सफेद बहुत हो जायेगा। और अगर वह दही पीला, लाल, काला या अन्य किसी दूसरे वर्ण का हो जाए।

ततो निस्संशयो भूत्वा तत्र तन्मल्लिका भवेत्।
तत्रारम्भं ततः कुर्यात् तद् दष्टवोपस्थिता जनाः।१०।

तो मल्लिका के फूलों को देखकर सन्देह रहित वहाँ से धन प्राप्त करें उपस्थिति मनुष्य वहाँ कार्य शुरू करें।

कार्यासास्थिमयान् मूलान् गोमूत्रेण प्रलेपयेत्।
आमं शरावं सन्दीप्य दत्वा भूमौ निधापयेत्।११।

या फिर सायं को बिनौले और कपास की जड़ को गोमूत्र से लेपन करे और कच्चे सकोरे में जलाकर भूमि में रख दे।

प्रभाते यदि सम्पश्येदग्निदग्ध समप्रभम्।
व्यक्तं तत्र विजानीयात् कर्म तत्र समारभेत्।१२।

प्रातःकाल में अगर सकोरा अग्नि से दग्ध दिखलाई दे तो वहाँ से धन अवश्य प्राप्त होता है।

शिखिपित्तं द्वै हरिद्रे मरिचोदुम्बरं तथा।
कार्यासास्थि तुषाश्चैव समभागं विलेपयेत्।१३।

अगर मूर्ति हो तो मोर पित्त दो और हल्दी, मिर्च, गूलर, बिनौले तथा भूस समभाग लेकर प्रतिमा लेकर लेपन करना चाहिए।

शिरः कण्ठ कपालानां प्रलेपोऽयं विवर्णकः।
निधिं तत्र विजानीयाद विशेषेणोपलक्षितः।१४।

यह विविधवर्ण का लेप प्रतिमा के शिर, कण्ठ और कप

के लिए लेप करने के पश्चात् प्रतिमा में अगर विशेष लक्षण दिखलाई दें तो वहाँ धन जानना चाहिए।

हरिद्रा कल्क संस्पृष्टं क्षीरं भूमौ निषेचयेत्।
प्रभाते भस्म संकाशा भूमिः स्यात् तत्र निश्चितम्।१५।

अथवा संध्या में पिसी हुई हल्दी को दूध में मिलाकर धन के सन्देह वाली भूमि पर सिंचन करे। प्रातःकाल अगर वह दूध मिश्रित हल्दी भस्म राख के समान दिखलाई दे तो उस भूमि में निश्चित ही धन होता है।

पद्मपत्राणि चालोक्य शंकास्थाने निधापयेत्।
यस्यैरण्डस्य पत्राणि पूर्णानि निशितानि च।१६।

इसके अतिरिक्त धन होने न होने की शंका होने पर संध्या समय कमल के पत्तों को स्थापित करे और जिस एरण्ड के पत्ते पूरे तथा तीक्ष्ण हों उन्हें भी कस कर रख दे?

श्वेता भूमिर्यथान्यानि लक्षणेन च लक्षयेत्।
गन्धपाषाणभागेन हरितालं मनश्शिला।१७।

प्रातःकाल अगर वह भूमि श्वेत दिखाई दे और अन्य लक्षण भी दिखलाई देते हों तो वहाँ धन अवश्य होता है। गन्धक, हरिताल और मैनसिल समभाग लेकर।

तच्चूर्णं पद्मपत्रेण वर्त्तिकां पूजयेद बुधः।
औदुम्बर फलं गुह्य सुरया सह पेषयेत्।१८।

उक्त तीनों वस्तुओं का चूर्ण और गूलर का फल मद्य के साथ पीसकर कमल के पत्ते में बत्ती बनाकर जलावे और उस का पंचोपचार से पूजन करे।

स्वभावाद विपरीतश्चेत् तत्र वित्तं विनिर्दिशेत्।
शालिपिष्टमयीं वर्त्ति तैल मिश्रां विचक्षणः।१९।

अगर उस बत्ती का प्रकाश शंका स्थान में स्वभाव के विपरीत दिखाई दे तो वहाँ धन अथवा वासमती चावल के आटे को तिल के तेल में मिलाकर और उसकी बत्ती बनाकर।

सुरया सह सम्मिश्रं शंका स्थाने निधापयेत् ।
रात्रौ वाऽस्तमिते काले दीपवत् सम्प्रकाशते ।२०।

उस बत्ती को मदिरा में भिगोकर जलाये और शंका वाले स्थान में रखे। रात में अथवा सूर्यास्त के पश्चात् वह बत्ती दीपक की तरह अच्छा प्रकाश देती है।

भौमं तत्र विजानीयाद् भगवानीश्वरोऽब्रबीत् ।
स्थाप्य नीवारपिष्टं तु दधिमिश्रं विचक्षणः ।२१।

अगर प्रकाश का रंग स्वभाव के विपरीत हो तो वहाँ धन जानना चाहिए यह भगवान शिव ने कहा है अथवा संध्या समय शंका स्थान में नीवार धान्य (पसही के चावल) का आटा दही में मिलाकर रख दें।

स्वभावाद् विपरीतश्चेत् तत्र वित्तं विनिर्दिशेत् ।
जाती मुकुलकं वापि कदम्ब मुकुलोऽथवा ।२२।

प्रातःकाल में अगर उसका रंग स्वभाव के विपरीत हो तो वहाँ पर धन का निर्देश करे।

सुरायाः क्षीर सम्पृक्तो परीक्षां तत्र कारयेत् ।
पायसं तैल सम्मिश्रं स्थापयेद् रविवासरे ।२३।

मद्य मिश्रित दूध डालकर रखे और प्रातःकाल वहाँ परीक्षा करे अगर स्वभाव के विपरीत हो तो वहाँ धन का निर्देश करे। अथवा मिट्टी के पात्र में खीर में तेल मिला कर रविवार को शंका स्थान में सन्ध्या समय रख दे।

धनं तत्र विजानीयाद् विवर्णं तु यदा भवेत् ।
जम्बूकत्वक् कषायेतु तिल तैलं विभावयेत् ।२४।

प्रातःकाल में अगर उस खीर का रंग बदल जावे तो वहाँ धन जानना चाहिए अथवा जामुन के वृक्ष की छाल के काढ़े में तिलों का तेल मिलाकर शंका स्थान में सन्ध्या को मिट्टी के कोरे पात्र में रख दें।

दधि गुण्याश्च समायुक्तं विपरीतं धनं भवेत् ।
प्रातःकाले तु विप्रेन्द्राः ! परीक्षा कतिथा मया ।२५।

सन्ध्या समय अथवा दही और गुड़ मिलाकर शंका स्थान में रखे, प्रातः उसका विपरीत वर्ण होने पर वहाँ धन सम्भव है।

सर्षपं तिलपिष्टं तु सुरया सह पेषयेत् ।
स्वभावाद विपरीतश्चेत् तत्र वित्तं विनिर्दिशेत् ।२६।

पीली सरसों और कुटे हुए तिल मदिरा के साथ पीसे और शंका स्थान में मिट्टी के पात्र में रखे, प्रातः अगर उसका रंग स्वभाव के विपरीत हो तो वहाँ धन की सम्भावना है।

सर्प निर्मोचनं ग्राह्यं हरितालं मनश्शिला ।
पाषाण चूर्णेन क्षौद्रेण सह पेषयेत् ।२७।

या फिर सांप की कैंचुली, हरिताल, मैनशिल और गन्धक इन सब वस्तुओं को बराबर-२ लेकर चूर्ण बनावे और उसे शहद के साथ पीसकर बत्ती बनावे।

उपवासी शुचिर्भूत्वा काले वर्ति प्रदापयेत् ।
गोधूमैर्वटमापूर्य निखनेच्छंकितस्थले ।२८।

और बिना भोजन किए पवित्र होकर सन्ध्या समय शंका

स्थान में उस बत्ती को जलावे अगर उसका प्रकाश स्वभाव के विपरीत हो तो वहाँ धन अवश्य होना चाहिए। सन्ध्या समय शंका स्थान में गड्ढा खोदकर गेहूं के आटे से भरा हुआ घड़ा गाड़ें।

गोक्षीरेणाभिसम्पेष्य राजिकान् कोद्रवांस्तिलान्।
शणबीजानि मृत्स्थाने शंकिते तैर्निषेचयेत्।२९।

और राई, कोदों, तिल और सन के बीज समान मात्रा में लेकर गौ के दूध में अच्छी तरह पीसकर उसे धन की संभावना वाले स्थान में भली प्रकार छिड़कें।

सुदर्शन समायुक्तं नृहरिं तत्र पूजयेत्।
तस्मिन् हेमप्रभे दृष्टे प्रभाते निधिमादिशेत्।३०।

फिर वहाँ सुदर्शन चक्र सहित 'नृसिंह भगवान' का पंचोपचार द्वारा पूजन करे। प्रातःकाल उस स्थान को सुवर्ण के समान चमकता देखकर वहाँ धन का निर्देश करे।

अर्जुनस्य कदम्बस्य लोध्रस्य खदिरस्य च।
ब्रह्म वृक्षस्य पत्राणि काञ्चिके नाति पेषयेत्।३१।

अथवा सन्ध्या को शंका स्थान में अर्जुन, कदम्ब, लोध, खैर और पीपल इन सब वृक्षों के पत्तों को हल्दी के साथ पीस कर रख लें।

निशायां लेपयेत् तेन भूमिके मन्त्रवित् ततः।
प्रभाते दृश्यते भूमिस्तत्र वित्तं विनिर्दिशेत्।३२।

और रात्रि में शंका स्थान की धरती पर, भूमि मन्त्र को जानने के द्वारा उसका लेपन करे। प्रातः उस स्थान को सुवर्ण के समान चमकता देखकर वहाँ धन का निर्देश करे।

कुंकुमस्य करञ्जस्य नालिकेरस्य पल्लवान्।
शुण्ठ्याश्च काञ्चिकेनाथ पिष्ट्वा भूमिं प्रलेपयेत् ।३३।

केशर, करंज और नारियल के नये पत्ते सोंठ और हल्दी के साथ पीसकर भूमि मन्त्र से शंका स्थान में उनका लेपन करें।

प्रभाते दृश्यते भूमिस्तत्र वित्तं विनिर्दिशेत्।
विल्वं कदम्ब मादाय काञ्चिकेनाथ पेषयेत् ।३४।

प्रातः उस भूमि को सुवर्ण के समान देखकर धन का निर्देश करे अथवा बेल और कदम्ब की छाल या फूल हल्दी के साथ पीसकर।

प्रदेश लेपयेत् तेन विवर्ण धन मादिशेत्।
सिंहपादांकितं पदं प्रलेपाद् यत्र दृष्यते ।३५।

शंका स्थान में सन्ध्या समय भूमि मन्त्र से उसका लेपन करे। प्रातः अगर उस भूमि का रंग स्वभाव के विपरीत दिखलाई दे तो वहाँ धन का निर्देश करे अगर उस शंकित स्थान पर उक्त लेपन करने से प्रातः शेर के पैरों के चिन्ह दिखाई दें तो।

सिंहिका व्याघ्र पादाश्च तत्र वित्तं न संशयः।
मुखे मुखे सहस्त्राणि ज्ञातव्यानि चतुर्दशः ।३६।

शेरनी अथवा शेर के पँरों के निशान होने पर वहाँ अवश्य ही धन होता है वहाँ १४ हजार नग का धन जानना चाहिए।

अलसी पुष्प संकल्के लिप्त मात्रे विशीर्यंते।
नक्र मण्डूकयोर्मेदो युक्तास्तक्रेण लेपिता ।३७।

नाका और मेंढक की चर्बी के साथ मट्ठा और पिसे हुए अलसी के फूल मिलाकर लेप करने से पत्थर भी फूट जाता है।

शिला: स्फुटन्ति मन्त्रेण पुण्डरीकेण मन्त्रिणा ।
अनेन मनुना ग्राह्य निधानं मन्त्रिणा सदा ।३८।

पुण्डरीक मन्त्र के ज्ञाता द्वारा पुण्डरीक मन्त्र का प्रयोग करने से शिला फूट जाती है। इस प्रकार पुण्डरीक मन्त्र को जानने वाले के द्वारा धन प्राप्त करें।

दारु संघद् पट्टानां शिलानां च विभेदत: ।
विघ्न शान्तिश्च कर्तव्या पुण्डरीकेण मन्त्रिणा ।३९।

काष्ठ का पट्टा और शिला के सम्मिलित होने पर पुण्डरीक मन्त्र का ज्ञाता पुण्डरीक मन्त्र के द्वारा काष्ठ के पट्टे और शिला के भेद से होने वाले विघ्नों को शान्त करे।

कृष्णायां तु चतुर्दश्यां तत्र नारायणं स्मरन् ।
मनुना ग्राह्यकं देवं निदानं मन्त्रिणा सह ।४०।

इस प्रकार कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में धन स्थान पर विष्णु भगवान का स्मरण करते हुए मन्त्र जानने वाले के साथ विधिपूर्वक धन को प्राप्त करे।

पुण्डरीक मन्त्र विधान

कृष्णायां तु चतुर्दश्यामहोरात्रोषितो नर: ।
नीलोत्पलैर्महेशानं पूजयेत् स शुचिर्भवेत् ।४१।

पुण्डरीक मन्त्र को सिद्ध करने का उपाय इस प्रकार है। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में पवित्र होकर दिन और रात में नीले कमलों से भगवान शंकर का पूजन करें।

मन्त्रायुतं जपो होमं दशांशेन विधीयते ।
तिलैर्गव्याज्य संयुक्तस्तत्र सिद्धो भवेन्मनु: ।४२।

इसके उपरान्त दस हजार पुण्डरीक मन्त्र का जाप करे फिर उसका दशांश तिल और गोघृत से हवन करे तब मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

काष्ठपट्टा प्रकरण

पञ्चहस्तो यदा पट्टो दृश्यते यत्रकुत्रचित्।
हरितांगार वर्णाभा त्रिशूलं वृषभाकृतिः ।४३।

जहाँ कहीं पाँच हाथ की लकड़ी का तख्ता दिखलाई दे और उस पर हरे या लाल रंग की कान्ति वाली बैल और त्रिशूल की आकृति बनी हो।

सहस्त्राणां च पञ्चाशद् वित्तं कोणेषु संस्थितम्।
लिप्तांगकमथासीनः पुण्डरीकेण जापिना ।४४।

तो उसके कोणों में पचास हजार नग का धन रखा होता है। पुण्डरीक मन्त्र को सिद्ध करने वाला व्यक्ति वहाँ बैठ कर एकाग्र मन से पुण्डरीक मन्त्र का जाप करे।

सफला जायते शीघ्रं निधिर्वज्र हता यथा।
तत्र वातायने देवीं शिखरं योजयेद् बुधः ।४५।

जैसे इन्द्र देव वज्र मार कर शीघ्र सफलता प्राप्त करते हैं उसी प्रकार पुण्डरीक मन्त्र के जप करने वाले व्यक्ति को शीघ्र से सफलता प्राप्त होती है। वहाँ बुद्धिमान पण्डित को ऊँचे झरोखे से या खिड़की में लक्ष्मी की स्थापना कर देनी चाहिये।

अष्ट हस्ता यदा पट्टा कोकाकारा मनोहरा।
जालिनी ब्रह्मदण्डा च निर्यासं कमलोद्भवः ।४६।

जहाँ ८ हाथ का तख्ता हो तो सुन्दर कोकारा जो तालाबों

में या झीलों में ही उत्पन्न होती है नीली कुमुदिनी जालिनी घिया, तुरई, ब्रह्मदण्डी और कमल का रस।

एभिर्विलितः पदृो रंगिणां मन्त्रथोगतः।
शीर्यंते योगतो वज्रसाधितः पर्वतो यथा ।४७।

इन सब द्रव्यों से पुण्डरीक मन्त्र के द्वारा तख्ते को रंग कर उस पर पुण्डरीक मन्त्र लिखने से तख्ता शीघ्र ऐसे नष्ट हो जाता है जैसे वज्र से पर्वत नष्ट हो जाता है।

धुर्धूरैः कल्कहं देहलशुनं सुरदारु च।
विलंकं हस्तिमूत्रेण पिष्ट्वा मन्त्री विलेपितः ।४८।

अथवा धतूरा, पत्ते सहित लहसुन, देवदार और वायविडिंग को हाथी के मूत्र में पीसकर पुण्डरीक मन्त्र जानने वाले के द्वारा तख्ते पर लेपन करने से—

द्विधा सञ्जायते पदृं ब्रह्मशाप हतो यथा।
उदधृतो मालिनी मंत्रं सर्व पदृा विभेदनम् ।४९।

तख्ता ऐसे दो टुकड़े हो जाता है जैसे ब्राह्मण का शाप किसी को नष्ट कर देता है।

कृष्णे श्वेतधिवः पट्टो रेखान्तो यदि दृश्यते।
सहस्त्र पञ्चसंख्या च तस्य मध्ये स्थितं धनम् ।५०।

काले रंग के पट्टे में अगर श्वेत रेखा दिखलाई दे तो उसके बीच में पाँच सहस्र नग का धन है।

आरनालेन सम्पिष्टं मुनिवृक्षस्यपल्लवम्।
मालिनी मन्त्र जप्तेन तल्लेपेन धनोदयम् ।५१।

कांजी के साथ अगस्ति वक्ष के कोमल पत्तों को पीसकर

मालिनी मन्त्र के जाप के साथ पट्टे पर लेपन करने से धन प्राप्त होता है।

आरग्वधस्यमूलानि मुनिवृक्षस्यपल्लवम्।
वटवल्कल लोध्रं च मञ्जिष्ठा च समासतः।५२।

अमलतास की जड़, अगस्ति वृक्ष (मौल श्री) के कोमल पत्ते, वटवृक्ष की छाल, लोध और मजीठ को।

अर सारज सम्मिश्रं कुलत्थं तत्र लेपयेत्।
पिष्ट्वा महिषमूत्रेण पश्चात् तत्र प्रलेपयेत्।५३।

फिर उक्त द्रव्यों में अर (सेवार), सारज (मक्खन) तथा कुलत्थी को मिलाकर और उन सबको भैंस के मत्र में पीस कर धन स्थान के अन्य पट्टों पर लेपन करे।

एवं भव वचो योगि सर्वपद् प्रभेदनम्।
दत्तः त्रिदश भूदेव नक्षत्रं मन्त्र समन्वितम्।५४।

इस प्रकार योगीश्वर शंकर ने अपने वचन से संसार के कल्याण हेतु ब्राह्मणों को देवता और नक्षत्रों से युक्त सब प्रकार के पट्टों को भेदन करने वाले मन्त्र दिए हैं।

छठाँ प्रकरण

यया जयन्ति धीमन्तो वसुधा धरितं धनम्।
तां वदामि महावर्तिमञ्जनान्यखिलान्यपि।५५।

अब जिसके द्वारा बुद्धिमान मनुष्य पृथ्वी में रखे हुए धन को प्राप्त कर लेते हैं उस महावर्तिका को तथा समस्त अंजनों का विवरण प्रस्तुत है।

जीव जाति समं किञ्चिद् यत्र यत्रोपयुज्यते।
जीव स्वरिक्षितं ग्राह्यमथवा काल योगतः।५६।

जहाँ-जहाँ जीव जाति सर्प-केकड़ा आदि का समान रूप से कुछ भी सम्बन्ध है वहाँ जीव जाति से रक्षित धन को शुभ समय के योग से प्राप्त करे।

अर्कतूलमयी वर्तिः श्यामा तैलेन भाविता।
वेष्टिता नागवल्लीभिर्ज्वलन्ती दर्शयेन्निधिम् ।५७।

मदार की रुई की बत्ती तिल के तेल में भीगी और पान में लिपटी हुई प्रज्वलित करने से वह पृथ्वी में छिपे धन को दिखलाती है।

गोधा चुचुन्दरी वचसधा बहु भाविता।
अर्कतूलमयी वर्ति भूमिगां दर्शयेन्निधिम् ।५८।

अथवा गोह और छुछुन्दरी की मज्जा तथा वच को सम भाग में लेकर बारम्बार पीसने पर उससे निकले हुए तेल में मदार की रुई की बत्ती भिगो कर जलाने से वह बत्ती भूमि स्थित धन का स्थान दिखलाती है।

अर्कतूलमयी वर्त्तिर्भेकतैलेन भाविता।
गोश्रृंग स्थापिता दीप्ता पाताले दर्शयेन्निधिम् ।५९।

और भी मदार की रुई की बत्ती भावना द्वारा निकले हुए मेंढ़क के तेल में भिगोकर गौ के सींग पर रखकर जलाने से वह प्रज्जवलित बत्ती पाताल में रखे हुए धन को दिखला देती है।

विभीतैरण्ड तैलेन वसा वकुल कर्कटे।
अर्कतूलमयी वर्तिर्नष्ट द्रव्यं प्रदर्शयेत् ।६०।

बहेड़ा और अरण्डी के तेल में नेवला और केकड़ा की चर्बी मिलाकर मदार की रुई की बत्ती बनाकर जलाने से गुप्त धन दिखाई देता है।

अर्क तूलाहिनिर्मोक तूलमेरण्डजं वसा ।
अर्के तस्यार्जतन्तुश्च तत्कृता वर्त्तिरुत्तमा ।६१।

मदार की रुई, सर्प की कैंचुलो, शहतूत और अण्डज (अंडे से उत्पन्न पक्षी-सर्प-मछलो आदि किसी एक) की चर्बी, इन सब वस्तुओं से बनी बत्ती श्रेष्ठ होती है।

सवर्गस्य वसा प्रच्छे अर्क तूलेन वेष्टयेत् ।
तत्र तावत् पथी कूल: कार्पासेन पुनस्तथा ।६२।

साँप की चर्बी को मदार की रुई में लपेट कर उसे ढक दे, वहाँ अगर पथिक आता हो तो तब तक उसे मार्ग के किनारे रखकर वस्त्र से ढक दें।

वेष्टयेद् वर्म सूत्रेण पुष्यार्के सतु मन्त्रवित् ।
गोश्रृंगेस्थापयेत् पश्चात् तत् तु कालेन तापयेत् ।६३।

फिर भली प्रकार मन्त्रों के ज्ञाता रविवारीय पुष्य नक्षत्र के दिन उस मदार की रुई से लिपटी हुई चर्बी को कच्चे सूत द्वारा कवच की तरह भली प्रकार लपेट कर गौ के सींग पर स्थापित करे, पश्चात समय पर उसे जलावे।

नक्र मण्डूकयोर्मेदो मूलिका वेतसोद्‌भवा ।
वेष्टिता चार्क तूलेन वर्त्तिरेकार्थ दर्शिनी ।६४।

नाका और मेंढ़क की चर्बी तथा बेंत की जड़ को मदार की रुई पर लपेटे यह प्रज्वलित बत्ती भी धन को दिखला देती है।

मूलिका वेतसोद्‌भूता तथा कदलिकोद्‌भवा ।
महामूले त्रयो वर्त्तिरुत्तमा शंकरोदिता ।६५।

कहा है बेंत की जड़ और केले की जड़ इन महामूलों से बनी हुई मदार की रुई की बत्तो ये तीन प्रकार की बत्तियाँ उत्तम हैं।

माघ मासे चतुर्दश्यां कृष्णपक्षे नदी तटे।
शाकोटि सिंहयोर्मूले गृह्णीयात् सकदलाश्चिते।६६।

माघ मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को नदी तट पर रोहिणी नक्षत्र और सिंह लग्न में केले और बेंत की जड़ को ग्रहण करना चाहिए।

कटुतैलेन तूलेन तेन वर्तितयो भवेत्।
महातैलेन संयुक्तं वर्तिं कुर्यात् सदा बुधः।६७।

मदार की रुई की दो बत्तियाँ बनानी चाहिए उसमें से एक बत्ती सरसों के तेल में भिगोकर दूसरी बत्ती को महातेल में भिगोकर तब दोनों बत्तियों को सम्मिलित करके तैयार करें।

माषमात्रे पतन्त्याशु एष साध्यं न संशयः।
कटु तैलेन तद् विद्वान बोधिता निपयेद् यदि।६८।

अगर माशा भर तेल लगी हुई बत्ती जलाने पर शीघ्र ही चूने लगे तो निःसन्देह सफलता प्राप्त होगी और अगर केवल सरसों के तेल की प्रज्वलित बत्तो भी चूने लगे तो इसे भी सफलता समझें।

ज्योतिर्यत्र धनं तत्र निश्चयं निर्दिशेद धनम्।
ज्योतिर्विम्यस्त तैलेन सहस्त्राणामथापि वा।६९।

उक्त तेल की प्रज्वलित बत्ती को स्थापित करने पर जहाँ उसकी ज्योति पड़ती है वहाँ निश्चय ही सहस्त्रों का धन है, ऐसा निर्देश करना चाहिए।

वर्ते प्रजवाल्य मानायाः शिखा तस्मिन्नधोमुखा।
प्रहतैर्महितैः कुर्याच्चूर्णैरेतैः सुपूजितैः।७०।

उक्त बत्ती को प्रज्वलित करने पर अगर उसकी शिखा या

लौ का मुख नीचे को हो तो सम्मानित पारे को ताड़ित करके उसके चूर्ण से उस स्थान पर पूजन करे।

अर्कतूलमयी वर्तिभौमेयं तत्र दृश्यते।
लोह गन्धक गन्धेन चूर्ण्यन्ते त्वर्क तूलकैः ।७१।

मदार की रुई की प्रज्वलित बत्ती पृथ्वी को देखती हो तो वहाँ लोह भस्म, गन्धक और चन्दन का बुरादा चूर्ण करके मदार की दूसरी बत्ती पर लपेटे।

वेष्टयित्वा च सूत्रेण वर्ति कुर्यात् तथा भवेद्।
नागस्य च वसा वापि वातां वर्ति निबोधकः ।७२।

और फिर उस पर कच्चा सूत लपेट कर बत्ती तैयार करे। इसके बाद उस पर सर्प की चर्बी भी लगाकर बत्ती को पूरा करे।

सहाभिमंत्रिता वर्तिः कर्तव्या विघ्नसिद्धये।
परिभाषं भवेत्तस्यात्तावद् वर्ति निबोधके ।७३।

और उस बत्ती को निर्विघ्न सिद्धि के लिए 'ज्वालिनी मंत्र' से अभिमन्त्रित करे। ज्ञानवान व्यक्ति उस बत्ती को उस समय तक न जलावे जब तक वह अभिमन्त्रित न हो जाय।

सुवर्णे पीत वर्णाभा रजते रजतप्रभा।
ताम्रे भवेद् वा ताम्राभा नीलके नीलका भवेत् ।७४।

उस अभिमन्त्रित बत्ती को जलाने पर अगर उसकी ज्योति पीली हो तो सोना, यदि श्वेत हो तो चाँदी, यदि कुछ लाली लिए हुए ज्योति हो तो ताँबा और अगर कुछ नीलक (लोहवर्ण) ज्योति हो तो उस स्थान पर लोहा होता है।

विमिश्रां तु यदा पश्येद् विद्यात् तेषां सुवर्णकम् ।
मनश्शिलां हिंगुलादि तिल तैलेन योजयेत् ।७५।

अगर उस अभिमन्त्रित बत्ती की मिश्रित ज्योति दिखलाई दे तो वहाँ सुवर्ण जानना चाहिए अथवा मैनसिल, शिगरफ और तिल के तेल को मिलावे और

अर्कतूलमयी वर्तिः सर्षपाणामथापिवा ।
ऊर्णासूत्रमयीं वर्तिं भौमेयं तु परीक्षयेत् ।७६।

मदार की रुई की बत्ती पर पिसी हुई पीली सरसों को लपेटे और फिर उस पर ऊन का धागा उक्त तिल के तेल द्वारा बत्ती प्रज्वलित करके ज्योति से धन का परीक्षण करे ।

गन्धपाषाण भागेन हरितालं मनश्शिला ।
पूर्णेन पद्म सूत्रेण वर्तिं कुर्याद् विचक्षणः ।७७।

या फिर मदार की रुई की बत्ती पर गन्धक, हरताल और मैनसिल को समान भाग में पीस कर डाले और फिर कमल नाल का सूत उस पर पूर्ण रूप से लपेट कर बत्ती तैयार करें।

ज्योतिष्मत्यास्तु तैलेन सर्षपेणैव वा पुनः ।
प्रज्वाल्य क्षरिता यत्र योऽभिगच्छेद् ध्रुवं धनम् ।७८।

इसके बाद ज्योति उत्पन्न करने वाले पीली सरसों के तेल में उस बत्ती को डुबोकर धन के ऊपर स्थान पर प्रज्वलित करे, अगर वहाँ बत्ती चूने लगे तो वहाँ निश्चित धन जानना चाहिए ।

कपिलाज्यं सुरान्यानि गोधामेदो मनश्शिला ।
अर्कतूलमयीं वर्तिं महातैलेन भावयेत् ।७९।

मदार की रुई की पत्ती में कपिला (भूरी) गौ का घी, मद्य,

गोह की चर्बी और मैनसिल लपेट कर महातेल से तर करें।

सूचयन्ति च तद्भौममित्याह भगवान शिवः।
चुच्छुन्दरी वसा गोधा गानवल्ल्या प्रभावयेत् ।८०।

यह वत्ती भूमि के भीतर रक्खे धन को सूचित करती है यह भगवान शिव ने कहा है। छछून्दर और गोह की चर्बी तथा पान का प्रभाव।

प्रसूचयन्ति तद् द्रव्य मित्याह भगवान शिवः।
अर्कतूलमयीं वर्तिं महातैलेन भावयेत् ।८१।

भूमि में रखे धन को भली प्रकार सूचित करता है। अर्क (मदार) की रुई की वत्ती महातैल में तर करनी चाहिए। यह भगवान शिव का निर्देश है।

गोधा वसाहि संयुक्तं गोश्रृंगे स्थाप्य दर्शयेत्।
अर्द्ध रात्रे प्रदोषे वा नष्ट मन्वेषयेद् ध्रुवम् ।८२।

और उस बत्ती को गोह की चर्बी से युक्त कर गौ के सींग पर स्थापित करने से पृथ्वी का धन दिखलायी देता है तो अर्द्ध-रात्रि अथवा सन्ध्या समय जब कि सूर्य अस्त हुए हों तब धन को ढूंढ़ने का कार्य अवश्य करना चाहिए।

झष मण्डूक गोधानां वसा चैव मनश्शिला।
पद्मसूत्रमयीं वर्तिं प्रधानं धनसूचकम् ।८३।

मछली या मगर, मेंढ़क और गोह की चर्बी तथा मैनसिल और कमल की नाल के सूत से लिपटी हुई मदार की रुई की बत्ती प्रमुख रूप से पृथ्वी के धन को बतलाती है।

मनश्शिला पद्मसूत्रं फेनं पारावतस्य च।
उलूकस्य वसा युक्तां वर्तिं तां परिभावयेत् ।८४।

कमल की नाल का सूत मैनसिल कबूतर के मुख का फेन और उल्लू की चर्बी से युक्त मदार की रुई की बत्ती पृथ्वी स्थित धन को खोजने में विशेष प्रभावशाली होती है।

कपिलाज्येन संयुक्ता प्रसिद्धा वर्तिरुत्तमा।
गन्धपाषाण भागेन पद्मसूत्रं मनश्शिला।८५।

भूरी गौ का घी, गन्धक कमल नाल का सूत और मैनसिल से युक्त मदार की रुई की बत्ती धरती में स्थित धन को खोजने में उत्तम है।

वसा चैव तु गोधानां नष्ट सन्वेषयेद् ध्रुवम्।
मूषिकस्य वसा युक्ता वर्तिः सन्देह तारका।८६।

गोह और चुहिया की चर्वी से युक्त मदार की रुई से बनी हुई बत्ती नष्ट हुए धन को खोजने में निश्चित ही सन्देह को दूर करती है।

प्रज्वलित बत्ती

आद्यन्तं सूचयेद् वर्तिः कापिलेन तु दीपिता।
दीपे प्रज्वाल्य माने तु लक्षणं तु निगद्यते।८७।

भूरी गौ के घी में मिश्रित मदार की रुई की बत्ती जलाने पर धरती में स्थित धन कहाँ से कहाँ तक है यह बतलाती है। अब दीपक के प्रज्वलित करने पर उसके लक्षण कहते हैं।

विस्फुलिंगो भवेत् पूर्वं शब्दं वा कूरुते धनम्।
प्रज्वाल्यमाने कुरुते शब्देन मधुरस्वरान्।८८।

दीपक के प्रज्वलित करने पर धन दिखाई देने से पहले प्रज्वलित दीपक से चिंगारियाँ निकलें अथवा मधर स्वर निकलें तो सर्वश्रेष्ठ होता है।

पीता वर्तिर्भवेत् स्वर्णे रजते पाण्डरासिता ।
लोहे ताम्रे च रक्ता स्यादति नीला प्रजायते ।७९।

प्रज्वलित बत्ती की लौ पीले रंग की होने पर पृथ्वी में सुवर्ण होता है, श्वेत रंग की लौ होने पर चाँदी, लाल रंग की लौ होने पर तांबा और नीले रंग की लौ पर लोहा होता हैं ।

भुक्ता पीताथवा सुप्ता सिता कृष्णा च वर्तिनाम् ।
एतच्चिन्ह करो ज्ञात्वा आदिशेत् तद्धनं बुधः ।८०।

इस प्रकार विधि पूर्वक बनाई हुई बत्तियों के प्रज्वलित करने पर उनकी लौ के पीले, श्वेत, लाल और काले रंग होते हैं। इन सब चिन्हों को जानकर वहाँ धन होने का आदेश दें ।

अंजन

अतः परं प्रवक्ष्यामि अञ्जनानां विधि परम् ।
समासात् सम्प्रवक्षामि यथा शास्त्रमुदीरितम् ।८१।

इसके पश्चात शास्त्र के अनुसार संक्षेप में अंजनों की श्रेष्ठ विधि कहूंगा ।

तेनाजितं तु नयनं छिद्रां पश्यति मेदिनीम् ।
स्त्रोतोञ्जनस्य भागेन हरितालं मनश्शिला ।८२।

उस अंजन को नेत्रों में लगाने से व्यक्ति धरती में धन स्थान के छिद्र को देखने लगता है। उस छिद्र दिखलाने वाले अंजन में हरिताल और मैनसिल का भाग रहता है।

मण्डूकहृदि संयुक्तमञ्जनं निधिदर्शनम् ।
स्त्रोतोञ्जनमुलूकस्य भावयेदात्मवारिणा ।८३।

मेंढ़क का हृदय उस अंजन में मिलाने से पृथ्वी में छिपा

स्थित धन दीखने लगता है। उस अंजन में उल्लू के हृदय के रस को मिला देने से।

तस्यैवमान्ध: निक्षिप्य सप्ताहं भावयेद् बुध:।
अंजिताक्षो नरोऽनेन निधिं पश्यति निश्चितम् ।६४।

अगर अन्धा मनुष्य भी एक सप्ताह तक नेत्रों में डाले तो उस अंजन पड़े नेत्रों से मनुष्य निश्चित ही धरती में स्थित धन को देख लेता है।

काषाय पूरितां कृत्वा रवि तूलेन वेष्टयेत्।
शरत्काले तु संगृह्य भूतालं रक्त वर्तिकाम्।।
वर्तिं कृष्णतिलानां तु तैलेनैवोत्तरायणे ।६५।

अंजन निर्माण विधि—शरत्काल में जब सूर्य उत्तरायण हो तब भूताली की लाल बत्ती बनाकर मेंढ़क और उल्ल के काढ़े से पूरित कर उस पर मदार की रुई लपेटें। यह बत्ती काले तिल के तेल द्वारा।

प्रज्वाल्य वारयेद् भूमिं कज्जलं सु समाहित:।
अनेनाञ्जित नेत्रस्तु निधिं पश्यति मानव:।।
परिमाणां च जानाति गृह्णाति च यथा सुखम् ।६६।

प्रज्वलित कर उसे भूमि पर रखकर सावधानी से मिट्टी के पात्र में स्याही पारे। इस अंजन को नेत्रों में लगाने से पृथ्वी स्थित धन दिखलाई पड़ता है तथा उस धन के परिमाण को जान लेता है कि वह धन कितना है और वह धन बिना किसी कष्ट के सुखपूर्वक प्राप्त हो जाता है।

गिरिसारं वचा लोध्रं रेणुका चांजनं तथा ।६७।

अथवा शिलाजीत, वच, लोध, रेणुका और सुरमा इन सब वस्तुओं को।

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां मेलयित्वा समासतः ।
अनेन स्थापयेत् पश्चात् सम्पुटे ताम्र पात्रके ।९८।

माघ मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को मिलाकर उन्हें ताँबे के पात्र में सम्पुट रूप से अर्थात ताँवे का पात्र ही उस पर ढके ।

पूजां कृत्वा महेशस्य सोपवासो जितेन्द्रियः ।
चक्रराजं समाश्रित्य जपेदष्ठ सहस्त्रकम् ।९९।

फिर निराहार रहकर जितेन्द्रिय हो भगवान महेश की पूजा कर उनके मंत्र को चक्रराज के आश्रय से अपने अनुकूल पाकर उसका आठ हजार जप करे ।

अष्टादशाक्षरीं विद्यामंजयेल्लोचनद्वयोः ।
ततः पश्यति मेदिन्यां निधानानि नरो ध्रुवम् ।१००।

फिर अठारह अक्षरों के अंजन मंत्र से दोनों नेत्रों में अंजन लगा। तब निश्चित ही धरती में स्थित धन को देखा जा सकता है ।

मूलं छिन्द्यादपामार्गात् कौबेर्यां दिशि संस्थितम् ।
कन्योत्पन्नस्तनक्षीरं दिव्यांजन मिति ध्रुवम् ।१०१।

उत्तर दिशा में स्थित अपामार्ग से उसकी जड़ काट ले और जिस स्त्री के कन्या उत्पन्न हुई हो उस स्त्री के स्तन के दूध में उसको घिस कर अंजन लगाने के अष्टाक्षर मंत्र से नेत्रों में लगावे, यह दिव्य अंजन भी अटल हैं ।

पुष्यनक्षत्र योगेन पिण्डी तगर मलिकाम् ।
षडंगुल प्रमाणेन शलाकां स्नापयेद् बुधः ।१०२।

अंजन लगाने की सलाई—रविवारीय पुष्य नक्षत्र के योग में तगर की पतली तथा गोल जड़ को ले, यह सलाई छै अंगुल

लम्बी होनी चाहिए, उस सलाई को गंगा जल से धोकर व्यवहार में लायें।

कुमारीं वा कुमारं वा शिलायां स्नापयेद् बुधः।
तच्छिला स्नान तोयेन रोचनं हेम गैरिकम् ।१०३।

जहाँ कहीं धन स्थान के ऊपर शिला हो वहाँ कुमारी या कुमार सिंधु के जल से बुद्धिमान व्यक्ति उस शिला को स्नान करा दे। अगर उस शिला को स्नान कराया हुआ जल पीला, सुवर्ण या गेरू के रंग का हो तो।

शिलायां पूजयेत् तस्य मौनी मन्त्रं सदा जयेत्।
अंजिताक्षो नरः पश्येत् कुमारैर्निहितं धनम् ।१०४।

उस शिला का पूजन करें और मौन रहकर बराबर पुण्डरीक मंत्र का जप करता रहे। इस प्रकार नेत्रों में अंजन लगाने वाला धरती में रक्खे हुए धन को देख लेता है। कुमार या कुमारी का जल सिंधु नदी का जल है।

मधुद्वयमथो पुष्पी रक्ता गास्तिः सुलक्षिता।
कुशा च तिल पर्णी च मधुना सह पुष्यके ।१०५।

अंजन के अन्य प्रकार—पुष्य नक्षत्र में अच्छी मदिरा तथा अच्छे चिन्ह वाले (जिसमें कीड़ा या जाला आदि न लगा हो) देशी गुलाब के लाल फूलों का रस, हरी कुशा, तिल और पर्णी (शल) को पीस कर और उसमें शहद मिलाकर अंजन बनावे।

पुष्यार्के छाग वृक्षस्य मूल मुद्धृत्य वारिणा।
युपेष्य मधुना सार्धमंजयेल्लोचन द्वये ।१०६।

अथवा रवि पुष्य नक्षत्र में छागलाद वृक्ष की जड़ उखाड़ कर गंगाजल में घिसे और उसका आधा शहद मिलाकर उस अंजन को दोनों नेत्रों में डाले।

स पश्यति निधिं तेन भूतलस्थं न संशयः ।१०७।

इस अंजन के लगाने से मनुष्य पृथ्वी स्थित धन को निःसन्देह देखता है ।

कृष्णा च पित्तं च मयूर पित्तमशोक मूलं
गतमुत्तराशाम् ।
शशांग गोरोचन माक्षिकं च सर्वांजनं नाम
शिवोपदिष्टम् ।१०८।

श्यामा चिड़िया का पित्त, मोर का पित्त और उत्तर दिशा को मुख करके ली हुई अशोक वृक्ष की जड़, कपूर, गोरोचन तथा शहद मिश्रित अंजन शंकर द्वारा कहा हुआ है ।

पारदो मधु कपूंरं काकमाची फलं तथा ।
सर्वांजन मिदं ज्ञेयं सूर्यावर्तं समन्वितम् ।१०९।

मधु कपूर, शोधित पारद, मकोय का फल और सूरजमुखी का फूल मिश्रित करे, यह भी सर्वाज्जन माना गया है ।

प्रस्तरी तुलसी कृष्णा बीजं कर्पास निम्बयोः ।
कपूंरेण समायुक्तं सर्वांजन मिदं भवेत् ।११०।

काली तुलसी के बीज, श्वेत दूर्वा, कपास के बीज, नीम के बीज और कपूर मिलाने से भी सर्वाञ्जन बन जाता है ।

वज्रिणा मधु कपूंर रक्त स्नुहि सुमूलिका ।
सर्वांजन मिदं ज्ञेयं दिवावृत्तं समन्वितम् ।१११।

मधु कपूर देशी आंवला और लाल स्नुहि (थूहर) की अच्छी जड़ और दुपहरिया के फूल को मिश्रित करे, इसे भी सर्वाज्जन कहा गया है ।

पुष्यार्के श्वेतपर्णा च विधिना मूल मुद्धरेत् ।
वकुलाक्षेण पिष्ट्वाथ हविषा तु समंजनम् ।११२।

रवि पुष्य नक्षत्र में श्वेत बन तुलसी की जड़ को विधि-पूर्वक लाकर और उसके साथ मौलश्री का अखंडित पुष्य पीसे-तेल शुद्ध गौ घृत मिलाने से अंजन बनता है ।

श्रोतो जनस्य सप्ताहं मधृकेद्धव ताड़के ।
हित्वा तज्ज्योतितद्युक्ते पातालं मधुनांजनम् ॥
दिवापि तत्र वित्तानि करस्थानीव पश्यति ।११३।

रविवार को मधुक (मुलहठी) रेत (शुद्धपारद), धव वृक्ष का पुष्प और ताड़ वृक्ष का पक्का फल तथा मधु मिलाकर बनाया हुआ अंजन नेत्रों में लगाने से साधारण ज्योति के अतिरिक्त बढ़ी हुई उस ज्योति से पाताल स्थित धन को ठीक उसी तरह देखता है जैसे दिन में हाथ पर रक्खी हुई वस्तु दिखलाई देती है ।

नरादिषु समुद्भूत तैलं भागे जलान्वितम् ।
अवश्यमंजनदेव कुरुते पुरुषं सदा ।११४।

मनुष्यों आदि द्वारा निर्मित्त तेल जल युक्त होने पर उक्त अंजन से मनुष्य उस जल को अवश्य ही देख सकता है ।

हरिद्रोलूक नेत्राणि पाटल्या मूल संयुतम् ।
सुधा श्वेतजपा तोय पृष्ठायां मधु मिश्रितम् ।११५।

हल्दी, उल्लू के नेत्र, पाटला की जड़, स्नुही थूहर और श्वेत अड़हुल का पुष्प जल में पीस कर और उसमें शहद मिला कर अंजन तैयार करें ।

अंजिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति भूगतम् ।११६।

इस अंजन को नेत्रों में लगाकर व्यक्ति भूमि स्थित धन को देख लेता है।

तिलपर्ण्युद्भवं मूलं हस्तार्के विधिनोद्धृतम्।
जल पिष्टं च पाताल मधुना युत मंजयेत्।११७।

लाल चन्दन की जड़ को हस्त नक्षत्र के सूर्य में विधिपूर्वक उखाड़कर जल में पीस कर मधु मिलाकर नेत्रों में लगाने से पाताल में स्थित।

निधिं पश्यत्य सौ तूर्णमाचार्ये सन्निधौ स्थिते।११८।

धन को मनुष्य शीघ्र ही देख लेता है।

अंजयेत् कन्यकां वापि कुमारं पादयोर्धिम्।
पातालं वा तारिकं वा पश्यत्येव न संशयः।११९।

यह अंजन कन्या या कुमार के नेत्रों में लगाने से वे धरती पाताल या आकाश के धन को निःसन्देह देख लेते हैं।

शुभवन्नीर वा कृष्ण चतुर्दश्यां रवेर्दिने।
गृहीत्वा वारिणा पिष्ट्वा मधुनासह रंजयेत्।१२०।

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को रविवार के दिन सुन्दर जलवेत विधिपूर्वक लेकर और उसे जल में पीस कर मधु के साथ मिलाकर लगावे।

कुंकुमं रोचनं श्वेता कांचकस्य च पल्लवम्।
सुश्वेतं च जपा पुष्पं नन्द्यावर्तं समं मधु।१२१।

कौड़ी, केशर, गोरोचन, कचनार के कोंपल, शुद्ध चांदी की भस्म और अड़हुल का पुष्प इन सब वस्तुओं को घोटकर बराबर का शहद मिलावे।

सर्वांजनमिति ख्यातं पाताले निधि दर्शनम् ।
उलूक चक्षु क्षौद्रं च सर्वांजन मतः परम् ।१२२।

यह सर्वांजन कहा गया है जिससे पाताल में स्थित धन दिखलायीं देता है। उल्लू के नेत्र और छोटी मधुमक्खी का मधु मिला कर भी श्रेष्ठ सर्वांजन बनाया जा सकता है।

समभागं तु संघृष्य रोचनं कुंकुमं शशि।
रोचनं मधु कर्पूर रक्त चन्दन मूलिका ।१२३।

केशर, गोरोचन, सच्चा मोती, कूटशाल्मलि (रोहेड़ा) शहद डली वाला कपूर और लाल चन्दन की जड़ इन सब वस्तुओं का समान भाग लेकर खरल में घोटें।

सर्वाञ्जन मिदं ज्ञेयं राजावर्त समन्वितम्।
पुष्यार्के श्वेत गुञ्जीं वा विधिना उद्धरेद् बुधः ।१२४।

और राजावर्त (विराट देश में उत्पन्न हीरा) को भी समान भाग में मिलाने से यह सर्वांजन बन जाता है। रवि पुष्य नक्षत्र में विधिपूर्वक श्वेत गुंजा (घुंघची) ग्रहण करे।

उलूकाक्षि समं पिष्ट्वा मधुना स्वयमञ्जनम्।
स्त्रोतोञ्जनं सखद्योतमुलूकाण्डे विनिक्षिपेत् ।१२५।

और उन्हें उल्लू की आँख के बराबर लेकर तथा सुर्मे को भी समान भाग में लेकर मधु में पीसे और उस अंजन को पटबीजने सहित उल्लू के अण्डे में रख दें।

सप्ताहान्ते समुद्धृत्य प्रभाते अंजयेद् दिवा।
नक्षत्र वित्तानि करस्थानीव पश्यति।१२६।

एक सप्ताह के पश्चात प्रातः उस अंजन को नि..ाल कर नेत्रों में डाले उससे व्यक्ति नक्षत्र स्थित धन को हाथ में रक्खे हुए के समान देख लेता है।

हरितालं वचा लोध्रं रेणुका चांजनं तथा।
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां चूर्णीकृत्य विनिक्षिपेत्।१२७।

वच, हरताल, लोध, रेणुका (संभालू) का बीज और सूर्मा समान भाग लेकर कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को पूर्ण करके।

सम्पुटे ताम्रजे तच्च अघोरेणाभिमन्त्रयेत्।
अंजिताक्षो नरः पश्येन्निधिनानाविधंभुवि।१२८।

ताँबे के पात्र में रख कर ताँबे के पात्र से ही ढक कर अघोर मंत्र से अभिमन्त्रित करे। यह अंजन नेत्रों में लगाने से व्यक्ति धरती में अनेक प्रकार के धन को देख लेता है।

हंसपादी जटामांसी दारु व्योभमणिः शशीः।
सूतं मनश्शिला चैव समांश मविपेषयेत्।१२९।

जटामाँसी बालछड़, हंसपादी (गोधापदी) दारु (देवदार) व्योममणि (आकाश वल्लरी या अमरबेल) सच्चा मोती, सूत, (शुद्ध पारद) और मैनशिल सम भाग लेकर अंजन बनाये।

दिव्यांजनमिति ख्यातं सर्वभूत वशीकरम्।
नकुलस्य च भेकस्य लोचनानि समाहरेत्।१३०।

यह दिव्य अंजन प्रसिद्ध है, यह अंजन नेत्रों में लगाने से संसार के समस्त प्राणियों को वशीभूत करने वाला है, नेवला और मेंढक के नेत्र लाकर।

स्रोतोंजन समायुक्तं मेष तैलेन पेषयेत्।
अंजिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति निश्चयम्।१३१।

उनके साथ समान भाग में स्तोत्र अंजन मिलाकर भेड़ के तेल में पीसे इस अंजन को नेत्रों में लगाकर व्यक्ति निश्चित ही धरती स्थित धन को देख लेता है।

हेम्ना शलाकया पूर्वमंजयित्वाक्षिणी यतः।
उपधानं जपेत् पश्चात् ततः पश्यति भू निधिम् ।१३२।

इस अंजन को सोने की सलाई द्वारा नेत्रों में लगाने से पूर्व से लेकर अंजन मंत्र जपता रहे, इसके पश्चात व्यक्ति धरती स्थित धन को देखता है।

परितिथिः पूर्णायाः प्रतिखाग्रे तु कज्जलम्।
अंजिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति भू गतम् ।१३३।

मास की अन्तिम तिथि पूर्णिमा को आकाश में चंद्र के उदय होने पर पूर्व में बनाया हुआ कज्जल नेत्रों से व्यक्ति धन को देखता है।

रक्तेन कृकलासस्य भावयित्वा मनश्शिलाः।
अंजिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति पूर्ववत् ।१३४।

गिरगिट के खून से मैनसिल की भावना देकर अर्थात घोट कर नेत्रों में लगाने से मनुष्य धरती में स्थित धन को देख लेता है।

सृगालस्याक्षि चूर्णेनाभ्यंजयेल्लोचनद्वयम्।
भूतं पश्यत्यसौ क्षिप्रं संप्राप्नोति महानिधिम् ।१३५।

गीदड़ की आंख को पीस कर दोनों नेत्रों में लगाने से व्यक्ति धरती स्थित धन को देख लेता है और उस महानिधि को शीघ्र ही प्राप्त भी कर लेता है।

त्रिवर्ण सूत्र बंधन मन्त्र

औषधि को निमन्त्रण देते समय कलावा बांधने का मन्त्र इस प्रकार है—

सत्यं दर्शन भौमेयं दिव्यं सत्येन दर्शय ।
यदि भूमिगतं द्रव्यमात्मानं दर्शन स्वयम् ।
जंगमं सत्य भाषाय भौम्ने सत्य मंशने नमोऽस्तु ते,
सत्यं विरिक्तद्व्यत्र्यद्व्यस्थितात्मानं निधि दर्शय ।

खननोद्योगे अर्चन मन्त्र

औषधि खोदने के समय पूजा का मंत्र इस प्रकार है—

वराहम् । ओं हूम् ओम् ।

औषध ग्रहण काले औषधि प्रतिष्ठा मन्त्रः

येन त्वां विदधे ब्रह्मा येनेन्द्रो दैवतैः सह ।
तेन त्वा मा हरिष्यामि तिष्ठ तिष्ठ महौषधे !

खन्य कारणाभि मन्त्र

औषधि खोदने का मन्त्र निम्नलिखित है—

ॐ नमो भगवते रुद्राय दुन्दुभिषः ।

भूमि मन्त्र

ॐ भूं भूमिं ॐ ॐ रं अग्नये नमः । ॐ धं-धनाध्यक्षाय वैश्रवणाय नमः । ॐ नमोऽस्तु देवदेवाय शूल पाणये अत्रागच्छतु ठम् । ॐ गौरी महागौरी मा रक्त गच्छ आगच्छ निधिं बन्धय बन्धय स्वाहा । ॐ घृणि सूर्य आदित्योम् ।

पट्टभेदेन पुण्डरीक मन्त्र

शिला अथवा काष्ठ का पट्ट तोड़ने के लिए पुण्डरीक मन्त्र—

ॐ नमो नारायणाय।

या निम्न लिखित रुद्र मन्त्र का प्रयोग करे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय हर हंज स्फुटि स्फुटि निस्रवे।

अञ्जन मन्त्र

नेत्रों में अंजन लगाने का मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ ॐ गं क्षं अं लोकिनि निधि निलोकिनि स्वाहा।

बंधन मन्त्र

पूजन या खनन कार्य प्रारम्भ करते समय दिशा आदि बन्धन के मन्त्र इस प्रकार हैं—

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय शर बन्ध श्री नकुल मति सदर्पं त्रिबन्धं दिशाबन्ध पातालं-बन्ध मण्डलं बन्ध। ॐ नमो भगवते भूरिभूच्यवते नमः स्वाहा।

अघोर मन्त्र

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्योऽघोरघोरतरेभ्य।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमोऽस्तुते रुद्ररुपेभ्यः॥

सुदर्शन नरसिंह मन्त्र

ॐ सहस्राय ज्वालावर्तिते सौं हन हन हुं फट् ठम्।

इति सर्व रक्षा

मालिनि मन्त्र

तं त्रिगुणे त्रिगुणे मालिनि स्फुटम्।

ज्वालिनी मन्त्र

बत्ती प्रज्वलित करने का मन्त्र इस प्रकार है—

ज्वलन्त ज्योतिर्दशायां वै ।

इन्द्र मन्त्र

ॐ नमो भगवते सहस्त्रा (क्षा) य परिरक्ष मां सहायैः सार्धं कालि कालि महाकालि स्वाहा ।

(पूर्व दिशा में)

यम मन्त्र

ॐ नमो भगवते वैवस्वताय परिरक्ष मां सहायैः सहितं स्वाहा ।

(दक्षिण दिशा में)

वरुण मन्त्र

ॐनमो भगवते श्वेताय महावल पराक्रमाय रुद्राय परिरक्ष मां सहायैः सार्धं हरि स्वाहा ।

(पश्चिम दिशा में)

कुबेर मन्त्र

ॐ नमो भगवते वैश्रवणाय परिरक्ष मां सहायैः सार्धं कुरु कुरु ठम् ।

(उत्तर दिशा में)

आग्नेयादि कोण मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय किटि किटि भिटि भिटि हरि हरि

मरि मरि चिरि चिरि हन हन पच पच रक्ष रक्ष ग्रह ग्रह बन्ध बन्ध तर तर हर हर वसि वसि सत्व हरिघाति घोरे चन्डरौद्रे महारौद्रेसन्तु यस्सल्लोमते भन्ज भन्ज मारय मारय सर्व-सत्त्वान् सर्वविघ्नान् स्तम्भय स्तम्भय विमले अस्मत्सहायांश्च रक्ष रक्ष मां च दिशां बन्ध पुरुष मण्डलं बन्धय बन्धय ठम् ।

दिशानां पार्षदानां मन्त्र

कुमुदाय नमः । कुमुदाक्षाय नमः । पुण्डरीकाक्षाय नमः । वामनाय नमः । शंकुकर्णाय नमः । सर्वनेत्राय नमः । सुमुखाय नमः सुप्रतिष्ठाय नमः ।

(क्रम पूर्वक)

सूर्य सोमाग्नि प्रकार मन्त्र

ॐ नमश्चक्राय हुं फट् टम् ।

कीलाभि मन्त्र

ॐ द्ंदुर्गाया हुं फट् ठम् ।

स्थान रक्षा बलि मन्त्र

ॐ नमो योगीश्वराय नमो मातृभ्यो नमो विश्व रुपिणीभ्यः प्रतिगृह्णन्तुसिद्धये । इमंबलिं गृह्ण गृह्ण ठम् ।

पिशाच बलि मन्त्र

ॐ नमः पिशाचेभ्यः पिशाचाः प्रतिगृह्णन्तु सिद्धये मम बलि गृह्ण गृह्ण ।

वैश्रवण बलि मन्त्र

ॐ नमो वैश्रवणाय नमो वा यक्षेभ्यो नमो वा यक्षिणीभ्यो नमो बलिः कृत्ये तायं ठम् ।

सेनाङ्ग बलि मन्त्र

ॐ नमो रुद्राय योगीश्वराय नमोऽनन्त वासुकि तक्षक नागादिभ्यो नमो नागगणेभ्यो नागगणाः प्रतिगृह्णन्तु सिद्धये इमं गृह्णगृह्ण स्वाहा ।

राक्षस बलि मन्त्र

ॐ नमो विश्वरूपाय त्रिनेत्राय नमो रुद्राय नमो भीमाय नमो रक्षो गणेभ्यः प्रतिगृह्णन्तु सिद्धये इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।

मृग बलि मन्त्र

ॐ नमः पशुपतये सिंहासनाय व्याघ्रचर्मवसनाय मृगेश्वराय नमो मृगगणेभ्यो नमो मृगगणाः प्रतिगृह्णन्तु सिद्धये इमं बलिं गह्णन्तु स्वाहा ।

पक्षि बलि मन्त्र

ॐ नमोः शिवाय गगन चारिणे पतंगेश्वराय नमः पक्षि-गणेभ्यो नमः पक्षिगणा प्रतिगह्णन्तु सिद्धये इमं बलिं गृह्ण स्वाहा ।

विरोध-शमनाय बलिमंत्रः अङ्गारक प्रशमन मन्त्र

ह्रीम इन्द्राय वज्र हस्ताय स्वाहा ।

विष प्रशमन मंत्र

काल दण्डाय वामाय स्वाहा।

जल विघ्न प्रशमन मंत्र

ओं वरुणाय स्वाहा।

इषादि विरोध शमन मंत्र

(शत्रु आदि के विरोध को शान्त करने का मन्त्र)

ओं महाभ्र कुरु कुरु श्चि स्वाहा।

उष्ण प्रशमन मंत्र

ओं स्वाहा प्रियाय धूम्राय अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।

नैऋते वेतालादि शमन मंत्र

नमो वायवे गगन चारिणे स्वाहा।

सिंहादि शमन मंत्र

विधि रूद्राय मुदिरि स्वाहा।

कीटादि शमन मंत्र

ओं पच मुदिरिः स्वाहा।

महाविश्वादि मंत्र

(गन्धर्व आदि की बाधा दूर करने का मंत्र)

ओं नमः शिवाय घ्रीं नमः शालिपिष्ट प्रकृति प्रतिगृह्ण इमं ब्रलि महापशुपतये नितम्बलि रूपिणि स्वाहा।

सर्व विघ्न प्रशमन मंत्र

ओं हरि ठम्।

उपरोक्त यंत्र से सब प्रकार के विघ्न समाप्त होते हैं।

अथ चतुर्थः परिच्छेदः

अथ वक्ष्यामि विप्रेन्द्रा निधि संग्रहणं परम् ।
सहाय संयुतः शान्त आचार्यो मन्त्र वित्तमः । १ ।

हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ऋषियों । अब मैं धन को प्राप्त करने का मुख्य उपाय कहूंगा । सबसे पहले मंत्रों को जानने वाला आचार्य सहायक होना चाहिए ।

निधिस्थान विधानज्ञस्तल्लक्षण विचक्षणः ।
परीक्षा बहुधा तत्र स्थावरं जंगमं ततः । २ ।

जो धन के स्थान को और धन को प्राप्त करने की विधि को जानने वाला तथा धन स्थान के लक्षणों का ज्ञाता हो क्योंकि स्थावर (वृक्ष आदि) और जंगम (पशु, पक्षी, कीड़े आदि) की परीक्षा अनेक प्रकार से ली जाती है ।

खन्य लक्षण भेदज्ञो देवता मन्त्र संयुतः ।
देश काल विधानज्ञस्तमाचार्यं प्रचक्षते । ३ ।

खोदने योग्य स्थान के लक्षण और उसके भेदों को जानने वाले तथा देवता सहित उस विषय के मंत्र को जानने वाले, देश-काल और विधि के ज्ञाता को ही आचार्य कहते हैं ।

यथोक्त दिवसं स्नात्वा विधिवद्यजनं ततः ।
वराह रूपिणं देवं यजेद् भूमि समन्वितम् । ४ ।

जैसा कि शुभ दिन आदि पहले बतलाया गया है, उस दिन

प्रातः स्नान आदि कर विधि पूर्वक भगवान शंकर की पूजा करे और फिर धन स्थान पर विधि पूर्वक भूमि के सहित वाराह भगवान का पूजन करे।

तमाश्रयं यजेत् पश्चात् बलिदत्वा सुमन्त्रवित्।
उत्थाय प्रणिपत्याथ सिद्धिं विज्ञापयेद् बुधः। ५।

वाराहदेव की आराधना करके पृथ्वी का पूजन करे, पश्चात मंत्र का ज्ञाता भूमि मंत्र से भूमि के लिए अनाज की बलि देकर धरती को प्रणाम करके उठे और वह यजमान को सिद्धि के लक्षण बतलावें।

ततोपकरणोपेतः सहायैः सह गच्छतु।
पन्नगादि विरोधानां शमनं पदलेपयेत्। ६।

इसके पश्चात उपकरण आदि धरती खोदने के समान और अपने सहायकों सहित धन स्थान पर जावे और सांप आदि के विरोधी को दूर करने के लिए आगे लिखे द्रव्यों को अपने पाँवों में लेपन करे।

सुदर्शन नृसिहञ्च रक्षबन्धं शिखातले।
अर्कस्य करवीरस्य पनसस्य च मूलिका। ७।

प्रथम रक्षा के लिये सुदर्शन नृसिह मंत्र से बन्धन करके मदार, कनेर, और कठहल वृक्षों की जड़ें।

एतत्पाद प्रलेपेन सर्वे नश्यन्ति पन्नगाः।
मल्लिका गिरिकर्णी च जाग्रपर्णी वचा तथा। ८।

इन सबको पीस कर पैरों में लेपन करने से धन स्थान पर निकलने वाले सब साँप नष्ट हो जाते हैं। मल्लिका अपराजिता जाग्रपर्णी और बच।

श्वेतार्क मूलिका व्योषं पादलेपेन पन्नगाः।
यक्ष रक्षोरगाः क्रूरा ये चान्ये विघ्नकारिणः। ६।

तथा श्वेतार्क (श्वेत पुष्प वाला मदार) इन सबकी जड़ और व्यौष (त्रिकटु-सौंठ, मिर्च पीपल) इन सबको पीस कर पाँवों में लेप करने से साँप, यक्ष, राक्षस और धन वाले जो क्रूर सर्प होते हैं इनके अतिरिक्त और भी जो विघ्न करने वाले जीव हैं।

पलायन्ते पलाशेश मंत्रयुक्त प्रलेपतः।
चित्रंक जातिनी मूलं श्वेतार्कं गिरिकर्णिका।१०।

उक्त वस्तुओं को सुदर्शन नृसिह मंत्र सहित पांवों में लेपन करने से या तो भाग जाते हैं या फिर नष्ट हो जाते हैं। इनके अतिरिक्त चित्रक, चमेली श्वेत पुष्प वाला मदार, अपराजिता उनकी जड़ें।

तदद्भिः सिन्दुवारश्च वचा पीठा समन्विता।
बक केसर बीजानी वज्रमूल समाश्रितः।११।

उसी प्रकार सिन्दुवार (श्वेत पुष्प का सम्हालू) वच पाठा, बच (बुक-बड़ी मौलसिरी) इन सब की जड़ें, काश्मीरी केशर के बीज और वज्रमूल (अभ्रक) इन सब को मिलावे।

एष नाराचको योगः सर्वं विघ्न विनाशकृत।
अनेक पादलेपेन विष मध्य गतं धनम्।१२।

यह नाराचक योग है जो सब प्रकार के विघ्नों का नाश करने वाला है। इस योग को जल में पीस कर पाँवों में लेप करने से विष वाले जीवों के बीच में स्थित धन भी प्राप्त हो जाता है।

कूष्माण्डैरण्ड बीजानि बीजानि पनसस्य च ।
जाति-डाड़िम मूलानि समभागानि कारयेत् ।१३।

पेठा और एरण्ड के बीज तथा कटहल के बीज और जाति (चमेली) तथा अनार के वृक्ष की जड़ इन सबको सम भाग लें ।

पाठा गोमूत्र पिष्टा च दर्शयत्यङ्घ्रिलेपिता ।
गृह्यते नात्र सन्देहो धूर्जटी भाषितः स्वयम् ।१४।

और पाठा की जड़ इन सबको गोमूत्र में पीसकर पाँवों में लेप करने से धन का मार्ग दिखलाई देता है और वह धन निश्चित प्राप्त होता है। यह भगवान शंकर का कथन है—

अगस्त्येन बिना गृह्यनार्भ कोऽपि स मंत्रवित् ।
नासौ निधि मवाप्नोति सिद्ध मंत्रो विनिश्चितम् ।१५।

अगस्त्य नक्षत्र के उदित हुए बिना और शरद ऋतु आये बिना कोई भी मंत्र ज्ञाता मंत्र सिद्ध करने पर भी पृथ्वी में स्थित धन नहीं प्राप्त कर सकता, यह निश्चित है ।

निधि संस्थानमासाद्य रक्षा कर्म समाचरेत् ।
सप्ताङ्गुल परीणाहैश्चतुरश्रैः समन्ततः ।१६ ।

प्रथम धन के स्थान पर जाकर सुदर्शन नृसिह मंत्र से रक्षा कर्म करें फिर धन स्थान के चारों ओर सात अंगुल लम्बी ।

खादिरैरष्टभिः कीलं स्थापयेन्मन्त्र संयुतम् ।
ऐन्द्रादीशान पर्यन्तं तत्तन्मन्त्र समन्वितम् ।१७।

खैर की लकड़ी की आठ कीलें चक्र के रूप में क्रमशः पूर्व दिशा से प्रारम्भ कर (अग्नि कोण, दक्षिण दिशा, नैऋत कोण पश्चिम दिशा वायव्य कोण, उत्तर दिशा और) ईशान कोण

में उन दिशाओं और कोणों के मंत्रों का प्रयोग करें।

अर्चयेद् गन्ध पुष्पाद्यैर्गोचर्मं वेष्टयेत् ततः।
दध्योदनञ्च मांसञ्च रोचना पुष्प सर्षपाः।१८।

फिर उन खैर की लकड़ियों में उनके मंत्रों से दिक्पालों की सुगन्ध पुष्पादि से पूजा करे। फिर उनमें गोचर्म को लपेटे फिर दही, पका हुआ चावल मांस और सरसों के फूल।

गोधूमाश्च निधेत्यादि दापयेद् बलि कर्मणि।
प्रथमं निधिपालस्य बलिं दत्वा ततः परम्।१९।

और गेहूं के आटे तथा घी से बना पकवान और कुछ द्रव्य-बलि कर्म में देना चाहिए। सबसे पहले निधिपाल कुबेर के लिए बलि दे, फिर अन्य दिक्पालों के लिए बलि प्रदान करे।

भूरि सूतप दातव्यमग्नेन्द्रातं तमाचरेत्।
वाहनायुध संयुक्ताः सहायैः सह गच्छतु।२०।

वाहन और आयुध सहित अग्नि से लेकर इन्द्र तक दिक्-पालों के निर्मित गेहूँ के आटे, जल और घी से बने पदार्थों की मंत्रों द्वारा बलि देकर अपने सहायकों सहित धन स्थान पर जाये।

वाहनायुध संयुक्ता रक्षेत्यक्त्वा दिगेश्वरान्।
ततः पाद्यार्घ्यं पूर्वाभिर्गन्ध पुष्पादिस्ततः।२१।

फिर वाहन और आयुध सहित दिक्पालों को पाद्य और अर्घ्यं प्रदान कर पहले के समान गन्ध-पुष्पादि से पूजन करे फिर दिक्पालों से रक्षा की प्रार्थना करें।

कुमुदः कुमुदाक्षश्च पुण्डरीकश्च वामनः।
शङ्कुकर्णः सर्वनेत्रः सुमुखः सुप्रतिष्ठितः।२२।

कुमुद, कुमुदाक्ष, पुण्डरीक, वामन, शंकुकर्ण, सर्वनेत्र, सुमुख और सूप्रतिष्ठित ये दिक्पालों के पार्षद है।

चतुर्भुजा महाकाया: सर्वायुध धरोद्यम:।
भीमाक्षा भीमविक्रान्ता रक्षाकर्म विचारणा: ।२३।

जो चार भुजा वाले, बहुत बड़े शरीर वाले सब प्रकार के शस्त्र धारण किए हुए, भयंकर नेत्रों वाले और भयंकर पराक्रम वाले धन की रक्षा करने में तत्पर है।

पायसं गुल मध्वाज्य नालिकेर फलान्वितम्।
कदलीफल संयुक्तं बलिं दत्वा विचक्षण: ।२४।

चतुर मनुष्य इन पार्षदों को खीर, पूड़े, शहद, घी, नारियल और केले के फलों सहित सैनांग बलि मंत्र से बलि दे।

पूर्वादीशान पर्यन्तं तन्मन्त्रेण नियोजयेत्।
तदन्त: परमं ब्रह्म सुदर्शननृकेसरी ।२५।

इस प्रकार पूर्व दिशा से ईशान कोण तक दिक्पालों का उनके मंत्रों से पूजन करके तथा पार्षदों को बलि देने के पश्चात परब्रह्म सुदर्शन नृसिंह।

चक्रमध्यस्थमीशानं सृष्टिस्थित्यन्त कारणम्।
सर्वरक्षाकरंह्येतद् भावयेन्मन्त्रवित्तम: ।२६।

भगवान जो सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार कर्ता हैं तथा जो सबकी रक्षा करने वाले हैं, ऐसी भावना उस चक्र के मध्य में मन्त्र के ज्ञाता आचार्य को अपने मन में करके नृसिंह भगवान का ध्यान करें।

ध्यानम्

उग्रं भीमाट्टहासं जननयन
महाभीति हृद् घोरदंष्ट्रं,
निर्दग्धाशेष दुष्टग्रहमखिल
जगद्व्याप्त कालाग्निवर्णम्।
दोर्भिश्चक्रासि शार्गाङ्कुश
मुसल गदा शङ्ख पाशायुधाद्यै,
रष्टभिर्विक्रमाङ्गैस्त्रिभुवन
मखिलं भासयन्तं महान्तम् ।२७।

एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं सुदर्शन नृकेसरी।
तालपत्रे लिखेन्मन्त्रं साध्यपाद समन्वितम् ।२८।

इस प्रकार ध्यान करके ताड़ पर सुदर्शन का मन्त्र और सिद्ध करने योग्य नृसिंह का चरण, सिंह का पंजा बनावे और फिर नृसिंह मन्त्र का जाप करें।

अष्टोत्तरशतं चैव जपेदष्टाक्षरं भवेत्।
अंगावरणमारभ्य दिग्बन्धाय तथैव च ।२९।

प्रथम बन्धन मन्त्र से दिग्बन्धन करके नृसिंह भगवान के अंग और आवरण की पूजा कर ८ अक्षर के नृसिंह मन्त्र को १०८ बार जपे।

चक्रमुद्रां ततः कुर्यात् सूर्यसोमाग्नि मण्डलम्।
आत्मरक्षां ततः कृत्वा सहायानां च लक्षणम् ।३०।

सूर्य-सोम और अग्नि मण्डल की पूजा करके भगवान को चक्रमुद्रा बनाकर दिखलावे फिर अपनी तथा अपने सहायकों की

इन्द्र-यम-वरुण-कुबेर और आग्नेय आदि कोण मन्त्र और सब दिशाओं के पार्षदों के मन्त्रों से रक्षा करें।

निधि रक्षा विधिं वक्ष्ये समाहितमनाः श्रृणु।
अग्नि वैश्रवणो नाम धनाध्यक्षो महेश्वरः।३१।

अब मैं धन की रक्षा विधि को कहूंगा कि धरती स्थित धन की रक्षा कौन-२ करते हैं।

निधिरक्षाभ्यनुज्ञाता तस्य वैश्रवणस्तथा।
यक्ष-भूत पिशाचाश्च नागा वा राक्षसस्तथा।३२।

निधि की रक्षा भली प्रकार से करने पर उसका नाम वैश्रवण है। इसके अतिरिक्त यक्ष, भूत, पिशाच, नाग, राक्षस तथा।

व्याघ्र सिंह गजा गृध्राः पक्षिणश्च महाबलाः।
प्रेताश्च विविधाश्चैव नाना रूपा बलान्विताः।३३।

व्याघ्र, सिंह, हाथी और बलवान पक्षी गिद्ध तथा विविध प्रकार के प्रेत जो अनेक रूप वाले और शक्तिशाली हैं।

मातृकाश्चैव रक्षन्ति डाकिन्यश्चैवमादयः।
तेषां बलि विधानं च ज्ञातव्यं च पृथक् पृथक्।३४।

वे तथा मातृकाएँ और डाकिनी आदि भी धन की रक्षा करती हैं। उनका बलि विधान पृथक् समझना चाहिए।

वटवृक्ष चेष्वप्येकलिङ्गे गुहासु च।
डाकिन्यस्तत्र रक्षन्ति मातृणां शासनेन तु।३५।

वटवृक्ष में महादेव के मन्दिर में और गुफाओं में मातकाओं की आज्ञा से डाकिनी धन की रक्षा करती है।

वटवृक्ष समीपे च तथा रामे महालये ।
गोपुरेषु च रक्षन्ति भूतनित्यो धृतायुधाः ।३६।

वटवृक्ष के समीप में तथा उद्यान में, बड़े भारी भवन में और नगर में बाहरी द्वार में सदा शस्त्र धारण करने वाले भूत धन की रक्षा करते हैं।

एतेषु चैव भागेषु समशाखेद्रुमेषु च ।
पिशाचास्तत्र रक्षन्ति स्थानेष्वायतनेषु च ।३७।

समान शाखा वाले वृक्षों में और उन वृक्षों के हिस्सों में तथा विस्तृत स्थान जहाँ हों वहाँ पर धन की रक्षा पिशाच करते हैं।

शून्य ग्रामे तु वल्मीके नागो रक्षति तत्र तु ।
तथा हालाहल स्थाने चोग्रभीमे नदीतटे ।३८।

जिस ग्राम में कोई व्यक्ति न रहता हो, जहाँ दीमकों ने मिट्टी का ढेर बनाया हो उसमें और तीव्र विष वाला पौधा जिस स्थान में हो वहाँ तथा भयंकर प्रवाह वाली नदी के तट में धन की रक्षा नागों द्वारा होती है।

सिंह व्याघ्र गजा गृध्राः पक्षिणश्च महाबलाः ।
वृक्षाग्रे कोटरे चैव-श्मशानोन्ते तथैव च ।३९।

सिंह, व्याघ्र, हाथी और गिद्ध पक्षी, सब बलवान हैं। वृक्ष के ऊपर के भाग में कोटर जहाँ धन रहता है वहाँ और श्मशान के अन्त में जहाँ धन रहता है।

गृध्रास्तु पक्षिणस्तत्र नियुक्ता रक्षणे चिरम् ।
चतुष्पथे तु ग्रामान्तेष्वतुक्तेषु तथैव च ।४०।

वहाँ उसकी रक्षा के लिए गिद्ध पक्षी हमेशा निवास करते

हैं और चौराहे में, गाँव के अन्त में तथा जिन स्थानों का उल्लेख नहीं किया गया है।

सर्वेरक्षन्ति सहितास्तत्तत् सर्वं बलिं हरेत्।
अथ सम्यक् परीक्षांतु कृत्वा तद्रक्षणं बुधः ।४१।

वहाँ हाथी, सिंह, व्याघ्र ये सब धन की रक्षा करते हैं और वे सब अपनी-२ बलि लेनें वाले हैं। इसलिए बुद्धिमान मनुष्य भली प्रकार परीक्षा करके कि इस स्थान में धन का रक्षक कौन-कौन हो सकता है।

तेषां पृथक् पृथक् सम्यक् बलिकर्म नियोजयेत्।
सर्ववन्यानि पुष्पाणि सर्वधूपो दयानि च ।४२।

उनके निमित्त अलग-२ अच्छी प्रकार से बलि प्रदान करे। बलि कर्म में वन में होने वाले सब प्रकार के सुगन्धित पदार्थों की धूप देनी चाहिए।

मासं पक्वं तथैवामं तिला लाजा बलिः स्मृतः।
पायसोदकमिश्रं तु पिष्टासं तिलपिष्टकम् ।४३।

साधारणतया पका हुआ मांस, कच्चे तिल, धान की खील, जल मिश्रित दूध और साधारण रूप में पिसे हुए तिल बलिदान में प्रयुक्त होते हैं।

(जालवा ? लाजं वा) मधु
संमिश्रं यक्षाणां बलिरिष्यते।
माष मुद्गौदनं
चापि तिल पिष्टयुतं दधि ।४४।

शहद मिश्रित खीलें, उड़द, मूंग, पके हुए चावल और दही सहित तिल की पिट्ठी यही सब पदार्थ यक्षों की बलि के बतलाये गये हैं।

लाजं रुधिर सम्मिश्रं (पैलाशं ? पैंशाचो) व्रलिरिष्यते ।
पायसं च गुलान्नं च तथा त्रिमधुरं पुनः ।४५।

बकरे के रक्त से मिश्रित खीलें, खीर, पूड़े और त्रिमधुर (घी-मधु-चीनी इन तीन पदार्थों का समह) ये सब पदार्थ पिशाच बलि के लिए बनाए गए हैं ।

नागपुष्पं च लाजं च नागानां बलिरिष्यते ।
ग(ण? ज) केसर पुष्पाणि हस्तिनां मद्यमेव च ।४६।

नागकेशर, खील, गजकेशर, जो अगहन माह में होता है फूल और हाथी का मद ये सब पदार्थ—सर्पों की बलि के कहे गए हैं।

हस्तिचर्म च मांसं च मेदं चेन्वितं बुधः ।
मां सौदनं च दातव्यं गृध्रादोनां बलिर्विधिः ।४७।

माँस, चर्बी, हाथी का चमड़ा, पके हुए माँस मिश्रित चावल ये सब पदार्थ गृद्धों की बलि में देने के लिए कहे गए हैं ।

प्रेतस्त चोदकं दत्वा एकलिङ्गे जलाञ्जलम् ।
तिलमिश्रं तु संग्रह्य तथा दृष्टपितान्वितः ।४८।

प्रेत को तिल मिश्रित जल देकर और फिर महादेव पर जलांजलि देकर तथा उस जल को ग्रहण किया हुआ देखकर बलि कर्म समझे ।

सर्वमन्त्र समायुक्तं बलिदत्वा तु बुद्धिमान् ।
नाना विरोध संप्राप्तौ बलिदत्वा विचक्षणः ।४९।

मन्त्रों सहित बलि प्रदान करे। अनेक प्रकार के विरोध उपस्थित होने पर चतुरता से एक-एक को बलि प्रदान करे।

अङ्गारक तुषं चैव दृश्यते यत्र कुत्रचित् ।
पक्वान्नं व्यञ्जनैयुक्तं बलिमन्त्रैस्तु शाम्यति ।५०।

जहाँ कहीं अग्नि की चिंगारियों वाली घास दिखलाई दे वहाँ उसकी शान्ति के लिए शाकादि सहित पके हुए अन्न की बलि ऊष्ण प्रशमन मन्त्र से बलि देनी चाहिए ।

पैशाचं राक्षसं क्रूरं विषं चैव तु दृश्यते ।
मत्स्य मांस बलिं दत्त्वा दमेनैव प्रशाम्यति ।५१।

जहाँ पिशाच, राक्षस और तीक्ष्ण विष दिखाई दे तो उनकी शांति के लिए मछली के माँस की ही बलि देकर शांत करे ।

स्थलोदकं महावृष्टिः शिलावृष्टिस्तथैव च ।
त्रिमधुञ्चैव पक्वान्नं बलिं पाशेन शाम्यति ।५२।

धन स्थल में जहाँ जल की महा वर्षा और ओलों की वर्षा होती हो उसको बन्द करने के लिए त्रिमधु (दूध, चीनी और शहद) और पके हुए अन्न की जल विघ्न प्रशमन मन्त्र से वली देकर उस उपद्रव का शमन करे ।

उ(षा?षः) कालं नरं दृष्ट्वा दध्योदन बलिं क्षिपेत् ।
सौम्येनैवप्रशाम्यन्ति नात्र कार्या विचारणा ।५३।

प्रातः में धन स्थान पर व्यक्ति को देखकर दही और पके हुए चावल की बलि दे । इससे वे सरलता से शांत हो जाते हैं ।

उष्ण ज्वर प्रवेशञ्च पित्तक्षोभं तथैव च ।
हविराज्यं बलिं दद्यात् हव्यवाहेन शाम्यति ।५४।

धन प्राप्त करने वाले व्यक्ति को या सहायकों में से किसी को अगर पित्त प्रकोप से उत्पन्न तीव्र ज्वर हो जाय तो घी और

चरु आदि होमार्थ द्रव्यों की बलि देने से हव्य वाहन (अग्नि-तीव्र ज्वर की अग्नि) शान्त हो जाते हैं।

कीटं पिपीलिका चैव मण्डूकं मूषिकोद्भवम्।
पक्वमांस बलिं दद्यान्नैर्ऋतेनैव शाम्यति ।५५।

धन खोदते समय कीड़े-मकोड़े, चींटी, मेंढक और चूहे उत्पन्न होने पर पके हुए माँस की बलि देने से राक्षस शान्त हो जाते हैं।

वह्निज्वालाञ्च वेताल महाभूतं तथैव च।
पिष्टोदकं हविर्दद्याद् वासुदेवेन शाम्यति ।५६।

जहाँ धन स्थान में अग्नि की ज्वाला वेताल और प्रधान भूत हों वहाँ जल में पिसे हुए हवनीय पदार्थ और घी देने से वासुदेव द्वारा शांत हो जाते हैं।

सिंह व्याघ्र गजञ्चैव तुरङ्गं महिषं तथा।
पक्वापक्वञ्च मांसञ्च बलिं रुद्रेण शाम्यति ।५७।

धन स्थान में व्याघ्र, सिंह, हाथी, घोड़ा और भैंसा होने पर पके हुए एवं कच्चे माँस की बलि देने पर रुद्रदेव के द्वारा सब शान्त हो जाते हैं।

विद्याधरं दानवञ्च कुमारञ्च स्त्रियं तथा।
शाणाग्रहञ्च नक्षत्रमुग्ररूपं तथैव च ।५८।

जहाँ धन स्थान में गन्धर्व या किन्नर असुर पंच वर्षीय बालक और स्त्री तथा तीक्ष्ण ग्रह एवं नक्षत्र का उग्र रूप दिखलाई दें।

पायसञ्च बलिं दद्याद्धरिदेवैः प्रशाम्यति।
ततः समाहितो भूत्वा निधिमुद्धर्तुमाहरेत् ।५९।

वहाँ दूध, चावल, शक्कर से बनी खीर की बलि देने से विष्णु भगवान के द्वारा उक्त विद्याधर आदि और उग्र ग्रह आदि शांत हो जाते हैं।

अथोपकरणं वित्तं निधि कर्मणि सम्मतम्।
नाराचामुद्गलः कीलं कुद्दालं कुरुलोधृताः।६०।

अब धन को खोदने के साधन रूप जो उपकरण हैं, उनको कहता हूं। लोहे का काँटा लोहे का मुग्दर जिससे जमीन कूटी जाती है या पत्थर आदि कठिन वस्तु तोड़ी जाती है। मोटे लोहे की छड़ का रम्भा जो छोटा अथवा बड़ा होता है और उसका एक सिरा चपटा और धार वाला होता है और कुदाल जिससे धरती खोदी जाती है।

अभिमन्त्रय महामन्त्रं सुदर्शननृकेसरी।
प्रवीरो वीर सूरश्च सहायाश्चरतादृशाः।६१।

इन सब उपकरणों को नृसिंह महा मन्त्र से अभिमन्त्रित करे फिर बलवान, शूर और वीर सहायक भी खनन कार्य में लगें।

एवं हस्त गतं द्रव्यं तावत् कर्म समाचरेत्।
स्थानं संशय काले वा अंजनं नेत्रयोर्लिखेत्।६२।

इस प्रकार जब तक धन प्राप्त हो तब तक खनन कार्य करता रहे। धन स्थान के संशय के समय नेत्रों में अंजन लगा कर धन स्थान का निश्चय करे।

अश्वपत्रं सप्ततन्तु नेत्रयोश्च प्रथक् प्रथक्।
दुकूलैर्वेष्टयेत् पश्चात् कृष्णवर्णैस्त्रिमिस्तथा।६३।

नेत्रों में अंजन लगाकर एक पीपल का पत्ता नेत्रों में अलग-

अलग सात धागों से बांधे और फिर ऊपर से काले रंग के रेशम आदि के महीन वस्त्र को तीन बार लपेटे।

यत्र संशय भूमिश्च वीक्ष तत्र धनं लभेत्।
शोचं कृत्वा चतुर्भागं गुरोरेकं निवेदयेत्।६४।

जहाँ धन स्थान का भूमि में सन्देह हो वहाँ उपरोक्त तरीकों से धन स्थान देखकर धन प्राप्त करे और विचार पूर्वक उस धन के पूरे चार भाग करके एक भाग गुरुदेव को अर्पण करे।

शेषं वित्तं विभज्याथ सहायानां ददौ गुरुः।
अवश्यं गोपयेत् पश्चादग्निष्टोमादिकान् यजेत्।६५।

धन के अनेक भाग करके भारी मात्रा में सहायकों को दे। इसके पश्चात् प्राप्त शेष धन को भली प्रकार छिपाकर उससे अग्निष्टोमादिक यज्ञ करें।

यज्ञार्थमर्थ सापेक्षा ऋषयो धर्मतत्पराः।
निधिसंग्रहणं सर्वं मयाप्रोक्तं यथा क्रमम्।६६।

धर्म कर्म में लगे हुए ऋषिगण यज्ञ करने के लिए धन की इच्छा करते हैं, अतएव मैंने धन प्राप्त करने का सब विधान क्रमानुसार बतला दिया है।

सर्वं सम्पत्करं श्रेष्ठं सर्वदारिद्र्य नाशनम्।
सर्वं सौख्य मिदं शास्त्रं शबरेणैव भाषितम्।६७।

सब प्रकार की श्रेष्ठ सम्पत्ति का देने वाला, सब प्रकार की दरिद्रता का नाश करने वाला तथा सब प्रकार का सुख देने वाला यह 'निधि शास्त्र' शंकर भगवान ने कहा है।

श्री यन्त्र साधना

वेद काल की सभ्यता दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यता है। इस विषय में ठोस जानकारी तुर्की में नवेली कोरी के आस पास खुदाई से मिल सकती है। हाल ही में आठ हजार साल ईसा पूर्व की सभ्यता का पता चला है। खुदाई में इस काल के कुछ अवशेष भी मिले हैं। तुर्की में हुई खुदाई में एक मन्दिर निकला जो दुनिया का सबसे पुराना मन्दिर है। वैदिक काल के एक पुजारी का चूने की मिट्टी से बना बुत भी मिला है। वह बिना दाढ़ी के है और उसकी लम्बी पूंछ है। बाल लम्बे हैं। कुल मिलाकर वेद काल की अच्छी सभ्यता के संकेत मिलते हैं।

प्राचीन काल से ही मानव लक्ष्मी के प्रति आकर्षित रहा है। लक्ष्मी प्राप्त करने के लिये वह सदैव कुछ न कुछ प्रयत्न करता रहा है। विधि की यह कैसी विडम्बना है, लक्ष्मी न होने पर भी भय लगा रहता है और लक्ष्मी आ जाने पर भी भय बना रहता है। यह बात और है लक्ष्मी न होने पर लक्ष्मी कब और कैसे आयेगी ? आयेगी भी या नहीं यह भय रहता है और लक्ष्मी आ जाने पर लक्ष्मी चली न जाए यह भय बना रहता है। इसी सन्दर्भ में एक कथा प्रस्तुत है।

एक तान्त्रिक अपने शिष्य के साथ घने जंगल से होकर गुजर रहा था। चोरों, लुटेरों, डाकुओं का खतरा बना हुआ

था। चलते-चलते तान्त्रिक बोला—वत्स ! आस पास कोई पड़ाव हो तो चलो वहीं रुक जायें। मुझे बड़ा भय लग रहा है। इस वीरान वन में कोई दुष्ट हमें लूट न ले।

गुरु की यह स्थिति जानकर वह शिष्य परेशान हो गया। सोचने लगा। तान्त्रिक को डर कैसा ? चोर-लुटेरों को उससे क्या काम ? उसके पास क्या खजाना होता है जो वह लुट जाने की चिन्ता में डरता रहे। चलते-चलते तान्त्रिक को दीर्घशंका सताने लगी। उन्होंने अपनी झोली शिष्य को थमाई और रास्ते से हटकर पहाड़ी की ओट में जा बैठे। अच्छा अवसर पाकर शिष्य ने झोली की तलाशी ली। उसमें कुछ रुपये थे। शिष्य गुरु के भयभीत होने का कारण समझ गया।

चलते-चलते रास्ते में एक सूखा कुआं दिखलाई दिया। शिष्य ने अवसर देखकर चुपचाप पैसे कुएँ में फेंक दिये। अब अंधेरा और भी बढ़ गया। तान्त्रिक ने शिष्य को फिर जताया। वत्स मुझे डर लग रहा है। कहीं ठीक-ठाक जगह तलाश करके ठहर ही जाना चाहिए। शिष्य ने निश्चिन्त भाव से उत्तर दिया—गुरुजी, चिन्ता न करें, मैंने आपके डर को समाप्त कर दिया है।

यह सुनकर तान्त्रिक का माथा ठनका। उसे शंका हुई। उसका हाथ झट झोली में चला गया। यह क्या। वहाँ रुपयों के स्थान पर कंकड़ पड़े थे। तान्त्रिक का कलेजा मुंह को आने लगा लेकिन थोड़ी देर बाद वह सम्भल गया। शिष्य ने उसकी आँखें जो खोल दी थीं।

जीवन की दैनिक आवश्यकताओं से लेकर बड़ी-बड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की आवश्यकता होती है।

निर्धन से लेकर राजा तक धन की आवश्यकता को अनुभव करता है। यह बात अलग है उनकी आवश्यकता अलग-अलग प्रकार की होती है। आप तनिक विवाह विधि को ही देखें।

विवाह विधि में फेरे होते हैं। आगे पुरुष और पीछे स्त्री चलती है। पुरुष पैसा कमाकर स्त्री को देता है और स्त्री उस पैसे को खर्च करती है। धर्म में भी पुरुष आगे रहता है और धनोपार्जन में भी आगे रहता है। सांसारिक सुखों में भी पुरुष को आगे रहना होता है। इसी प्रकार धर्म, अर्थ व काम इन तीनों फेरों में पुरुष आगे रहता है और स्त्री पीछे रहती है। स्त्री इन तीनों कार्यों में पुरुष के पीछे चलती है पर मुक्ति पहले स्त्री को मिलती है। चौथे फेरे में स्त्री आगे और पुरुष पीछे रहता है।

हमारे यहाँ चार फेरों का यही अर्थ है। अग्नि, ब्राह्मण और दोनों पक्षों के बुजुर्गों की उपस्थिति में चार फेरे चार पदार्थों का संकल्प है। अर्थ पैसा कमायेंगे मगर केवल धर्म के सहारे। सांसारिक सुख भोगें मगर परलोक बिगड़े नहीं। पैसा कमाने से इन्कार नहीं मगर पैसे को धर्म का संरक्षण करना चाहिए। जिस सम्पत्ति से धर्म का संरक्षण न हो वह सम्पत्ति कभी टिकती नहीं।

शास्त्रों में कहा है कि धर्म बढ़े तो धन बढ़े। इस प्रकार सब बढ़ता ही जाता है पर धर्म घटे तो धन घटे। धन घटे तो मन घटे। अर्थशास्त्र का सनातन नियम है सम्पत्ति अस्थिर नहीं होनी चाहिए और मानव केन्द्रित होनी चाहिए अगर आज मानव स्थिर और रुपया केन्द्रित हो गया है। मानव उस के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। याद रखो कि ईश्वर हमें इसलिए देता है कि हम जनता की सहायता करें।

आज धनोपार्जन केवल अपने लिए और स्वार्थवश करते हैं, इसलिए ही धन का नाश होता है। धन बराबर घटता ही चला जाता है। शास्त्रों ने कहा है—धन देने से धन बढ़ता है। ठीक ही कहा है, लेकिन आज धन न देना पड़े, इसलिए लोग बहाने बना लेते हैं। एक बार एक यात्री गाड़ी के पायदान पर खड़ा था। इतने में एक भिखारी भीख माँगता हुआ आ पहुंचा। कहने लगा—'बाबूजी मुझे एक पैसा दो। भगवान तुम्हें स्वर्ग में जगह देगा।

बाबू जी (झुँझलाकर)—अरे यार, गाड़ी में तो जगह मिल नहीं रही है, स्वर्ग को किसने देखा है। जाओ कोई और जगह देखो।

लक्ष्मी साधना आदिकाल से ही चलन में है। लक्ष्मी साधना से पहले शक्ति साधना करनी परम आवश्यक है। शक्ति ही नहीं होगी तो धन का उपयोग क्या होगा ? शक्ति की अधिष्ठात्री देवी की नौ संज्ञाएं हैं जिन्हें नौ दुर्गा कहा जाता है जो इस प्रकार हैं—प्रथम शैल पुत्री, दूसरी ब्रह्मचारिणी, तीसरी चन्द्रघण्टा, चौथी कुष्माण्डा, पाँचवीं स्कन्द माता, छठी कात्यायनी, सातवीं कालरात्रि, आठवीं महागौरी और नौवीं सिद्धिदात्री। यह कहा जाता है कि ये नाम देवताओं ने स्वयं अपनी तथा अपने समाज की रक्षा के लिए बनाये हैं। जब-जब देवताओं पर संकट आए तब-तब शक्ति की अधिष्ठात्री देवी माँ दुर्गा का स्मरण किया गया और उसी के अनुसार नाम-करण किया गया।

शक्ति की वंदना का मुख्य स्रोत वैदिक साहित्य है। यजुर्वेद में दुर्गा अम्बिका के नाम से, तो पुराणों और महा-

ग्रन्थों में शक्ति के रूप में जानी गई। शक्ति को स्त्री रूपा माना गया है। शक्ति देवताओं की सहायिका मानी गई है। साथ ही इन्हें जगत-जननी, सृष्टिकर्ता आदि भी स्वीकारा गया। दुर्गा सप्तशती में दुर्गा के शक्ति रूप की उपासना की गई, जिसमें नारीत्व की महिमा का बखान भी है।

दुर्गा सप्तशती के अनुसार इस शक्ति का आविर्भाव चण्ड-मुण्ड, धूम लोचन एवं रक्तबीज आदि की मिश्रित शक्ति से गर्वोन्नत शुम्भ, निशुम्भ के विनाश के लिए हुआ। शुम्भ, निशुम्भ अहंकार एवं अभिमान का प्रतीक है। शक्ति की उपासना भारतीय संस्कृति का मूल है। उपासना पद्धति किसी अन्य धर्म में उपलब्ध नहीं है। भारतीय संस्कृति आदि संस्कृति है। हमारी संस्कृति में शक्ति की उपासना का सबसे अधिक महत्त्व है। शक्ति का दिन आश्विन शुक्लपक्ष की अष्टमी है।

दुर्गा के एक सौ आठ नामों का उल्लेख है। कुछ मुख्य नाम इस प्रकार हैं—कात्यायनी, चंडिका, अम्बा, गौरी, कपालिनी, चामुण्डा, वैष्णवदेवी, काली, उमा, भवानी, छिन्नमस्ता, सुन्दरी, कमला आदि। तंत्र में कमला को धनदायिनी माना गया है।

माँ शक्ति की सन्तान है—लक्ष्मी, सरस्वती, गणेश, कार्तिकेय। हमारे शास्त्रों के अनुसार शक्ति के नौ रूप वर्णित हैं। यह इस प्रकार है—

महालक्ष्मी :

महिषासुर दैत्य ने जब धरती और पाताल पर अपना अधिपत्य जमा लिया तो देवताओं ने भगवान नारायण से इन्हें

नष्ट करने की प्रार्थना की। नारायण ने अपने और शंकर के अंश से एक तेज प्रकट किया, जिसने महालक्ष्मी का रूप धारण कर लिया। महालक्ष्मी ने महिषासुर का संहार किया और तीनों लोकों में खुशी की लहर दौड़ गई।

महालक्ष्मी के पूजन का विधान अनेक ग्रंथों में बतलाया गया है। ताँत्रिक वर्ग और सामान्य जन दीपावली पर महा-लक्ष्मी का पूजन करते हैं।

प्रति वर्ष कार्तिक मास प्रारम्भ होते ही शीतल वायु के कोमल स्पर्श से शरीर में मीठी-मीठी सिहरन होने लगती है। और चंचल मन दीपावली की उमंग में प्रफुल्लित हो उठता है। बच्चे बड़े स्त्री-पुरुष भी दीपावली के स्वागत के लिए तैयारियाँ शुरू कर देते हैं। घरों में अच्छी तरह खुशियां-ही-खुशियाँ बिखरी दिखाई देती हैं।

दीपावली पर प्रत्येक हिन्दू परिवार में लक्ष्मी की पूजा अवश्य ही की जाती है। निर्धन धनी वर्गों के स्त्री-पुरुष दीपा-वली की रात में लक्ष्मी पूजा करने के लिए लक्ष्मी की मूर्ति अवश्य लाते हैं। व्यापारी वर्ग के लिए दीपावली महत्व इस-लिए अधिक बढ़ जाता है कि इस दिन लक्ष्मी की पूजा करके वे नया कार्य प्रारम्भ करते हैं। अगले वर्ष की सुख समृद्धि के लिए भी लक्ष्मी पूजा की जाती हैं।

लक्ष्मी बहुत चंचल है और कभी एक स्थान पर अधिक समय तक स्थिर नहीं रहती है। इसलिए हर वर्ग के लोग अपने जीवन में लक्ष्मी के आगमन के लिए अर्चना करते हैं और सम्पन्न व्यक्ति इसे अपने घर में स्थिर रखने के लिए मनाते हैं।

दीपावली पर सभी घरों में लक्ष्मी पूजा की जाती है। कुछ घरों में किसी विद्वान ताँत्रिक को बुलाकर तंत्रोक्त लक्ष्मी पूजन कराया जाता है। सभी लोग लक्ष्मी पूजन में सफल हों और सभी घरों में लक्ष्मी का आगमन हो यह भी संभव नहीं होता। कभी-कभी तो लक्ष्मी की पूजा के लिए पूरी तरह से तैयार स्त्री-पुरुष आकस्मिक विपत्ति के कारण लक्ष्मी पूजा से वंचित रह जाते हैं।

मेरे पास ऐसी घटनाओं के अनेक सत्य संस्मरण हैं जिन घरों में लक्ष्मी पूजा की पूरी तैयारी के बाद भी किसी आक-स्मिक विपत्ति के फलस्वरूप लक्ष्मी पूजन नहीं हो सका। इस सम्बन्ध में एक सत्य घटना प्रस्तुत है। एक सेठजी दुकान पर लक्ष्मी पूजन कराकर अपने घर पर लक्ष्मी पूजन के लिए सपरिवार लौट रहे थे। फोन के द्वारा उन्होंने घर के अन्य सदस्यों को लक्ष्मी पूजन के लिए सब तैयारी करने के लिए कह दिया था। कार से उतरकर अपने पांवों के साथ चलते हुए सेठजी जब चौराहे से गुजर रहे थे कि उनका पांव चौराहे पर रखी पूजा सामग्री से टकरा गया। आकस्मिक उलझन से सेठ जी स्वयं को बहुत मुश्किल से संभाल सके, घर पहुंचते-पहुंचते उनके हृदय की धड़कन बहुत तेज हो गई और सारा बदन पसीने से भीग गया। बदन के दर्द से सेठजी विचलित हो उठे। तभी उन्हें दो-तीन खून की उल्टियाँ हुई। लक्ष्मी पूजन की सभी तैयारियाँ बीच में ही रह गयीं और डाक्टर को बुलाया गया। लेकिन डाक्टर भी सेठजी की विपत्ति को नहीं समझ सके। ऐसी स्थिति में सेठजी ने मुझे बुलाकर सभी कहानी सुनाई कुछ देर की तंत्र चिकित्सा ने सेठजी को काफी हद तक निरोग कर दिया।

तांत्रिक का दीपावली पूजन कुछ अलग प्रकार का होता है। ताँत्रिक दीपावली को काल-रात्रि के रूप में स्वीकार करते हैं। दीपावली की रात में तंत्र साधना का विशेष महत्व है। तंत्र द्वारा अनेक लोग इस रात्रि में मनोकामना पूरी कराने की चेष्टा करते हैं। उनकी कामना अनेक तरह की हो सकती है कोई कोई जीवन में धन-धान्य से भरपूर होने के लिए दीपावली के दिन तंत्र साधना करता है तो कोई अपने शत्रु को हानि पहुंचाकर अपनी सुरक्षा करता है। दीपावली पर किसी को हानि पहुंचाकर मनोकामना पूरी करने के लिए तंत्र साधना करना न ही तर्क संगत है और न ही उचित, लेकिन हम अपने जीवन में सुख समृद्धि, धन-धान्य की पूर्ति के लिए लक्ष्मी पूजन के लिए कुछ अनुभूत ताँत्रिक साधनों का अवश्य वर्णन करेंगे। तंत्र द्वारा उपासना का आदिकाल से विशेष महत्व रहा है। जन-साधारण में तंत्रोक्त लक्ष्मी साधना रहस्यमयी और अलौकिक शक्ति के रूप से व्याप्त रही है।

तांत्रिक दीपावली की रात को कालरात्रि या उपलब्धि की रात मानते हैं इसलिए दीपावली की रात में तंत्र-साधना का विशेष महत्व है। अधिकाँश तांत्रिक अपनी अर्जित सिद्धि को पुनः स्थापित करने के लिए साधना करते हैं। कुछ ऐसे भी तांत्रिक होते हैं जो कुछ लोगों के स्वार्थ हेतु तंत्र साधना करते हैं और निर्दोष व्यक्तियों को शारीरिक या मानसिक रूप से भारी हानि पहुंचाते हैं।

दीपावली की ऐसी ही एक शाम रात्रि अंधकार पृथ्वी पर धीरे-धीरे बिखरने लगा था। ऐसे में मेरे घर का पता पूछती हुई एक नवयुवती मेरे पास आई। मैं अपने साधना कक्ष में साधना में लीन था। वेशभूषा से वह किसी सम्पन्न घर की

युवती प्रतीत होती थी। उस नवयुवती ने अपनी दुखभरी कहानी सुनाई। उसके विवाह को दस वर्ष बीत चुके थे, लेकिन उसके कोई संतान नहीं थी। लेकिन उसकी जेठानी के तीन बच्चे (दो लड़के और एक लड़की) हो चुके थे।

उस नवयुवती के सन्तान न होने के कारण परिवार में बहुत विषम परिस्थिति बनती जा रही थी। धनी परिवार होने के कारण उसके पति को तलाक दिलाकर दूसरा विवाह करने का प्रयास किया जा रहा था। उस युवती ने कहा कि तंत्र द्वारा दीपावली की रात में ऐसी उपासना की जाए कि उसके एक लड़का हो जाए और उसकी जेठानी की संतान मर जाए। इस काम के लिए वह अधिक-से-अधिक धन व्यय कर सकती है।

मैंने उसे समझाते हुए कहा कि तुम्हारी पहली मनोकामना के लिए मैं अनुष्ठान कर सकता हूं लेकिन दूसरी इच्छा पूरी नहीं कर सकता। यह सुनकर वह रोष में चली गई। ज्ञान प्राप्त होने पर वह फिर आई और सन्तान प्राप्ति हेतु तंत्र साधना कराई।

इस सम्बन्ध में मैं अपने दूसरे तांत्रिक साथियों से भी नम्र निवेदन करता हूं कि वह तंत्र द्वारा किसी को शारीरिक क्षति पहुंचाने की चेष्टा न करें। तंत्र का उद्देश्य किसी को रोग मुक्त सुख समृद्ध करना है, किसी का अहित करना नहीं।

इसमें कोई सन्देह नहीं हैं कि तंत्र द्वारा लक्ष्मी-साधना प्राचीन काल से जन-साधारण में रहस्य और कौतुहल का विषय रही है। यह तांत्रिक लक्ष्मी-साधना आप स्वयं भी अपने परिवार के कल्याण व सुख-समृद्धि के लिए अपने घर में कर

सकते हैं। इसी साधना को पूरे आत्म-विश्वास पवित्रता और विधि-विधान के अनुसार किया जाए तो महालक्ष्मी की अनुकम्पा आपके लिए धन-धान्य और सुख-समृद्धि का द्वार खोलने वाली शुभ रात्रि बन सकती है।

यह अनुष्ठान मैंने अपने एक परम मित्र को बताया था जो बेहद अभावों से ग्रस्त एवं सामयिक हालातों से त्रस्त था। आज उस पर महालक्ष्मी की कृपा है। वह सरल साधना ज्यों की त्यों आपके कल्याण हेतु लिख रहा हूं—

दीपावली की रातको लगभग बारह बजे के आसपास काले कम्बल पर बैठकर महालक्ष्मी के चित्र के आगे दीपमाला कम से कम दस दीपक सजाकर बैठ जायें। मन्त्र की जितनी मालाएँ सम्भव हों निरन्तर जपें। इसके बाद २१ दिन तक नियम से जाप करें प्रभु ने चाहा तो चंचला लक्ष्मी आपके घर में वास करेगी। मंत्र निम्न प्रकार है—

'ॐ नमो भगवती पद्म पद्मावती ॐ ह्रीं श्रीं ॐ पूर्वाय दक्षिणाय पश्चिमाय उत्तराय आणा पूरय सर्वजन वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा।'

प्रायः देखा गया है कि कई व्यापारी भाइयों का व्यापार प्रायः मन्दा रहता है। या फिर व्यापार में समृद्धि नहीं होती। पैसे का आवागमन बराबर रहता है। ऐसे हालात में व्यापारी बन्धुओं से मेरा नम्र निवेदन है कि वह हताश न हों, वह इस क्रिया को स्वयं करें—

ताम्रपात्र पर अंकित 'श्री' यंत्र ले लें। उसे गंगाजल से शुद्ध कर लें। दीपावली की मध्य रात्रि में निम्न मंत्र की २१

माला निरन्तर जपें तत्पश्चात अगली प्रातः गंगाजल या कुएँ का ताजा पानी लेकर उस पर मंत्र को ३१ वार पढ़कर फूंक मार दें, तत्पश्चात इस अभिमंत्रित जल को दुकान या कार्यालय की चारों दीवारों पर छिड़क दें, ध्यान रहे जल धरती पर न गिरे और वह मंत्र आप उच्चारण लगातार करते रहें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस विधि-विधान से करने पर आप सुख-समृद्धि के भागी होंगे। मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीति मशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि॥

यहाँ मैं स्पष्ट लिख दूँ कि संसार में शक्ति साधना के पश्चात लक्ष्मी-साधना ही मुख्य है। हमारे शास्त्र में एक स्थान पर लिखा है--'हे दरिद्रते तेरा अभिन्न मित्र अकाल है अतः जहाँ तू जाती है वहां अकाल स्वयं आ जाता है। हे तेजस्वनि! इस दरिद्रता एवं इसके अनन्य मित्र अकाल को मुझसे दूर कर।'

प्रिय पाठकों! दीपावली पर इस छोटी-सी साधना के द्वारा आप अपनी अपने परिवार एवं शुभचिंतकों की दरिद्रता निवारण कर सकते हैं। अगर आप कोई कठिनाई या समस्या का अनुभव करते हैं, तो मुझे लिखें। उपाय आपको तुरन्त लिख दिया जाएगा।

सरस्वती :

शुम्भ और निशुम्भ दो दैत्यों के अत्याचारों से भयभीत देवता भगवान नारायण की शरण में गए तो उन्होंने अपने शरीर से एक ज्योति महासरस्वती पैदा की। शुम्भ-निशुम्भ

महासरस्वती के रूप पर मुग्ध हो गए। उन्हें पत्नी बनाने का प्रस्ताव भेजा। बाद में उन्होंने सरस्वती को जबरदस्ती लाने के लिए दैत्यों को भेजा, लेकिन सब मारे गए। हारकर उन्होंने खुद हमला किया। देवी ने उनका भी वध कर दिया। महा-सरस्वती के दिन को भी लक्ष्मी पूजन का विधान बतलाया गया है।

महाकाली :

प्रलय के समय विष्णु की नाभि से निकले कमल में चतुर्भुज ब्रह्मा प्रकट हुए और कान से निकले दो दैत्य। ये दैत्य ब्रह्माजी को मारने झपटे तो भयभीत ब्रह्माजी भगवान नारायण से याचना करने लगे। दैत्य और भगवान के बीच पांच हजार वर्षों तक युद्ध चला। भगवान के इशारे पर महामाया ने दैत्यों की बुद्धि को पलटा। तब उन्होंने वर माँगने को कहा। भगवान ने वर माँगा, दैत्यों का मरण। तब दैत्यों को कहना पड़ा, ऐसा ही होगा। इसके बाद दैत्यों का नाश हुआ।

योगमाया :

देवकी के गर्भ में सातवें पुत्र के रूप में बलराम जी थे। योगमाया ने इन्हें रोहिणी के गर्भ में धर दिया था। योगमाया खुद यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई। कंस के इरादों को कुचलते हुए योगमाया के रूप में वह ही आकाश से बोली, अरे कंस तेरा काल तो गोकुल में उत्पन्न हो चुका है।

शाकुम्भरी :

दैत्यराज वृत्र द्वारा मेघों को रोक लिया गया तो मत्यु-

लोक में सौ वर्ष तक वर्षा न हुई। अकाल और भूख के कारण प्रजा त्राहि-त्राहि कर उठी। ऋषि-मुनियों की पूजा से प्रसन्न होकर भगवती दुर्गा शाकुम्भरी के रूप में प्रकट हुई। उन्होंने वृत्र को हराकर बादलों को छुड़ा दिया।

रक्तदंतिका :

प्राचीन काल में वैप्रचित्ति नाम के क्रूर और अत्याचारी दैत्य से देवता, ऋषि और मनुष्य सभी परेशान थे। उनकी पूजा के बाद दुर्गा ने रक्तदन्तिका के नाम से अवतार धारण किया। दैत्यों के शरीर को दाँतों से चीर कर रक्तपान किया। सभी को निर्भय किया। इसी कारण वह रक्तदन्तिका के नाम से जानी गयीं।

दुर्गा :

दुर्गम नाम के एक भयानक दैत्य से तीनों लोक घबरा उठे थे। भगवान की शरण में गए तो उन्होंने एक ज्योति प्रकट की, जो दुर्गा या दुर्गसेनी कहलाई। उन्होंने दुर्गम और उसके साथी दैत्यों का संहार करके तीनों लोकों की रक्षा की।

भ्रामरी देवी :

अरुण नाम से एक अत्याचारी दैत्य ने पहले तो प्राणियों को खब सताया। बाद में वह स्वर्गलोक में जाकर देव-पत्नियों को भी तंग करने लगा। उन्होंने भ्रमरियों का रूप धारण कर उसका सामना किया। परन्तु वह बलवान दुष्ट उनके वश में न आ सका। भगवती ने भ्रमरी देवी का रूप धारण कर उस दैत्य का संहार कर डाला।

चंडिका देवी :

चण्ड और मुण्ड नामक दो भयंकर दैत्यों ने धरती और पाताल को वश में कर लिया। जब स्वर्ग पर भी उन्होंने अपना अधिकार जमा लिया तो देवता भगवती की शरण में गए। भगवती ने चंडिका का रूप धारण कर चण्ड, मुण्ड और उनके सभी अनुयाइयों को मार डाला। माँ चण्डिका आज भी कुछ लोगों की कुल देवी के रूप में प्रतिष्ठित है। तन्त्र-मन्त्र विज्ञान में भी दश महाविद्याओं का वर्णन मिलता है।

ज्वाला मुखी, छिन्नमस्ता, नयना देवी और वज्रेश्वरी देवी शक्तिपीठों में प्रमुख माने जाते हैं। भारत वर्ष के मन्दिरों में देवी के अलग-अलग रूपों की पूजा की जाती है।

देवी पूजा नारी के प्रति सम्मान एवं अगाध श्रद्धा का भी द्योतक कई स्थानों पर ताँत्रिक या पुजारी मूर्ति के स्थान पर एक कुंवारी बालिका को सामने बिठा कर उसकी पूजा करते हैं। तंत्र मार्ग में इसे 'कौमारी पूजन' के नाम से जाना जाता है। ताँत्रिक वर्ग में इसे साधना का दर्जा प्राप्त है।

लक्ष्मी साधना का अपना ही महत्त्व है। दीपावली का दिन लक्ष्मी साधना के लिए सबसे उपयुक्त माना गया है। दीवाली कब और कैसे शुरू हुई, इस सम्बन्ध में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। तांत्रिक सम्प्रदाय में दीपावली पर लक्ष्मी पूजन का चलन कब से शुरू हुआ इस विषय में निश्चित रूप से कुछ भी कहना सम्भव नहीं है। कठोपनिषद् में यम-नचिकेता की कथा है। नचिकेता जन्म-मरण का रहस्य जानने के लिए यम के पास गए थे। यमराज नचिकेता की लगन और निर्भीकता से बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने नचिकेता को असत् पर सत् और मृत्यु

पर अमरता की विजय का पूर्ण ज्ञान दिया। यमलोक से जब नचिकेता धरती पर लौटे तो भूलोक-निवासियों ने घी के दीपक जलाकर उनका स्वागत किया। कहते हैं कि भारतवासियों की वह पहली दीपावली थी।

एक और पौराणिक कथा इस प्रकार है—प्राग ज्योतिषपुर का राजा नरकासुर अपने अत्याचारों से सारे भारत को परेशान कर रहा था। हजारों अपहृत कन्याएँ उसके अंत:पुर में वन्दी थीं। कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को श्रीकृष्ण ने उसका वध कर सबको चैन की सांस दिलाई थी। इस उपलक्ष में दीपावली का चलन शुरू हुआ। दीपावली का चलन कब शुरू हुआ ? उसकी कथा क्या थी। इस पर मतभेद हो सकता है। यह बात निश्चित है दीपावली लक्ष्मी का पर्व है। लक्ष्मी चंचला है। लक्ष्मी से सबको प्यार है। आती लक्ष्मी सबको प्रिय लगती है। यह सत्य है।

एक महाराज स्टेशन पर उतरे और एक व्यक्ति ने उनके सामने पाँच रुपए का नोट रखा। उनका दिमाग घूम गया। बोले—अरे मैं तो उदासीन हूं तुझे पता नहीं मैं रुपए-पैसे को हाथ नहीं लगाता। वह व्यक्ति बोला, "भूल हो गई है। अब बताओ मैं क्या करूँ ? वह बोले—"ला मेरी धोती के एक किनारे में बाँध दे।" अनासक्ति और त्याग की बहुत बातें होती हैं पर अनासक्त होना बहुत मुश्किल है। सब में रहते हुए भी सबसे अलग-अलग रहना निवृत्ति है। सबके साथ रहो, गाओ मगर भीतर से रंग जाओ तो समझो तुम सफेद वस्त्रों में संन्यासी हो गए। कपड़ों को रंगने की क्या जरूरत है ?

जब लक्ष्मी में इतना आकर्षण है, तो अगर सामान्य संसारी

उसकी इच्छा करता है तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?

कन्फ्यूशियस की कथा है प्रकृति और पुरुष दोनों एक जगह रहते हैं। लक्ष्मी और ब्रह्मा का अटूट सम्बन्ध है। आत्मा के बिना शरीर और शरीर के बगैर आत्मा नहीं रह सकती। दोनों एक-दूसरे के ऊपर आश्रित हैं। चीन के दार्शनिक कन्फ्यूशियस एक दिन अपनी मेज पर ही सो गए। नींद में स्वप्न देखा कि वह तितली बन कर इधर-उधर उड़ कर बाग में फूलों का आनन्द ले रहे हैं। कभी एक फूल पर बैठते हैं तो कभी दूसरे पर। इतने में क्या होता है कि एक बिल्ली उनकी ओर झपटती है और नींद चौंककर खुल जाती है और वह अपने आपको फिर से अपने कमरे में अपनी मेज पर पड़ा पाते हैं। वह सोचने लगते हैं कि वह स्वप्न वाला संसार झूठा था या वह जहाँ अब पड़े हुए हैं ? और सोचने के पश्चात बोल उठे, न वह सत्य था और न यह सत्य है। अन्तर केवल यह है कि वह आँखें बन्द करने का दृश्य था और यह दृश्य आँखें खोलकर देख रहा हूं।

पृथ्वी में गढ़ा धन भी स्वप्न की तरह होता है। जब तक वह सामने नहीं आता हम अविश्वास और विश्वास के झूले में झूलते रहते हैं। एक बार जब वह धन सामने आ जाता है तो सारे कष्ट, जिज्ञासायें स्वयं ही समाप्त हो जाती हैं। पृथ्वी में गढ़ा धन थाली में ढके पदार्थ की तरह होता है। जब तक थाली के ऊपर रखी जाली को नहीं उठाया जाता तब तक थाली में पड़ी वस्तु का ज्ञान नहीं होता। जब जाली को हटाते है तो जीव को पता चलता है—आत्मा क्या है परमात्मा क्या हैं, मैं क्या हूं वह क्या है। तब संशय मिटते हैं, वस्तु के वास्तविक रूप का पता चलता है और जब यह पता चलता है कि

जो वह है, वही मैं हूं, हम एक ही हैं, तो उसे ज्ञान बोध होता है और ज्ञान बोध के उदय होते ही अज्ञान रूपी अंधकार मिट जाता है और अज्ञान के मिटते ही जीव आनन्द की अनुभूति करता है।

सन्त कहते हैं किसी को भी अपने धन पर गर्व नहीं करना चाहिए—संसार में एक से एक अधिक धनी मौजूद हैं। सितारे समझते हैं कि धरती को आलोक वे देते हैं मगर जब चाँद निकलता है तो उनकी आभा मन्द पड़ जाती है, फिर चाँद गर्व करता है कि पृथ्वी को प्रकाश वह दे रहा है मगर जब सूर्य निकलता है तो उसका प्रकाश भी फीका पड़ जाता है और वह लुप्त हो जाता है।

प्रिय पाठकों ! मैं यहाँ आपको आध्यात्म नहीं सिखा रहा हूं। आपको उदासीन भी नहीं बना रहा हूं। मैं तो केवल आपको धन के रूप बता रहा हूं। लक्ष्मी के गुण दोष बतला रहा हूं ताकि आप लक्ष्मी को प्राप्त करने के बाद उसके माया जाल में न फंसें।

शेख सादी ने एक बार कहा था—मनुष्य अगर लालच को ठुकरा दे तो बादशाह से भी ऊँचा दर्जा प्राप्त कर सकता है क्योंकि सन्तोष ही सदैव मनुष्य का मस्तक ऊँचा रख सकता है। मैंने अपने अनुभव से एक बार नहीं अनेक बार पाया है कि गढ़ा धन प्राप्त करने में असफलता का सबसे बड़ा कारण लोभ और शीघ्रता है। इसी कारण ताँत्रिक के साथ रहने पर और कठिन साधना करने पर भी पृथ्वी से गढ़ा धन पाने में प्रायः लोग असफल हो जाते हैं। अपनी इस बात को रामायण के एक प्रसंग से सिद्ध करने का प्रयत्न करूंगा। राजा दशरथ ने राम को राज देने की घोषणा कर दी है।

सारी आयोध्या खुशी से नाच रही है। सभी लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि वे राम को देख सकें और दूसरी ओर दासी मंथरा ने कैकेई के मन से त्याग और समर्पण के संस्कार मिटा डाले। स्वार्थ के संस्कार उत्पन्न हुए। नफरत पैदा हुई। मंथरा ने कैकेई से कहा, संसार का नियम है जिसे बहुत खुशी होती है उसे बहुत रोना पड़ता है। मंथरा ने कहा, रानी आपके विरुद्ध रची साजिश को देखकर मुझसे रहा नहीं गया। इसलिए मैंने सोचा कि आपको बतला दूं कि महाराज के मन में अन्तर आ गया है। अब जबकि आपके दोनों पुत्र ननिहाल गए हुए हैं, दशरथ राम को गद्दी पर बिठाने जा रहे हैं। आपको एक दासी की तरह रहना होगा। मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा। बार-बार बहकाने पर भी कैकेई नहीं मानी तो फिर झूठ को सच बनाने के लिए भगवान की सौगन्ध उठा ली। धीरे-धीरे मंथरा हावी होने लगी। काल गति काम कर गई। कैकेई पर मंथरा का प्रभाव जमने लगा कैकेयी बोली, मुझे क्या पता था कि भरत को बाहर भेजकर पीछे यह सब होगा।

मंथरा ने कैकेई की बुद्धि में परिवर्तन ला दिया है। कैकेई बोली, मंथरा तेरी बात सच है। अब मुझे बता मैं क्या करूँ ? तू जैसे कहेगी वैसे मैं कर लूंगी। तू कहेगी तो मैं पति को त्याग दूंगी। यह भारतीय परम्परा के अनुकूल नहीं है। क्या कोई नारी बोल सकती है कि मैं अपने पति का त्याग कर दूं ? झौंपड़ी में रहने वाली स्त्री भी माँग के सिंदूर के लिए ऐसा नहीं बोलती। यह भारत की परम्परा है, पर मंथरा ने कैकेई को बदल डाला। तब मंथरा ने कैकेई से कहा कि, रानी एक उपाय है कि आपको राजा से दो वरदान माँगने हैं। अब समय आ गया है कि वह माँग लो।

कैकेयी ने कौन से दो वर माँगे यह सर्वविदित है। राजा दशरथ पर काम हावी हो गया। वह कैकेई के भवन में जा पहुंचे। यहाँ तीनों दुर्गुण एक स्थान पर एकत्रित हो गए। अवधेश काम में लुप्त है। कैकेई माँ क्रोधित है और मंथरा को भरत को गद्दी पर बिठाने का लोभ है। जहाँ लोभ, काम और क्रोध इकट्ठे हो जाएँ तो वहाँ क्या राम राज सम्भव है। जब भी हमारे जीवन में ये तीनों दुर्गुण इकट्ठे हों तो समझ लेना कार्य कभी भी सफल नहीं होगा। मेरी इस बात को सदैव स्मरण रखें, पृथ्वी में गढ़ा धन प्राप्त करने के लिए साधक को उपरोक्त तीनों अवगुणों का नाश करना ही होगा, अन्यथा असफलता प्राप्त होने पर तन्त्र विज्ञान अथवा साधना को दोष देना व्यर्थ होगा।

हमारे तन्त्र शास्त्र में यूं तो अनेक यन्त्रों का वर्णन मिलता है। सभी यन्त्र एक से एक चमत्कारी और लाभप्रद हैं, लेकिन धनदायक "श्री" यन्त्र को यन्त्र राज बतलाया गया है। अब मैं पाठकों की जानकारी के लिए धनदायक "श्री" यन्त्र का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है न केवल साधक वर्ग वरन् सामान्य जन भी इससे भरपूर लाभ उठायेंगे।

भारत ही एक मात्र ऐसा देश है, जहाँ मानव मन के सभी पक्षों पर गहन अध्ययन किया गया है। विशेष रूप से अचेतन मन की चेतन शक्ति को सबसे पहले भारत में ही पहचाना, जाना गया है और इसी शक्ति का उपयोग करने के लिए यंत्र, मन्त्र, तन्त्र की विज्ञान विधि आविष्कृत की गई है। आज संसार के सभी वैज्ञानिक, समाज शास्त्री, मनोवेत्ता अचेतन मन की छिपी शक्तियों का महत्व स्वीकार करते हैं। अचेतन मन के

द्वारा अलौकिक कार्य सम्पन्न होते हैं, पर अचेतन मन को मनुष्य अपने नियंत्रण और निर्देशन में नहीं रख सकता है। भारतीय चिंतकों ने यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र की सहायता से अचेतन मन को अपनी इच्छानुसार चलाने की विधियाँ प्रस्तुत की है। मन्त्र शक्ति ध्वनि विज्ञान पर आधारित है और क्रिया कलापों पर आधारित है। यन्त्र आकृति विज्ञान पर बनाए गए हैं। हमारी आंखें जो कुछ देखती हैं, उसका हमारे मन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। एक वीभत्स चित्र या आकृति देखकर क्या आपको खाना-पीना या परिहास करना अच्छा लगेगा ? आपका मन स्वत: ही घृणा से भर जाएगा। अत्यन्त उत्तेजक कामुक चित्र देखकर क्या कोई युवक अविचलित रह सकता है ? अवश्य ही इसका प्रभाव पड़ेगा। इसी आकृति विज्ञान पर यन्त्र-विद्या आधारित है। सुन्दर युवती का मनमोहक चेहरा प्रभावित करता है। असुन्दर का मन खट्टा करता है। आँखों द्वारा देखा गया चित्र ठीक रंगों के प्रभाव की तरह हम पर प्रभाव डालता हैं। यन्त्र विज्ञान का यही सिद्धान्त है।

सम्पूर्ण यन्त्र वर्ग में श्री यंत्र को सर्वोपरि एवं महत्वपूर्ण माना गया है। इस यंत्र की संरचना रेखा-विज्ञान के अनुसार भी बड़ी ही अद्‌भुत है। तीन रेखाओं का ग्यारह बिन्दु केन्द्र बनाना एक विचित्र योग है। फिर किस प्रकार इसकी अन्यान्य रेखाएँ आकृतियाँ बनाती हैं, यह भी आश्चर्य का विषय है। साथ ही साथ सम्पूर्ण रूप में इस रेखा-रचना को एकटक देखते रहने पर यह चलायमान-सा प्रतीत होता है। कुछ हिलता-जुलता सा प्रतीत होता है। पश्चिम के सुप्रसिद्ध रेखा वैज्ञानिक श्री ऐलेक्सी कुलचेव ने अद्‌भुत तथ्य प्रस्तुत किए हैं, जो श्री यन्त्र की महत्ता को और पुष्ट करते हैं। यन्त्र विज्ञान में 'श्री'

श्री यन्त्रम्

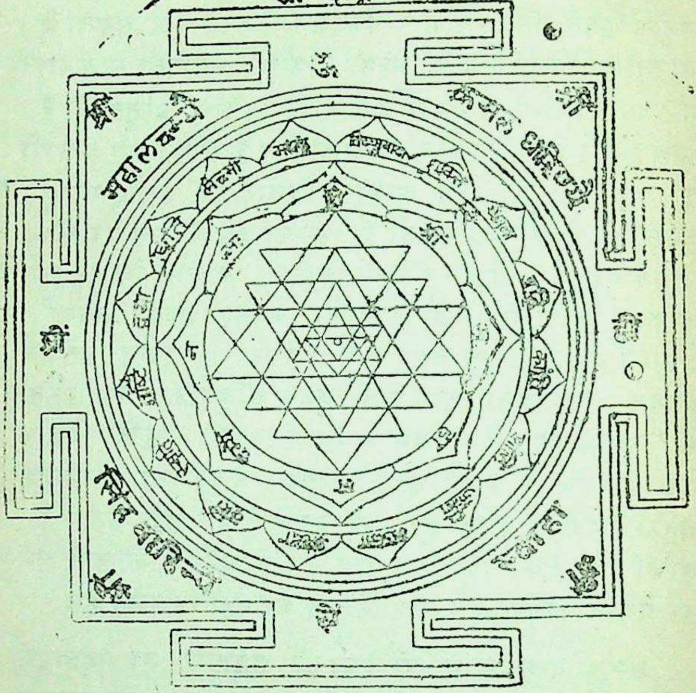

यन्त्र को धनदायक एवं सर्व सिद्धिदाता कहा गया है और इसे सिद्ध करने की अनेक विधियाँ भी बतलाई गई हैं। इस यन्त्र को सभी प्रकार की धातुओं पर बनाया जा सकता है। कई मन्दिरों के द्वारों पर इसको बना देखा जा सकता है। वास्तव में 'श्री' यन्त्र रेखा-विज्ञान की अनूठी आकृति है।

विशेष रूप से स्वर्ण या स्फटिक पर अंकित 'श्री' यन्त्र सर्वोत्कृष्ट माना गया है। व्यापारियों द्वारा इसका बहुत ही उपयोग होता है। 'श्री' यन्त्र अपना महत्व और चमत्कार

अलग ही रखता है। कहा जाता है मां आनन्दमयी को 'श्री' यन्त्र बेहद प्रिय था।

मेरे एक परिचित व्यापारी हैं। उनकी पत्नी एक दिन सुबह पूजा गृह में आयीं।

वह एकदम जोर से चीख उठीं। 'श्री' यन्त्र अपने स्थान पर नहीं था। वह गायब था। कहाँ गया इसका कुछ पता नहीं चल रहा था।

सारे परिवार में बेतरह हलचल मच गई। 'यन्त्र' का कहीं पता न था। वह चोरी हो गया था।

व्यापारी बन्धु की श्रीमती का बुरा हाल था। उन्होंने रोष स्वरूप अन्न जल त्याग दिया और घोषणा कर दी जब तक 'श्री' यन्त्र वापस न मिलेगा वह कुछ भी न खाएंगी।

इस प्रतिज्ञा पर परिवार के सभी सदस्य परेशान हो गए। यंत्र खोजने के काफी प्रयत्न किए गए सब बेकार। अन्त में एक बच्चे ने सूचना दी कि सोने का एक टुकड़ा उसने नौकर के पास देखा है। पूछताछ करने पर नौकर मान गया। यंत्र वापस अपने स्थान पर आ गया।

'श्री' यन्त्र के बहुत चमत्कार हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि शुद्ध मन, साफ नीयत से उसका दर्शन-पूजन किया जाए। यह सर्व-सिद्धिदाता माना गया है। इसका शुद्ध बनना पहली शर्त है। प्राय: 'श्री' यन्त्र में अशुद्ध रेखांकन होता है। लेख के साथ दिया गया, 'श्री' यन्त्र शुद्ध रचना है। हमेशा पूर्वोन्मुख होकर सूर्योदय से पूर्व तथा सध्या समय इस पर ध्यान एकत्रित कर इसका श्रद्धापूर्वक पूजन करना चाहिए। यह

प्रत्येक मनोकामना को पूरा करता है। 'श्री' यन्त्र बरावर पास रखना चाहिए। वह अपने निर्माण के बाद जितना ही पुराना होता जाएगा, उतना ही लाभदायक रहेगा। कई परिवारों में तो यह पीढ़ियों से चला आ रहा है। यह मन्त्र वास्तव में अत्यन्त कल्याणकारी है।

'श्री' यन्त्र के पूजन में हमारे पाठक निम्न मन्त्र का जाप कर सकते हैं—

"ओ३म् दुर्गे स्मृता हरसि भीति मरोष जन्तोः।
स्वस्थै स्मृता मति मतीव शुभां ददासि ॥"

'श्री' यन्त्र आदि शंकराचार्य द्वारा निर्मित किया गया है। कहा जाता है कि एक दिन स्वप्न में उन्होंने यह आकृति देखी थी। उसे उन्होंने ज्यों का त्यों रेखांकित किया। इसके बाद कुछ और तान्त्रिकों ने उसमें अपने अनुभव के आधार पर संशोधन किया। सबसे अधिक संशोधन वाराणसी के सुप्रसिद्ध तांत्रिक एवं योगी बाबा कीनाराम ने किया है।

प्रिय पाठकों ! इस अध्याय में हमने 'श्री' यन्त्र के विषय में प्रामाणिक और सारगर्भित जानकारी देने का यत्न किया है, फिर भी अगर कुछ जिज्ञासाएँ या प्रश्न आपके मन में हों, तो निःसंकोच लिखें। जहाँ आपकी प्रशंसा हमारा हौंसला बढ़ाएगी, वहाँ आलोचना हमारा मार्ग दर्शन करेगी। इस लेख के विषय में हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा करेंगे।

—:०:—

अंत में...

लीजिए पुस्तक सम्पूर्ण हो गयी। प्रस्तुत पुस्तक में मैंने आज के अति उन्नत वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर ही पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें ? की चर्चा और सत्य की स्थापना की है। आप यह तथ्य सदैव स्मरण रखें मन्त्र ईश्वरीय शक्ति है, जिसके माध्यम से साधक की गुप्त शक्तियों का उदय होता है। नियमित और समयबद्ध साधना से साधक की सभी कामनायें पूर्ण और चेष्टाएँ सफल होती हैं।

आज तंत्र विज्ञान के विषय में पाठकों की आम रुचि बढ़ती जा रही है। तन्त्र प्रेमी सदा ऐसी पुस्तकों की खोज में रहते हैं जो उन्हें इस विषय का सटीक और सही ज्ञान करा सके और वह इस विज्ञान के कुशल जानकार बन सकें। मैं यहाँ स्पष्ट लिख दूं—मैं पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का पोषक अथवा प्रशंसक नहीं हूं फिर भी भारतीय एवं पाश्चात्य विज्ञान वेत्ताओं में एक बड़ा अन्तर है। जिस बात को प्राचीन भारतीय सत्य एवं सम्भव मानते थे, उसी को आज के भारतीय विद्वान बे सिर-पैर की कहानी तथा अन्ध श्रद्धा या अन्धविश्वास कह कर टाल देते हैं। इसके विपरीत विदेशी विद्वान प्रत्येक भारतीय मान्यता में सच्चाई का पुट देखते हैं और फिर उसे विज्ञान की कसौटी पर परखते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है क्या तंत्र विज्ञान केवल पढ़ने और सुनने के लिए है, अथवा हम इसे सीख और समझ भी सकते

हैं। अगर तन्त्र की अलौकिक शक्तियों को प्राप्त न किया जा सके तो इनके बारे में केवल जान लेने अथवा पढ़ लेने से क्या लाभ ? हमें तन्त्र विज्ञान को न केवल समझना होगा वरन् उससे भरपूर लाभ भी उठाना होगा।

तन्त्र भगवान शंकर की सबसे अद्भुत कृति है। यह वह लीला है जिसका पार पाने के लिए बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों तथा आधुनिक वैज्ञानिकों ने अथक प्रयत्न किया परन्तु अभी तक इसका पूर्ण रहस्य ज्ञात करने में असमर्थ रहे हैं।

तन्त्र मार्ग में—जाकी रही भावना जैसी ! प्रभु मरत देखी तिन तैसी !! शत प्रतिशत चरितार्थ होती है।

तन्त्र में सिद्धि साधक के आचरण, सोच विचार और भावना के आधार पर प्राप्त होती है।

पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे प्राप्त करें ? निःसन्देह एक दुरूह और जोखिम भरा कार्य है। हमारे पूर्वज पृथ्वी में धन सुरक्षा, संचय अथवा अन्य किसी गोपनीय कार्य से गाढ़ते थे। कुछ समय के बाद वह धन पृथ्वी का एक हिस्सा बन जाता था। अगर हम पृथ्वी को ही धन मान लें तो समस्या काफी हद तक सुलझ सकती है। यह पृथ्वी हमें सदियों से धन देती आ रही है। अब वह वन सम्पदा हो, कनक के रूप में हो या फिर किसी भी अन्य रूप में हो। पृथ्वी सदियों से धन हमें मुक्त हाथों से लुटा रहो है।

भारतीय अध्यात्म के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ 'गीता' में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को बोध देते मानव की ईश्वर अथबा ईश्वरीय सत्ता-युक्त वस्तुओं के प्रति अभिरुचि के मूलभूत कारण दिखलाते हुए कहा है—

चतुर्विद्या भजन्ते माँ जमा: सुकृतिनोअर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ।।

अर्थात भारतवासियों में श्रेष्ठ हे अर्जुन ! आर्त—संकट में पड़ा हुआ जिज्ञासु—यथार्थ ज्ञान का इच्छुक अर्थार्थी—सांसारिक सुखों का अभिलाषी तथा ज्ञानी। ऐसे चार प्रकार के उत्तम कर्मवाले लोग ही मेरा स्मरण करते हैं। और यह कथन हम और आप सभी के लिए समान रूप से लागू होता है।

जैसाकि मैं पहले ही लिख चुका हूं पृथ्वी में गढ़ा धन प्राप्त करना एक दुरूह और जोखिम भरा कार्य है, अगर हम इस कार्य को सम्पन्न करने से पूर्व ईश्वर को याद कर लेते हैं, तो इसमें बुरा ही क्या है ?

भारतवासियों की यह परम्परा रही है कि वह आवश्यकता योग्य धन ही पास रखते थे और शेष धन सुरक्षा एवं संचय की दृष्टि से पृथ्वी में रख देते थे। पृथ्वी में गाड़े हुए धन की सुरक्षा के लिए धन के ऊपर सर्प, यक्ष आदि की आकृति बनाकर उस जीव की प्राण प्रतिष्ठा कर दिया करते थे जिससे वह जीव उस धन की रक्षा करता चला आता था। इस प्रकार के गड़े हुए धन से पृथ्वी भरी पड़ी है क्योंकि पूर्व समय में भारत में प्रचुर धन था और वह आज भी पृथ्वी में है।

धन को पृथ्वी में गाढ़ने की परम्परा इसलिए बनी क्योंकि प्राचीन-काल में कागज के नोटों का प्रचलन नहीं था, केवल सुवर्ण, चाँदी अथवा ताँबे की ही मुद्रा होती थी। धनी वर्ग धन गाड़ने में संकोच करता था क्योंकि चोर गड़े हुए धन को किसी न किसी प्रकार जान लेते थे। अतएव वह वन में वृक्षों के नीचे, अन्य सुरक्षित स्थानों में धन गाड़ते थे और उस स्थान को

पहचानने के लिए विशेष चिन्ह का सहारा लेते थे। इस प्रकार के धन गाड़ने में परिवार के बुजुर्ग व्यक्ति ही होते थे क्योंकि वे अपने परिवार के धन के स्वामी होते थे और इस धन गाड़ने का रहस्य केवल उन्हीं तक सीमित रहता था। जब कभी उस धन को निकालने की उन्हें आवश्यकता होती तो या तो वे उस चिन्ह को भूल जाते या वह समय के कारण चिन्ह स्वयं ही मिट जाता था अथवा आवश्यकता न होने पर वह धन वहीं गड़ा रह जाता था और उन के अचानक स्वर्गवास हो जाने पर यह रहस्य भी उनके साथ ही चला जाता था।

इस प्रकार भारत का प्रचुर धन पृथ्वी के गर्भ में छिप गया। आज भी अनेक लोग इस धन की खोज में जुटे हैं। इस धन का आभास स्वप्न में, अशान्त आत्माओं द्वारा या ताँत्रिकों के द्वारा ही होता है।

मैंने भी इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर इस पुस्तक को प्रस्तुत किया है। वास्तव में इस पुस्तक का अधिकाँश भाग श्री कण्ठ शम्भू प्रणीत है और उन्हीं की भावनाओं से प्रेरित है।

पाठकों को अगर कोई त्रुटि दिखलाई दे तो उसकी सूचना देने पर मैं उनका हृदय से आभार मानूंगा। आशा है धन के इच्छुक महानुभाव इस पुस्तक से पूरा लाभ उठावेंगे और सफलता अथवा असफलता की सूचना मुझे अवश्य देंगे।

धन्यवाद—

तांत्रिक बहल
'तन्त्र सबके लिये मिशन'
डी-४ राधापुरी कृष्णानगर,
(जमुनापार) दिल्ली-११००५१

यजुर्वेद सार

इस पुस्तक में 'यजुर्वेद' का ज्ञानामृत १०८ सूक्तियों में संकलित है जिसे पढ़ व समझकर व्यवहार में लायेंगे तो ज्ञान का संवर्धन होगा।

यजुर्वेदामृत से परिपूर्ण सूक्तियों की इस सूक्ति-माला को जीवन में व्यवहारिक रूप से जपेंगे तो कर्म के लिए तत्पर होंगे।

इन सूक्तियों का चयन, संकलन एवं सम्पादन किया है, आपके प्रिय लेखक डॉ० उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर' ने। एक बार पढ़कर तो देखें, आपको लगेगा—उन्नत पथ पर बढ़ने का उत्कृष्ट कर्म-ज्ञान मिल गया।

ऋग्वेद सार

इस पुस्तक में 'ऋग्वेद' का ज्ञानामृत १०८ सूक्तियों में संकलित हैं जिसे पढ़ व समझकर व्यवहार में लायेंगे तो ज्ञान का संवर्धन होगा।

ऋग्वेदामृत से परिपूर्ण सूक्तियों की इस सूक्ति-माला को जीवन में व्यवहारिक रूप से जपेंगे तो कर्म के लिए तत्पर होंगे।

इन सूक्तियों का चयन, संकलन एवं सम्पादन किया है, आपके प्रिय लेखक डॉ० उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर' ने। एक बार पढ़कर तो देखें, आपको लगेगा—जीवन में आत्म-ज्ञान का अनुपम मार्ग मिल गया।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

सामवेद-सार

इस पुस्तक में 'सामवेद' का ज्ञानामृत १०८ सूक्तियों में संकलित है जिसे पढ़ व समझकर व्यवहार में लायेंगे तो ज्ञान का संवर्धन होगा।

सामवेदामृत से परिपूर्ण सूक्तियों की इस सूक्ति-माला को जीवन में व्यवहारिक रूप से जपेंगे तो उन्नति पथ अवश्य प्रशस्त होगा।

इन सूक्तियों का चयन, संकलन एवं सम्पादन किया है, आपके प्रिय लेखक डॉ० उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर' ने। एक बार पढ़कर तो देखें, आपको लगेगा—अशान्त जीवन में शान्ति पाने का अनुपम मार्ग मिल गया।

अथर्ववेद-सार

इस पुस्तक में 'अथर्ववेद' का ज्ञानामृत १०८ सूक्तियों में संकलित है जिसे पढ़ व समझकर व्यवहार में लायेंगे तो ज्ञान का संवर्धन होगा।

अथर्ववेदामृत से परिपूर्ण सूक्तियों की इस सूक्तिमाला को जीवन में व्यवहारिक रूप से जपेंगे तो ज्ञान से कर्म के लिए तत्पर होंगे।

इन सूक्तियों का चयन, संकलन एवं सम्पादन किया है, आपके प्रिय लेखक डॉ० उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर' ने। एक बार पढ़कर तो देखें, आपको लगेगा—ज्ञान, कर्म और भक्तियोग का अनुपम मार्ग पा लिया।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

हस्तरेखाओं से रोग परीक्षण

लेखक—गोपाल राजू

मनुष्य के शरीर में होने वाली सामान्य बीमारियों का संकलन, हस्तरेखाओं द्वारा उनका परीक्षण तथा इन सबको एक शब्दकोश जैसा रूप देकर सरलतम शैली में प्रस्तुत करना स्वयं ही पुस्तक की उपयोगिता दर्शाते हैं।

बुद्धिजीवियों, विषय के विद्यार्थियों एवं समस्त हस्तरेखा प्रेमियों के साथ-साथ चिकित्सकों के लिए विशेष रूप से यह पुस्तक व्यवहारिक रूप से सहायक सिद्ध होगी।

सम्पूर्ण विश्व में अपने प्रकार का यह सर्वप्रथम प्रकाशन रोगी के रोग का निदान (Diagnose) करने में अपूर्व है।

गोपाल राजू के आगामी प्रकाशन

—हस्त रेखाएं कैसे देखें ?

—हस्त रेखाओं से चुनिए व्यवसाय

—रत्न और आपका भाग्य

प्रकाशन—

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

चाणक्य नीति (भाषा-टीका)

टीकाकार—पं० ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी

नीतिशास्त्रवेत्ता आचार्य चाणक्य को कौन नहीं जानता ? कूटनीतिज्ञ चाणक्य की इस रचना को मूल संस्कृत श्लोकों और सरल हिन्दी अनुवाद सहित प्रस्तुत किया गया है।

नौ देवियों की अमर कहानी

देवी की उत्पत्ति, राक्षसों का वध, वैष्णो देवी यात्रा, वैष्णो देवी का इतिहास, देवी के नौ रूप, तारा रानी की कथा, ध्यानू भक्त की कथा, दुर्गा जी की कथा, नैना देवी की कथा और देवी के सभी मुख्य मंदिरों के इतिहास चित्रों सहित दिए गए हैं।

भारत दर्शन (चारों धाम सप्तपुरी यात्रा)

उत्तराखण्ड के तीर्थ—बद्री, केदार, गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी तथा समीपवर्ती अन्य सभी तीर्थों का वर्णन, जगन्नाथ धाम, रामेश्वर धाम, द्वारका धाम, माया पुरी, काशी पुरी, कांची पुरी, अयोध्या पुरी, अवन्तिका पुरी, इलाहाबाद, सोरों, गंगा सागर, भुवनेश्वर, बौद्ध गया और दक्षिण भारत के मुख्य तीर्थ, नेपाल क्षेत्र के पशुपतिनाथ व मुक्ति नाथ, भारत के प्रमुख नगर तथा पर्वतीय स्थलों की जानकारी इस पुस्तक में दी गई है।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार-२४९४०१

रत्न और रुद्राक्ष

लेखक—तांत्रिक बहल

प्रत्येक वस्तु वह चाहे निर्जीव हो या सजीव, धातु हो, द्रव्य हो या गैस हो उसका मानव शरीर की रक्त संचार व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। शरीर की रक्त संचार प्रणाली ही मनुष्य के क्रिया-कलाप, विचार शक्ति और उसकी ऊर्जा को प्रभावित करती है। शरीर का नियन्त्रण और नियोजन करने वाले इसी वैज्ञानिक सिद्धान्त के कारण मनुष्य पर रुद्राक्ष और रत्नों का भी प्रभाव होता है। प्रत्येक मनुष्य की संरचना भिन्न-भिन्न होती है अत: उसी के अनुसार रत्नों और रुद्राक्ष का मेल बैठता है—इसी तालमेल की वैज्ञानिक विधि पर यह 'रत्न और रुद्राक्ष' प्रस्तुत की जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति इससे तदनुकूल लाभ उठा सकता है।

अमरनाथ की अमर कहानी

यह अमर कथा माता पार्वती तथा भगवान शंकर का संवाद है। स्वयं भगवान शंकर इस कथा के कहने वाले हैं। इस संवाद का संग्रह भृंगर्षि संहिता, नीलमत पुराण और लावनी ब्रह्मज्ञान से बड़े ही यत्न से किया गया है। यह परम पवित्र कथा लोक व परलोक का सुख देने वाली है। शिवजी द्वारा दिये गए वरदान के अनुसार इस कथा को श्रद्धापूर्वक पढ़ने व सुनने वाला मनुष्य शिवलोक को प्राप्त करता है।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

तन्त्र मन्त्र यन्त्र

प्रस्तुति—तांत्रिक बहल

प्रस्तुत पुस्तक का नाम अवश्य ही चकित कर देने वाला है, क्योंकि आचार्य चाणक्य राजनीति एवं अर्थशास्त्र के प्रकांड पंडित तो थे ही पर इसके साथ ही वह मन्त्र तन्त्र के भी प्रबल ज्ञाता थे, यह बात बहुत ही कम लोग जानते हैं। चाणक्य विरचित मन्त्रों-तन्त्रों का यह अनुपम संग्रह प्रस्तुत करने का श्रेय 'तांत्रिक बहल' को जाता है। इस विषय की अतीव रुचि के कारण और तन्त्र सबके लिए उपलब्ध कराने का दृढ़ संकल्प लिए प्रस्तुतकर्ता ने वास्तव में एक खोजपूर्ण और साहस का कार्य किया है। आशा है इस दुर्लभ ग्रन्थ के प्रकाशन से पाठक लाभान्वित होंगे।

इसी पुस्तक के द्वितीय खण्ड—सरल तांत्रिक प्रयोग में लेखक ने सामान्य जीवन में काम आने वाले कुछ अनुभूत मन्त्र-तन्त्र भी दिए हैं।

लाटरी ज्योतिष

लेखक—तांत्रिक बहल

लाटरी—प्राय: लोग इसे प्रारब्ध या भाग्य का खेल कहते हैं लेकिन वास्तव में यह अंकों का चमत्कार है, क्योंकि अंक जिसके पक्ष में रहते हैं, भाग्य भी उसी का साथ देता है। इसी कारण ज्योतिष और तंत्र से इसका गहरा सम्बन्ध बन जाता है। इस पुस्तक में दिए गए निर्देशों का सहारा लेकर आप भी ज्ञात कर सकते हैं कि आपको लाटरी निकलेगी या नहीं ? कब निकलेगी ? और कौन-कौन से योग-प्रयोग हैं जो आपको भी लाटरी का लाभ प्रदान कर सकते हैं।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार